Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-.9

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI

EDITED

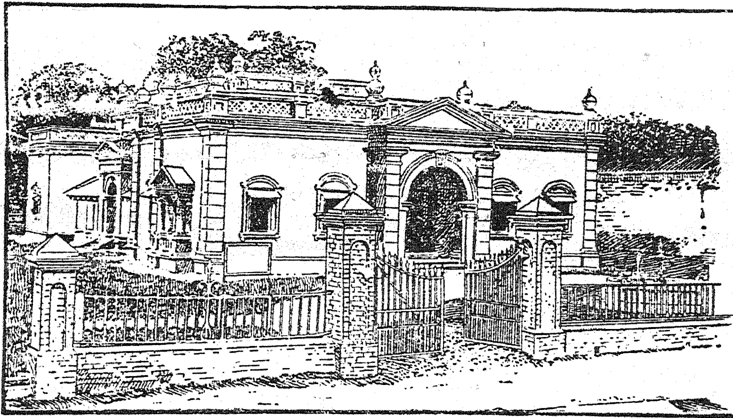
BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, Radha Kishna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XXIX and XXXVI.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व २९ से ३६ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE
NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1907.

[मूल्य १।)] Issued 15th March 1907. [*Price Re. 1-4.*

सूचीपत्र ।

—:o:—

———o———

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI

Vol III.

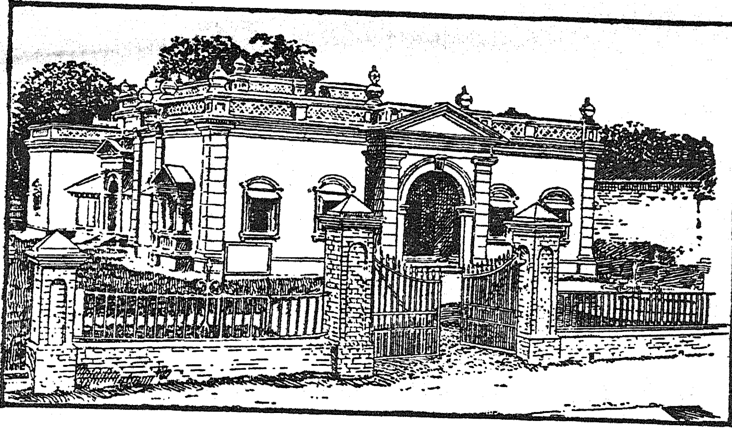
EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XXIX TO LIV.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

तीसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व २९ से ५४ तक

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, BENARES.

1907.

मूल्य ४) रु०]

[Price Rs 4/.

सूचीपत्र ।

(२९) घघर की लड़ाई समय ।

(पृष्ठ ९४९ से ९९८ तक)

---

(३०) करनाटी पत्र समय।

(पृष्ठ ९९९ से ९१६ तक)

---

(३१) पीपा युद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९६७ से ९९३ तक।)

---

(३२) करहे रो जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९९९ से १०१३ तक)

---

(३३) इन्द्रावती व्याह प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०१५ से १०२९ तक)

:o:

(३६) हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव

(पृष्ठ १०५५ से १०९७ तक।)

---

(३७) पहाड़राय समय।

(पृष्ठ १०९९ से १११८ तक।)

---

(३८) बरुण कथा ।

(पृष्ठ १११९ से ११२८ तक ।)

---

[३९] सोमबध समय ।

(पृष्ठ ११२९ से पृष्ठ ११५२ तक)

---

[४०] पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५३ से पृष्ठ ११५६ तक)

———

[४१] पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५६ से पृष्ठ ११६३ तक)

[४२] चंद द्वारिका समयौ।

(पृष्ठ ११६५ से पृष्ठ ११७७ तक)

[४३] कैमास युद्ध ।

(पृष्ठ ११७९ से पृष्ठ ११९८ तक)

——:o:——

[४४] भीम बध समय।

(पृष्ठ ११९९ से पृष्ठ १२२७ तक)

(४५) संयोगिता पूर्व्व जन्म कथा।

(पृष्ठ १२२९ से पृष्ठ १२५८ तक)

---

[४६] विनय मंगल प्रस्ताव।

(पृष्ठ १२५९ से पृष्ठ १२७४ तक)

[४६] सुक वर्णन ।

(पृष्ठ १२७५ से पृष्ठ १२९१ तक)

—:०:—

[४८] बालुकाराय समय।

(पृष्ठ १२९३ से पृष्ठ १३२९ तक)

(४९) पंग जग्य विध्वंस प्रस्ताव।

(उंचासवां समय।)

(५०) संजोगिता नाम प्रस्ताव।

(पचासवां समय।)

(५१) हांसीपुर युद्ध ।

(इक्यावनवां समय ।)

---

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध।

(बावनवां समय।)

---

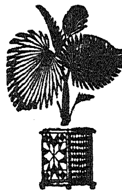
(५३) पज्जून महुवा प्रस्ताव।

(तिरपनवां समय।)

---

(५४) पज्जून पातसाह युद्ध प्रस्ताव।

(चौवनवां समय ।)



तीसरा भाग ।

अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

(उन्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज साठ हज़ार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार गज़नी में पहुंचा ।

कवित्त ॥ दिल्लियपति प्रथिराज । अवनि आषेटक [1]षिल्लय ॥
साठ सहस असवार । जाइ लग्गा धर ढिल्लय ॥
धूनि धरा पतिसाह । रहे पेसोर [2]सुथनाय ॥
सथ्य लिये सामंत । दिली कैमास सु [3]जानय ॥
म्रगया सु रमय प्रथिराज बर । गज्जन वै धर धूसियै ॥
दूसरौ इंद्र दिल्लेस बर । सुभर सरस ढिग सुभ्भियै ॥ छं० ॥ १ ॥

दूतों ने जाकर गज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है ।

दूहा ॥ गई षबर अम्मान की । उट्ठ चढ़े असवार ॥
ढिल्ली धर लिजै तषत । दिसि गज्जनै पुकार ॥ छं० ॥ २ ॥
प्रथीराज साजत पवँग । है गै नर भर भार ॥
दिल्लीपति आषेट चढ़ि । कुहकबान हथनारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
डेरा करि पेसोर न्रप । सहस सट्ठि सुभ बाज ॥
सोन[4] पंथ विच पंथ दोइ । गल गज्जै अग्राज ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) ए.-षिल्लिय, ढिल्लिय । (२) ए. क्र. को.-धरत्तिय (३) ए. क्र. को.-मत्तिय । (४) ए.-पंच ।

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया।

कवित्त ॥ गोरी पठए दूत। चले च्यारों चतुरन्नर ॥
लीय षवरि प्रथिराज। चले पच्छे गज्जन धर ॥
किय सलाम जब दूत। तबहि तत्तार सु बुझ्झिय ॥
कहा करंत दिल्लेस। चढ़त गिरवर बर धुज्जिय ॥
सँग [1]सत्त षट्ट सामंत चलि। तीन पाव लष्षह तुरी ॥
अनि सूर बीर नरवर सकल। उड़ी षेह धर उप्परी ॥ छं० ॥ ५ ॥
आषेटक दिन रमय। संग स्वानं घन चीते ॥
नावक पावक बिपुल। जक्कि दिन जामह जीते ॥
सहस तुरी बघ्घह सु। संत मेघा कलि कंठिय ॥
सीहगोस पुच्छिय सु। लंब सिरषां सिर [2]पुट्ठिय ॥
जुरी [3]रु बाज कूही गुहा। धानुक्की दारू धरा ॥
बहु काल भाल वदकं बिला। जम भय तव जित्तिय धरा॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा।

रमै राज आषेट। सत्त एकल बल भंजै ॥
पंच पथ्थ परिगाह। रंग अप्पन मन रंजै ॥
सहस एक बाजिच। सूर किरनह संपेषै ॥
सुनि गोरी साहाब। दाह दिल महन बिसेषै ॥
जित्तौंब जब्ब प्रथिराज कों। तब तसबी कर मंडिहौं ॥
टामंक सद्द नद्दह करों। जुगति साह तव [4]छंडिहौं ॥ छं० ॥ ७ ॥

खुरासान, रूम, हवश और बलख़ आदि देशों में सुलतान का सहायता के लिये पत्र भेजना।

(१) कृ. को. ए.-सित्त। (२) मो. को. कृ.-पुच्छिय।
(३) ए. कृ. को.-जु। (४) मो.-ठंडिहौं।

दूहा ॥ देस देस कग्गद फटे। पेसंगी षुरसान ॥
रोम हबस अरु बलक में। फट्टे पहु अप्पान ॥ छं० ॥ ८ ॥

पांच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना।

कवित्त ॥ सिलह लोह सज्जंत। लष्ष पंचह मिलि पष्षर ॥
कूंच कूंच षरि षैर। गुरज धारी लष गष्षर ॥
कोस दहं दह कूच। आइ गिरवान सपत्तौ ॥
दौरि दूत दिल्लेस। जाम कर चय दिन वित्तौ ॥
मुक्काम कियौ प्रथिराज न्रप। तहां षवरि कहि दूत सब ॥
गोरी नरिंद है गै सुभर। सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ छं० ॥ ९ ॥

चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घघ्घर नदी पहुंचा।

चैत मास रवि तीज। सेत पष्षह कल चंदह ॥
भयौ सुदिन मध्यान। चल्यौ प्रथिराज नरिंदह ॥
कटक सबर हिल्लोर। भार सेसह करि भग्गिय ॥
चढ़ि सामंत सकज्ज। नइ सुर [1]अंमर जग्गिय ॥
गज रोर सोर बंधे घटा। सिलह बीज सिलकावलिय ॥
[2]पप्पीह चीह सहनाइ सुर। नदि घघ्घर मेलान दिय ॥ छं० ॥ १० ॥

शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन।

दूहा ॥ आयौ आतुर उप्परह। पैसंगी पतिसाह ॥
[3]पच्छांई बादल प्रबल। भग्गे राह विराह ॥ छं० ॥ ११ ॥
बरन बरन तहां देषिये। घंटा रव गजराज ॥
सन्नाहा सन्नाह रजि। पष्षर सष्षर साज ॥ छं० ॥ १२ ॥
भई हलोहल सेन सब। पान व्यूह बर षेत ॥
लष्ष एक भर अंग मैं। छच धऱ्यौ सिर जैत ॥ छं० ॥ १३ ॥

(१) मो.-अमर सु जग्गिय। (२) ए.-पापीह। (३) कृ.-पच्छाहीं।

हुअ टामंक सु दिसि बिदिसि। हुअ संनाह सनाह॥
हुअ हलोहल सुभ्भरन। दोज दिन इक राह॥ छं० ॥ १४॥

सेना का वर्णन।

चोटक॥ हुअ सद्द सु सद्दह नद्द भरं। घन घेरिक कीय सु फौज वरं॥
लष लष्ष मिले दल संमिलयं। नर भद्दव बाहल संमिलयं॥
छं०॥ १५

सु अगें हथनारि अपार सजं। तिन देषत काइर दूरि भजं॥
तिन पिठ्ठ हजार उमत्त चले। छह रित्त [1]झरंत करी तिहलें॥
छं० ॥ १६॥

तिन पिठ्ठह फौज गहब्बरयं। धरि गोरिय मुठ्ठ करं धरियं॥
कमनेंत अभूल सु लष्ष लियं। तिन मध्य ततारह छच दियं॥
छं० ॥ १७॥

लष दोय गुरज्ज स गष्षरियं। षुरसान दियं दल पष्षरियं॥
बलकी उमराव सु सत्त सयं। निसुरत्तह लष्ष हुकम्म भयं॥
छं० ॥ १८॥

षुरसान तनं दल उप्पटयं। मनुं साइर सत्त उलट्ट भयं॥
[2]जल बानिय [3]पानिय अद्ध सरं। लोहानिय पानिय षेत षरं॥
छं० ॥ १९॥

हबसी उजबक्क हमीर भरं। कलबानिय रुम्मिय अग्ग धरं॥
सरब्रानि ऐराकि मुगल्ल कती। बहु जाति अनेक अनेक भती॥
छं० ॥ २०॥

मुसलमान सेना का व्यूहवद्ध होकर नदी पार करना।

कवित्त॥ फौज बंधि सुरतान। मुष्ष अग्गे तत्तारिय॥
मधि नायक सुरतान। नील षुरसान सु भारिय॥
मोती निसुरति षान। लाल हबसी कोलंजर॥
पाचि पीठि रुस्तंम। पना बहु भांति अवर नर॥

(१) ए.-करंत। (२) ए.-जव। (३) ए.-ध्यानिय।

उत्तरिय नद्द गोरीस पहुं। बज्जा दस दिसि बज्जिया॥
मानौं कि भइ उलटी मही। साइर [1]अंबु गरज्जिया॥ छं०॥२१॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर चामण्डराव को आगे किया।

दूहा॥ दिल्लीपति फौजह रची। दियौ जैत सिर छच॥
चामंड रा अग्गै भयौ। मनों सु गिरवर गत्त॥ छं०॥२२॥

पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की।

कवित्त॥ फौज रची सामंत। गरुड़व्यूहं रचि गढ्ढिय॥
पंष भाग प्रथिराज। चंच चावंड सु गढ्ढिय॥
गावरि अत्ताताइ। पांइ गोइंद सु ठढ्ढिय॥
पुच्छ कन्ह चौहान। पेट पम्मारह पढ्ढिय॥
सुंडाल काल अग्गो धरे। [2]कढे दोइ कलहन्न किय॥
चालंत बान गोरै प्रबल। मानहु अंधकि मार दिय॥ छं०॥२३॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना। एक हजार मीरों का कैमास को घेरना।

तत्तारह उप्परह। चित्त चावंड चलायौ॥
दुहूं फौज अग्गंज। दुहूं भुज भार भलायौ॥
मीर बान बरषंत। धार धारा हर लग्गौ॥
बाही चामँडराइ। भूमि तत्तारह भग्गौ॥
उत्तरे मीर सै पंच दुइ। दाहिम्मै किन्नौ दहन॥
पहिलै जु भुभ्भ्क दिन पहिल कै। मच्यौ जुद्ध जानैं महन॥ छं०॥२४॥

तत्तार खां का घायल होना। मीरों की वीरता।

भूमि पर्‍यौ तत्तार। मारि कमनेत प्रहारै॥
एक घाव दोइ टूक। परे धारन मुहु धारै॥

(१) ए.-अंबर। (२) ए.-कढूढे दोई कल कियं।

[1]षुर बज्जै षुरतार। चमकि चामंड चलायौ॥
भरै बथ्थ सिर हथ्थ। एक बहु लष्षन घायौ॥
जब परै बूंद तब बीर हुअ। सत्त घरी साहस धरै॥
तिनमा [2]कटक्क चिविधी घड़ा। एक एक पग अनुसरै॥ छं०॥ २५॥

कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना।

षान षान आषूंद। अठ्ठ सहसं बहु गष्षर॥
परिय पंति अवनेस। पारि बहु [3]अष्षर गष्षर॥
[4]हयौ नेज चामंड। बीर दो सहस लरै भर॥
हस्ति एक बिन दंत। तमह तिन मथौ सहस कर॥
दाहिम्मराव मुरछ्यौ पऱ्यौ। दौऱ्यौ जैत महा बलिय॥
मानों कि अग्ग जज्जर बही। कलि मझ्झे रिन बट कलिय॥
छं०॥ २६॥

चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना में कहर मच गया।

धपी [5]सेन सुरतान। [6]मुठ्ठि छुट्टी चावद्दिसि॥
मनु कपाट उधऱ्यौ। कूह फुट्टिय दिसि बिद्दिसि॥
मार मार मुष किन्न। लिन्न चावंड [7]उपारे॥
परे सेन सुरतान। जाम इक्कह परि धारे॥
गल बथ्थ घत्त गाढ़ौ ग्रह्यौ। जानि सनेही भिंटयौ॥
चामंडराइ करि वर कहर। गोरी दल बल [8]कुट्टयौ॥ छं०॥ २७॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन।

जैत राइ जडधार। लियौ कर दंत मुष्ष कर॥
परे बज्ज सिर धार। मनों सेना सिर उप्पर॥

(१) ए.-पुर। (२) ए.-कमंध।
(३) मो.-परिकर, कृ.-पष्षर। (४) कृ.-पयौ, ए.-भयौ। (५) मो.-मुष्टि।
(६) मो.-तुष्टि। (७) ए.-उषारे। (८) ए. कृ. को.- छुट्टयौ।

षुरसानी बंगाल। मनहु [1]डंडूर रमावै॥
भरै पच जोगिनी। डक्क नारद्द बजावै॥
अपछरा गीत गावत इला। तुंबर तंत बजावहीं॥
सुरतान सेन दिल्लेस बर। [2]मग्ग मग्ग जस गावहीं॥ छं०॥ २८॥

युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव और खुरासान खां का तुमुल युद्ध हुआ।

सिर धुनत पतिसाह। धाह सुनि सेना सथ्थिय॥
लुथ्थि लुथ्थि मुह धार। परे बथ्थन सों बथ्थिय॥
जम सों जम आहुरै। सूर जुट्टै दोइ घुट्टै॥
नई गंठि तन जोग। सूर मुंडावलि घुट्टै॥
षुरसान जैत अब्बूधनिय। धार धार मुह कट्टिया॥
ऐसो न जुद्ध दिष्षौ सुन्यौ। दारुन मेछ दबट्टिया॥ छं०॥ २९॥
मनु द्वादस सूरज्ज। हथ्थ चंद्रमा महा सर॥
जिन उप्पर षलमलै। ताहि धर गोरिय सुब्भर॥
कटक कूह किलकार। सार परमार बजायौ॥
भिरि भंज्यौ सुरतान। एक एकह मुष धायौ॥
सिर सार धार बुब्यौ प्रहर। तब दौ-यौ पज्जून भर॥
निसुरत्ति षान लष्षह बली। लष्ष एक पाइल सुभर॥ छं०॥३०॥

घोर युद्ध हुआ। निसुरत खां मारा गया। दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई।

भुजंगी॥ मचे [3]कूह कूहं, बहै सार [4]सारं। चमक्कैं चमक्कैं, करारं सु [4]धारं॥
भभक्कैं भभक्कैं, बहै रत्त धारं। सनक्कैं सनक्कैं, बहै बान [5]भारं॥
छं०॥ ३१॥
हबक्कैं हबक्कैं, बहैं सेल भेलं। हलक्कैं हलक्कैं मची ठेल ठेलं॥
कुकैं कूक फूटी, सुरत्तान ठानं। बकी जोग माया, सुरं अप्प थानं॥
छं०॥ ३२॥

(१) ए. कृ. को.-दंडूक। (२) ए.-बग्ग।
(३) ए. कृ. को.-हूक हूकं। (४) ए. कृ. को.-धारं। (५) मो.-धारं।

बढ़ै चट्ट पट्टं, उघट्टं उलट्टं। कुलट्टा [1]धरं अप्प, अप्पं उहट्टं॥
दडक्कं बजै सथ्थ, मथ्थं सुटट्टं। कडक्कं बजै सैन, सेना सुघट्टं॥
छं०॥ ३३॥

बढ़ै हथ्थ परमार, सिरदार सारं। परे सेन गोरी, बढ़ै रत्त [2]धारं॥
पऱ्यौ षान निसुरत्ति, सेना सहित्तं। हुऔ सूर मध्यान, दिल्ली स जित्तं॥
छं०॥ ३४॥

एक लाख कालंजरों का धावा, कान्ह चौहान के आंख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना।

कवित्त॥ कालंजर इक लष्ष। सार सिंधुरह गुड़ावै॥
मार मार मुष चवै। सिंघ सिंघा मुष धावै॥
दौरि कन्ह नरनाह। पटी छुट्टी [3]अंषिन पर॥
हथ्थ लाइ [4]किरवान। रुंड माला किन्निय हर॥
बिहु बाह लष्ष लोहै परिय। जानि करिव्वर दाह किय॥
उच्छारि पारि धरि उपरें। कलह कियौ कि उघान किय॥
छं०॥ ३५॥

भुजंगी॥ छुटी अंषि पट्टी, मनो उग्गि सूरं। गिरे काइरं, सूर बड्ढे सनूरं॥
लियं हथ्थ करि वार, भंजै कपारं। पियै जोगनी पच, कीयैं डकारं॥
छं०॥ ३६॥

बढ़ै अच्छरी हथ्थ, अन्नेक सथ्थं। करं सूर संम्हालियै, घल्लि बथ्थं॥
करै कज्ज साईं, समप्पै सुघट्टं। लियं कन्ह गोरी, तनं मारि थट्टं॥
छं०॥ ३७॥

कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना। कन्ह चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना।

कवित्त॥ कालंजर जव परिय। भगिय सेना पतिसाहिय॥
पंच फौज एकट्ठ। कन्ह करवारि [5]सम्हारिय॥

(१) ए.-धरा। (२) मो.-षारं। (३) ए.-अंषनि।
(४) ए. कृ. को.-करिवार। (५) कृ.-सम्माहिय।

धर पारे बहु मीर। सथ्थ जब सैना भग्गिय ॥
गर घत्ती कंमान। लियौ गोरीय उछंगिय ॥
उत्तरे मीर पच्छे फिरे। हाय हाय मुष हुंकऱ्यौ ॥
पज्जून झेलि मुष मीर कौ। कन्ह लेइ गोरी बऱ्यौ ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पज्जूनराव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना। कन्ह का सुलतान को पकड़ कर अपने घर ले आना।

जनु उद्यान हलाइ। पवन चल्लै ज्यौं बांधै ॥
त्यौं पज्जून नरिंद। मीर जमदड्ढ सांधै ॥
परे मीर सै सत्त। बिए रन छंडिव भज्जे ॥
चामर छच रषत्त। तषत लुट्टे ज्यों सज्जे ॥
कन्हा नरिंद पतिसाह लै। गयौ थान अप्पन बलिय ॥
पंमार सिंघ लग्यौ सु पय। चाव भाव कीरति चलिय ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कन्ह का सुलतान को अजमेर लेजाना और उसे वहां किले में रखना।

[1]रहै कन्ह अजमेर। *गयौ चहुआन जैत लिय ॥
धरि अग्गोरी नरिंद। दौरि प्रथिराज सुद्ध दिय ॥
गयौ अप्प अजमेर। †लिए पतिसाह नरिंदह ॥
दिन किज्जै महिमान। पास ठढ्ढा रहै हंदह ॥
बैठारि तषत सिर छच दिय। सभा विराजे सु पहुंभर ॥
सिर फेरि पैर दिज्जै दुनी। यौं रष्षै पतिसाह दर ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की संख्या।

एक लष्ष बाजिच। सहस तीनह मय मत्तह ॥
लष्ष एक तोषार। तेज ऐराकी तत्तह ॥

(१) ए. को.-हरै। * ए. कृ. को.-लिए पतिसाह नरिंद हिय।
† ए. कृ. को.-तहां चहुआन जैत लिह।

आराबा हथ्थिनी। सत्त सै सत्त सु भारिय॥
चामर छत्र रषत्त। साहि लिन्निय धर सारिय॥
सामंत सूर बहुविधि भरिग। पट्ट घाव सु बंधियै॥
रन जीत सोधि संभर धनी। बज्जे अनत सु बज्जियै॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी बार शहाबुद्दीन को प्राण दंड दिया जाय।

[1]रची सभा प्रथिराज। सूर सामंत बुलाए॥
गोयँद निढ्ढुर सलष। कन्ह पतिसाह पठाए॥
करौ दंड सिर छत्र। राम प्रोहित पुंडीरह॥
रा पज्जून प्रसंग। राव हाहुलि हंमीरह॥
इत्तने मत्त मझ्झह मिले। हम मारैं छोरैं न अब॥
ह्वैहै न हास्य अबकें हमैं। फिर न आइहै इह सु कब॥छं०॥४२॥

कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश ले कर इसे छोड़ दिया जाय।

दिए देस षंधार। दिए पछिबानं सारं॥
कासमीर कबिलास। दिए घरटिला पहारं॥
गज्जन रष्षै देस। बियौ समपै प्रथिराजह॥
ना तरु छुट्टै नाहिं। कर हेम उप्पर काजह॥
बोलयौ कन्ह नरनाह सुनि। अबकैं मारै कोइ नह॥
पंजाब दियौ छुट्टै सु अब। यह हमीर दिज्जें हमहि॥छं०॥४३॥

पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ दे कर शाह को घर भेज देना।

तब बुल्यौ प्रथिराज। कहै काका त्यौं किज्जिय॥
जेता रंजक होइ। तिता लादा भरि लिज्जिय॥
जग्य कियौ पंडवन। हेम काचौ [2]उन आन्यौ॥

(१) ए. कृ. को.-करिब। (२) ए. कृ. को.-तुम।

त्यौं लभ्यौ पतिसाहि। लष्ष लोहा हम मान्यौ॥
करि दंड कन्ह पतिसाह को। लोहानौ सथ्थैं दियौ॥
असवार सहस सथ्थें चलें। कर सिर कन्ह इतौ कियौ॥छं०॥४४॥

कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर दे कर घर जाना।

करि जुहार तब कन्ह। गयौ अजमेर दुरग्गह॥
तज्यौ कन्ह पतिसाह। बत्त सब जंपी अप्पह॥
ह्वै षुसाल गजनेस। दई इक लाल सहित मनि॥
कन्ह लेइ पतिसाह। गयौ दिल्ली सु ततच्छन॥
मनुहार करिय सामंत सब। तेग दई दिल्लेस बर॥
दो अश्व करी दोइ देय करि। [1]साहि चलायौ अप्प घर॥
छं०॥४५॥

सुलतान का कुरान बीच में दे कर कसम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा।

करि सलाम गजनेस। करिय नव निह दिल्लेसर॥
तम रषियो हम प्रीति। बरष मन सत्तह केसर॥
पेसंगी धर सीम। बीच पौरान कुरानं॥
जा तक्कौं तुम अबे। तबै तुम कढ़ियौ प्रानं॥
उत्तरौं अटक तौ मैं अवर। मुसलमान नाही धरौं॥
तुम हम सु प्रीत चलिहै बहुत। हूंन अबै ऐसौ करौं॥छं०॥४६॥

सुलतान के अटक पार पहुंचने पर उधर से तत्तार खां का आकर मिलना।

पहु चल्यौ सुरतान। दियौ लोहानौ सथ्थैं॥
दूत च्यारि अनुसार। काल छुय्यौ सें हथ्थैं॥
गयौ बीस म्होलान। अटक उत्तरि इन पारं॥

(१) ए. कों.-चाहि, चाह।

सोवन पथ मेलान। सहस सम्हे असवारं ॥
निसुरत्ति सुतन दरिया सुतन। आइ कियौ सल्लाम तहां ॥
आजान बाह महिमान किय। चल्यौ अप्पगज्जन रहां ॥छं०॥४७॥

रयसल को दूतों का समाचार देना उसका सेना ले कर अटक उतर रास्ते में रोकना।

रयसल हरी नवट्ट। सहस अट्ठारह सथ्थें ॥
हेरौ करि पतसाह। पुले लग्गा इन पथ्थें ॥
दूत च्यार अनुसार। कटक देष्षौ असवारह ॥
कह्यौ चरन सब सथ्थ। सहस दोइ सेना सारह ॥
तिन बार बज्जि चंबाल बहु। सिलह सज्जि सिरदार सहु ॥
उत्तऱ्यौ कटक छोरिय अटक। नहि हुऔ उग्गंत पहु ॥छं० ॥४८॥

गाथा ॥ बज्जै पुठि चंबालं। हथ्थिय नेजं सु उप्परं फहरं ॥
जानि समुद्द उहालं। किय गजनेस हुकमयं मीरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ कह्यौ साह लोहान। कौंन बज्जा बज्जाए ॥
दौरि दूत तिन बेर। धनी पछिबानह धाए ॥
कूच कूच पर कूच। कौन पछिवान धनी कहि ॥
तब जान्यौ रयसल्ल। सेन आजान बऱ्यौ सह ॥
पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं। सहस डेढ़ असवार दिय ॥
बंधेव फौज लोहान बर। दुहूं फौज टामंकं किय ॥ छं० ॥ ५० ॥

सबेरा होते ही रयसल्ल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा।

अरुन किरन परसंत। आइ पहुंच्यौ रयसल्लं ॥
बज्जै बान बिहंग। जानि जुट्टा दोइ मल्लं ॥
संमाही आजान। तेग मानहु हबि दिट्ठिय ॥
जानि सिषर मझि बीज। कंध रैसल्लह बुट्टिय ॥

लोहान तनी बज्जै लहरि। कोउ हल्लै कोउ उत्तरै ॥
परनाल रुधिर चल्लै प्रबल। एक घाव एकह मरै ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दूहा ॥ मुह मुह चमकै दामिनी। लोह बज्यौ लोहान ॥
इक उप्पर इक इक तर। लुथ्थें लुथ्थ समान ॥ छं० ॥ ५२ ॥

रयसल्ल का मारा जाना सुलतान का निर्भय ग़ज़नी पहुंचना।

पयौ लुथ्थि रयसल्ल तहं। ढुंढि षेत लोहान ॥
सुबर साह गोरी न्रिभय। गयौ सु गज्जन थान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

तातार ख़ां खुरासान ख़ां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना।

कवित्त ॥ तत्तारिय षुरसान। सुतन गोरी पय लग्गा ॥
न्यौछावर करि षैर। बहुत मनसा भय भग्गा ॥
लष्ष एक असवार। मिल्यौ गोरी दल पष्षर ॥
लष्ष भये दरवेस। आइ पइ लग्गे गष्षर ॥
उछ्छाह भयौ गज्जन इला। गयौ मझ्झि गोरी धनिय ॥
दरबार भीर भीरन्न घन। मिलत आइ अप अप्पनिय ॥ छं० ॥ ५४ ॥

दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया।

डेरा दिय लोहान। करिय मनुहारि रोज़ दस ॥
करिय सत्त आजान। तुरिय पंचास अप्प बस ॥
इह दिन्नौ लोहान। बियौ भेज्यौ न्रप राजं ॥
लादे दाइ हजार। सत्त सै तोला साजं ॥
इक इक तुरी हथ्थी सु इक। सामंतन दीनौं सबै ॥
मुह करिय कित्ति अनेक बिधि। सुबर ह्वर फेरिय जबै ॥ छं० ॥ ५५ ॥

लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी।

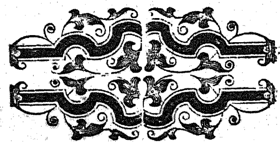
सीष दई लोहान। चल्यौ दिल्लीय पंथानं ॥
संग सहस असवार। अप्प रिध वासव यानं ॥
दिल्लीपति सामंत। कली छत्तीसह दष्षै ॥
मिल्यौ बाह आजान। बत्त सुरतान सु अष्षै ॥
इक इक्क तुरिय हथ्थी सु इक। सामंतन पठए धरैं ॥
सोव्रन्न रासि रंजक षहर। मुकलियै चित्रँगपुरै ॥ छं० ॥ ५६ ॥

चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल की भेट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया।

गढ़ [1]चीतौड़ [2]दुरग्ग। भट्ट पठयौ परिमानं ॥
लादे सित्त सुरंग। सित्त लैं [3]तुला प्रमानं ॥
दोइ हथ्थी मय मत्त। सत्त हैवर कुल राकिय ॥
छच लियौ पतिसाह। जड़ित मनि मानिक साकिय ॥
लै चंद चल्यौ चित्तोर गढ़। जाइ समप्पौ रावरह ॥
बहु दान दियौ रावर समर। चल्यौ भट्ट अप्पन घरह ॥ छं० ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी की लड़ाई कन्ह पतिसाह ग्रहनं नाम ओगनतीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-चित्रकोट। (२) ए. कृ. को.-दुरगा। (३) ए. कृ. को.-तोल, तोल्य।



अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते।

(तीसवां समय।)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना।

दूहा॥ दूत चरित दिल्ली तनौ। देषि गयौ [1]कनवज्ज॥
चढ़त पंग सम्हौ मिल्यौ। सुबर बीर कमधज्ज॥ छं०॥ १॥
करि षलषट सुरतान सौं। दल भग्गौ सु विहान॥
अब करनाटी देस पर। चढ़ि चल्यौ चहुआन॥ छं०॥ २॥

यद्दव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना। करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का पृथ्वीराज को नज़र करके संधि करना।

कवित्त॥ चढ्यौ सुबर चहुआन। बीर क्रन्नाट देस पर॥
मिलि जद्दव बर सेन। तारि कढ्यौ सु तुंग नर॥
दष्षिन दछिन नरिंद। सबै प्रथिराज सु गाही॥
तिन राजन इक पाच। पठय नाइक घर शाही॥
बर बीर जुद्ध कमधज्ज करि। भीर भगी बर बीर [2]अचि॥
तिहि दिनां वीर पज्जून पर। षग्ग मार बोहिथ्थ [3]मचि॥ छं०॥ ३॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना।

दूहा॥ लै आयौ नाइक्क सथ। करनाटी प्रथिराज॥
जच तच एकठ भये। [4]सबै साज संमाज॥ छं०॥ ४॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत विद्वान केल्हन नायक को सौंप देना।

---

(१) ए.- कसवज्ज। (२) ए. कृ. को.-अगि।
(३) ए. कृ. को.-मार्ग। (४) मो.-सब कमधज्जहि साज।

कवित्त ॥ संवत इकतालीस। दिवस प्रथिराज राज भर ॥
अति सामंत उभार। आइ अति भ्रम्म ढिल्लि धर ॥
दिय थानक नाइक्क। नाम केल्हन गुन देयं ॥
अति संगीत सु बिद्य। कला संजुत्त सुनेयं ॥
ता सथ्थ त्रीय रतिरूव तन। बर चवद्द चातुर सकल ॥
दुव तीस सु लच्छित मति बिमल। अति मति अगनित [1]बिद्यबल ॥
छं० ॥ ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंशा सुन कर पृथ्वीराज का उस के लिये कामातुर होना।

बाघा ॥ संभलि बत्त सुयं प्रथिराजं। अति अंगनि विद्याबल साजं ॥
कला सपूरन पूरन चंदं। पूरन हाटक बरन बिबंदं ॥ छं० ॥ ६ ॥
बानी जेम बीन कल सारं। स्वर जनु पंचम मभ्भ गुँजारं ॥
नष सिष रूप रूपगति उत्तं। सुभ सामंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥
छं० ॥ ७ ॥
दरसन ताहि अवर नन दिष्षै। बासन महल मंझ तन दिष्षै ॥
सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि। जग्यौ काम न्रपति [2]उर अंदरि ॥
॥ छं० ॥ ८ ॥
अति सनमान सु नाइक दीनौ। बहुर प्रसंसन साधक कीनौ॥छं०॥९॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन।

दुहा ॥ संझ समय अंदर महल। किय सुराज ग्रह धाम ॥
अप्प बयठ्ठौ राज तहँ। अनत सजग्गित काम ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज के सभामंडप की प्रशंसा वर्णन।

नराज ॥ जयं सु अत्ति जग्गियं। सु धाम तेज तग्गियं॥
सजे सुभाल आसनं। अमोल रोहि बासनं ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) ए.-बैद्य। (२) मो.-अति।

सु दीप साम सोभयं। सुगंध गंध ओभयं॥
कपूर पूर जंभरं। म्रगज्ज वास अंगरं॥ छं०॥ १२॥
सु सज्जि सिंघ आसनं। समोल रोहि वासनं॥
कनक छच दंडयं। सु रंग रंग मंडयं॥ छं०॥ १३॥
अबीर [1]जग्य कर्दमं। सरोहि ग्रेह सर्दमं॥
अभूत साष लोभयं। अबीर भूर ओभयं॥ छं०॥ १४॥
अयास धूम धोमरं। प्रसार वास ओमरं॥
प्रसून अन्न वन्नयं। स भूषनं स भ्रम्मयं॥ छं०॥ १५॥
घनं सु सार सम्मरं। अभूत वास अम्मरं॥
भुअं कुसम्म केसरं। सुरं अभूत जे सुरं॥ छं०॥ १६॥
तहां सु राज आसनं। सरोहि सिंघ सासनं॥
सुपाय अंग रष्षियं। कला जु काम लष्षियं॥ छं०॥ १७॥
प्रवीन भाव पायसं। विचिच चिच पासयं॥
भवंति क्रंति भूषनं। सुबुद्धियं विदूषनं॥ छं०॥ १८॥
प्रसून [2]विद्धि वासनं। अभूत [3]सिद्धि आसनं॥
बरष्ष षोडसं समं। अदोस रूपयं [4]रमं॥ छं०॥ १९॥
कला विग्यान विद्वयं। सु पास भूप सिद्वयं॥
सिंगार सार सारयं। अभूषनं स धारयं॥ छं०॥ २०॥
ग्रहे विदून चामरं। सु विंझ राज सामरं॥
धरंत कव्वि पन्नयं। सु कंठ थान सन्नयं॥ छं०॥ २१॥
सु घन्नसार पानयं। सुगंध विद्व मानयं॥
करें सु [5]द्रप्पकं करं। सु सघ्घि [6]अद्धि संमरं॥ छं०॥ २२॥
श्रृंगार ग्रेह सोमयं। अभूत दुत्ति ओमयं॥
समोभ धामयं सजं। सुबास वासवं लजं॥ छं०॥ २३॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम।

(१) कृ. ए.-दच्छ, जच्छे, जच्छ।
(२) मो.-विद्व। (३) मो.-मद्धि। (४) को. ए.-समं।
(५) कृ.-दर्प, ए.-दप्प। (६) मो.-अठ।

कवित्त ॥ रचि धाम अभिराम। राज छरि थान वयट्ठौ ॥
दिपत [1]दीह सुभ लीह। तेज उभ्भर तप जिट्ठौ ॥
बोलि [2]चंद चंडीस। बोलि जद्दव रा जामं ॥
निडुर बोलि कमधज्ज। अत्ति जामनि बल सामं ॥
बलिभद्र बोलि कूरंभ भर। लोहानौ आजानभुअ ॥
बैठक्क बैठि आसन्न सजि। ताप सतप्पै तेज धुअ ॥ छं० ॥ २४ ॥

कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना।

बोल ताम नाइक्क। सथ्थ सथ्थह सब साजं ॥
बोलि पाच कर्नाटि। बैठि गानं बर वाजं ॥
नाटक भेद निबंध। बूझि राजन बर बत्तं ॥
कवन कला क्रत पाच। कहौ नाइक्क निज सत्तं ॥
नाइक्क कहै प्रथिराज सुनि। एह पाच देष्यो सु पय ॥
इह रूप रंग जोवन सु वय। कला मनोहर चिंति मय ॥ छं० ॥ २५ ॥

कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिस में निढ्ढुर राय प्रसन्न हों।

पद्धरी ॥ उच्चर्यौ ताम कविचंद बानि। नायक्क अहोमति मरम जानि ॥
सो धरौ कला विचार साज। निढ्ढुरह बयट्ठौ पास राज ॥ छं० ॥ २६ ॥
नाटक्क बिबिध बुझ्झै बिनान। विच्चार चार सुर तान गान ॥

नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं।

नाइक्क जंपि इो चंद भट्ट। न्टप पास बयठ्ठौ को सुभट्ट ॥ छं० ॥ २७ ॥

कविचंद का निढ्ढुरराय का इतिहास कहना।

उच्चर्यौ चंद नायक्क सरीस। कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
ता अनुज बंध बरसिंघ देव। ता सुअन कमध निड्ढुरह एव ॥ छं० ॥ २८ ॥

(१) मो.-देह। (२) कृ.-चंद पुंडिर।

नायक्क कहै हय बत्त सच्च। आवन्न केम हुअ दिली तच्च ॥
बरदाइ कहै नायक्क चिंत। आवन्न क्रित्त करन्नमित्त ॥ छं० ॥२९॥
जै सिंघ कियौ तह्यां उद्व काज। अति तेज अप्प जैचंद राज ॥
लघु वेस उभय बंधव सरूप। श्रुत थान उभय षेलंत भूप ॥ ३० ॥
आइयौ मह्हल निढ्ढुर समेक। कहि कुमर राज सह्यौ सु एक ॥
उच्चर्यौ ताम निढ्ढुरह देव। कर कुमर हंम मिच्छंत सेव ॥३१॥
जयचंद समुष निरषेत ताम। कल [1]कलिय लग्ग चामठ्ठ धाम ॥
करि सभा सु निढ्ढुर आइ ग्रेह। सुष धाम काम बिलसंत देह ॥
॥ छं० ॥ ३२ ॥

निढ्ढुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना।

कवित्त॥ समय एक निढ्ढुर। कमंध आषेट सपत्तौ ॥
बिधि कुरंग दुअ तीन। उभय एकल निज घत्तौ ॥
आइ बग्ग सारंग। सुवन सोवंत प्रधानह ॥
करिय गोठि उच्चार। सथ्थ संभरे सवानह ॥
ता अग्ग गोठि सारंग सजि। घन पकवान असान रस ॥
ग्रिह गये वाग आगम सकल। लहयौ निढ्ढुर भेव तस ॥छं०॥३३॥

यह खब्रर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर निढ्ढुर के रंग में भंग करना।

मुरिल्ल ॥ निढ्ढुर ताम [2]गोठिलिय अप्पं। तर सेवक सारंग सु दप्पं ॥
घन पकवान सरस गति सारं। रच्चे मंस विवह बिसवारं ॥छं० ॥३४॥
करि क्रीडा सो गोठि अहारे। [3]चपतौ सथ्थ सबै बिधि भारे ॥
सुमनह द्राव सुमन सब सोहै। कासमीर चंदन सुर रोहै ॥छं०॥३५॥
आहारे तंमोल [4]सुगंधं। मादक आइ अग्गि जहां जग्गं ॥
सुनी श्रवन सारंग सुवत्तं। आयौ आतुर [5]वग्ग तुरत्तं ॥छं०॥३६॥

(१) ए. कृ. को.-मलिय। (२) ए.-गोगिय। (३) मो.-नृप तौ।
(४) मो.-सुरंगं। (५) मो.-ब्रोगि।

[1]कठिन वाच निढ्ढुर सम बाचे। तरस्यौ निढ्ढुर तामँत राचे॥
गयौ अग्र जैचंद सु रावं। लुट्टी बस्त गोंठ मनि सावं॥छं०॥३७॥

निढ्ढुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारंग का पक्ष करना।

संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं। कलमलि कोप रोस सब अंगं॥
निसा महल निढ्ढुर सँपत्तौ। फेरे मुष जैचंद बिरत्तौ॥छं०॥३८॥
न संग्रह्यौ रस बसि सिर नायौ। निढ्ढुर ताम अप्प ग्रह आयौ॥
सजि सु सथ्थ जुग्गनिपुर आयौ। अति आदर करि पिथ्थ बधायौ॥
॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही नाटय कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो।

दूहा॥ सुनि नाइक हरष्यौ सुमन। धनि धनि बैंन उचार॥
लहै सुविद्या अर्थ गुन। जैं जैं अर्थ उचार॥ छं० ॥ ४० ॥
गाथा॥ राजनीति गति रूवं। गुन संपूर चौस एकंगं॥
जे रंजे रज ध्यानं। सुनि कविराज सब्ब संपूरं॥ छं० ॥ ४१ ॥

राजाओं के स्वभाविक गुणों का वर्णन।

साटक॥ विद्या विनय बिवेक [2]वानि विमलं वर्णो कुवेरप्रभा॥
[3]सुविचारो सु विचक्षणे रु सुमनं सौजन्य सौदर्य्यता॥
[4]भाग्यं रूप अनूपयं रस रसं संजोग विभ्भोगयं॥
मांगल्यं संपूर सौम्य कलसं जानंत केली कला॥ छं० ॥ ४२ ॥
मृदु तत्वं मृदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं॥
[5]उद्दायं उद्दार दाव उच्छहं एते गुना राजयं॥

(१) ए.-कनिक। (२) ए. कृ. को.-मार सलयं, विव्वेक विश्चारयं।
(३) ए. कृ. को.-विचारं ससु तप्प सोप सुमनं सौजन्य सौभाग्ययं।
(४) ए. कृ. को.-भाग्यं।
(५) ए.-उद्दायं।

सोयं जान विचार चारु चतुरं विव्वेक विचारयं ॥
सोयं 'नीति सनीत कित्ति अतुलं प्राप्तं जयं 'जोरयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ फुनि नाइक जंपै सु नमि । अहो चंद वरदाइ ॥
राग विनोदह चौसपट । कहौं सुनौ विधिसाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

* दंडमाली ॥ दरसन नाद विनोदयं । सुरंवंध न्रत्य समोदयं ॥
गीताद्य अधि नव वादयं । अभिलाष अर्थ पदादयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥
³वक्रात जग्यपवीतयं । प्रासन्न प्रभुत प्रनीतयं ॥
पंडीत पालक तल्पयं । ते पढ़य तर्क विजल्पयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
प्रंमान सरन प्रमोदयं । प्रातापयं च प्रमोदयं ॥
प्रारंभ परिछद संग्रहं । निग्राह पुष्टित तुष्टिहं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
प्रासंस प्रीति स प्रापयं । प्रातिग्र यासु प्रतिष्टयं ॥
धीरज्ज धीर जुधं वरं । सो रज्जरव सतं नरं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ सुनि नायक राजनन मति । जंपहि दिली नरेस ॥
पात्र प्रगट गुन सकल विधि । विद्या भाव विसेस ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना।

प्रथम गान सुरतान गुन । वादी नेक विनान ॥
पाछें न्रत्य प्रचार भर । प्रगट करहु परिमान ॥ छं० ॥ ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन।

भुजंगी ॥ तबै वोलियं अप्प नाइकअ ग्गं । मुषं पाच आरोह उच्चार जग्गं ॥
धरै आप बीना सुरंसाज सारे । सुरं पंच घोरं धरे थान भारे ॥
छं० ॥ ५१ ॥
धुनिं रूप रागं सुझानं उपाए । रचे च्यार राहं सुभा सुब्भ भाए ॥
गियं गान अप्पं सुरं तंति मानं । रचे मंडली राय आयास थानं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

---

(१) मो.-तीन। (२) ए.-को.-चोवरं।
* ए. कृ. को.- में यह छंद गीता मालची नाम से लिखा है।
(३) कृ. ए.-वक्यत, वक्मत।

मनं सर्व मोहे अतिं राग रूपं। तनं लग्गए तार आरंग भूपं॥
तनं षेद रोमंच उच्छाह अंगं। बयं विस्मयं वेपथं मोद रंगं॥ छं० ॥ ५३॥
दया दीन चित्तं अभिलाष जग्गं। गुनं रूप रागं जितें चित्त लग्गं॥
नषं सिष्ष जग्यौ तनं मीनकेतं। चढ़ी मत्त बेली चितं पच हेतं॥
छं० ॥ ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न हो कर राजा का नाइक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आपसे क्या मोल कहूं।

तवै बोलि नाइक्क राजन्न तामं। कहा मोल पाचं कहो द्रव्य नामं॥
कहै नाम नाइक्क पाचं सरीसं। कहा मोल पाचं न्रपं जोग जीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या को महलों में रखना।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं। ग्रिहं रष्षियं अप्प पाचं सुभासं॥
बिसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्ठे। कला काम क्रत्यं निसा पाच तुट्टे॥
छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना।

दुहा ॥ काम कला तुट्टिय न्रपति। सु ग्रह पवारी द्वार॥
तिन अवास दासी सघन। अह निस रह रषवार ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कर्नाटी पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ ३० ॥

अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय ।)

प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ।

कवित्त ॥ महल भयौ न्रप प्रात । आइ सामंत सूर भर ॥
ठट्टा दिसि [1]उत्तरिय । राय चामंड बीर बर ॥
बंभन वास जु राज । [2]कोइ मुक्कलि इन काजं ॥
चावद्दिसि अरि नन्हे । सीम कहै नह आजं ॥
कैमास बोलि मंत्री तहां । मंत्र लाज जिहिं लाज भर ॥
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ॥ छं० ॥ १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना ।

पद्धरी ॥ बैठे सु राज आरंभ गुझ्झ । पद्धरी छंद बरनैति मझ्झ ॥
बुल्लिय नरिंद जै मत्त धीर । सद्दै सु जुद्ध संग्राम और ॥ छं० ॥ २ ॥
दिसि मत्त मत्त उज्जैन काम । बंचाइ राज कग्गद सु ताम ॥
सामंत सूर तपि तोन बंधि । आवत्त रोस चलि सेन संधि ॥ छं० ॥ ३ ॥
दिम सुद्ध राज चलियै सु आज । सम बैर बीर बंकान साज ॥
जै चंद सेन दुस्सह प्रमान । षुरसान सैन सुलतान भान ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उत्तरिय । (२) ए. कृ. को.-कोदक ।

चालुक्क बीर गुज्जर नरेस। क्रित करै जुद्ध करनी विसेस ॥
थल वटिय वीर मभिझय हुआव। रष्षंति सूर तिन मध्य आव ॥
छं० ॥ ५ ॥
सब सबर अरी चहु दिस नरिंद। तिन मध्य इन्द पृथिराज इन्द॥
सो वरन बीर उज्जैन ठाम। महि मंह काल सुभयान ताम ॥
छं० ॥ ६ ॥
तिन बरन ठाम देवास तीय। संग्राम राज मंडन सु बीय ॥
बंच्यौ सु राज कग्गद प्रमान। धर धनुह धार अर्जुन समान ॥
छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है।

द्रिग करन धरन धर धरनि पाल। सामंत सूर तिन मध्य लाल ॥
देवास धीय देवास व्याह। मंच्यौ सु राज संभरि उछाह ॥छं०॥८॥
जैचंद करहु अप्पर निधान। कलि काल बत्त चल्लै प्रमान ॥
सा पुरस जीवतं बिय प्रकार। संभरै एक कित्ती संसार ॥छं०॥९॥
जीरन सु जुग्ग इह चलै बत्त। संमार सार गल्हां निरत्त ॥
इह काच पिंड [1]संची सु बत्त। जैहै सुजोग जोगाधि तत्त ॥छं०॥१०॥
जैहै सु भान सब ग्रह प्रकार। दिष्टिये मान सो बिनसि सार ॥
वापी विरष्ष सर मढ प्रमान। मिलिहै सु सर्ब अगतिम्र जान ॥
छं० ॥ ११ ॥
छंडो न बीर देवा सु मुष्ष। रष्षौ सुमंत गल्हां [2]पुरुष्ष ॥छं० ॥१२॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए।

कवित्त ॥ गल्हां काज सु देव। अस्ति दद्धीच दीय बर ॥
गल्हां काज सरुष्ष। बज्र किन्नौ सु इंद्र जुर ॥

(१) मो.-सच्ची, ए.-पंची। (२) ए. कृ. को.-पुरिष्ष।

गल्हां काज नरिंद । बंस दुरजोध मान रषि ॥
गल्हां काज सु धात । मान अट्टत्ति भूमि लषि ॥
रष्षिहै नरन गल्हां सुबर । गल्हां रष्षै न्रपति उष ॥
जयचंद बंध दल बल सकल । सबर [1]साँइ किज्जै सरुष ॥छं०॥१३॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना ।

दूहा ॥ इह [2]परतग्या नरिंद मन । करै बनै प्रथिराज ॥
सकल सूर सामंत ज्यौं । मुहि अग्या सिरताज ॥ छं० ॥ १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन ।

चोटक ॥ इति सामँत सूर प्रमान धरं । दरबार बिराजत राज भरं ॥
चढ़ि चब्बर चंद पुंडीर कियं । सोइ देह धरै फिरि आनँदियं ॥
छं० ॥ १५ ॥

न्रप लज्ज न्रपत्तिय सारँगयं । सभ पुज्जिन सामँत ता बरयं ॥
अतताइय अंग उतंग भरं । सिव सेव कियैं तन फेरि धरं ॥
छं० ॥ १६ ॥

नर निढ्ढुर एक नरिंद समं । कनवज्ज उपज्जिय जास जमं ॥
गहिलौत गरिष्ट गोइंद बली । प्रथिराज समान सु देह कली ॥
छं० ॥ १७ ॥

छिति रष्षन छित्ति पजून भरं । तिन पुत्र बली बलिभद्र नरं ॥
परमार सलष्ष अलष्ष गती । तिन पुज्ज न सामत सूर रती ॥
छं० ॥ १८ ॥

कयमास सु मंचिय राज दरं । अरि अंग [3]उछाहन बीर बरं ॥
अचलेस उतंग नरिंद धरं । रन मझ्झ बिराजत पंग भरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

चावंड नरिंद सु षग्ग बली । नरसिंघ सु दंद अरिंद कली ॥
बर लंगरिराइ उंतग षलं । बय देहिय आनि सुबाहु बलं ॥छं०॥२०॥

(१) ए. कृ. को.-साइ । (२) ए. कृ. को.-परतं ग्यान । (३) ए. कृ. को. उछाहन ।

[1]इक रंग सु अंग करंत रनं। कर पाइ सु अंषय हथ्थ तनं॥
लरि लोह लुहानय किति करं। अरि वाइव धूर ज्यों पत्त [2]ढरं॥
छं० ॥ २१ ॥

भजि भौंह चंदेल सु षेल षगं। धर धूसन भुंमिय जंपि जगं॥
दिवराज सु बग्गरि बंध बियं। जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं॥
छं० ॥ २२ ॥

उदि उद्दिग बाह पगार बली। हरि तेज ज्यों रोर फटंत षली॥
नरनाह सु कन्ह का कित्ति करौं। भर भीषम भारथ सुद्धि धरौं॥
छं० ॥ २३ ॥

भय भट्टिय भान जिहान जपै। तिहि नाम सुने अरि अंग कपै॥
सुत नाहर नाहर के क्रमयं। तिन कंकन बंक बियं अमयं॥
छं० ॥ २४ ॥

रज राम गुरं षग ध्रम्म बली। जिन कित्ति दिसा दस बढ्ढि चली॥
बड़ गुज्जर राम नरिंद समं। जिन [3]कंदल हड्डि उठंत भ्रमं॥
छं० ॥ २५ ॥

कविचंद हकारि सु अग्ग लियौ। भर भट्टिय भान भयंक बियौ॥
रघुबंसिय राम सुरंग बली। कनक्कु जिन नाम नरिंद कली॥
छं० ॥ २६ ॥

बर राम नरिंद नरिंद समं। तिहि कंदल उट्ठि रुधं सु जमं॥
जिहि वस्त्र सु सस्त्रय अंग करं। घरि द्वै भर उट्ठिज बूंद भरं॥
छं० ॥ २७ ॥

भगवत्ति अराधन न्याय करै। रघुवंसिय किल्ह नरिंद बरै॥
जिन जित्तिय जाइ पंजाब धरं। ....॥
छं० ॥ २८ ॥

जिन [4]पंडिय रावर जुद्ध जित्यौ। धर मंडव मुंड चका बरत्यौ॥
पांवार सलष्ष सु पुच बली। नृप जैत सजैत कि कित्ति कली॥
छं० ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-इक रंग सुरंग। (२) ए. कृ. को-धरं। (३) कृ.-कंकानि।
(४) ए.-मंडिय।

सु चलैं बर भाइ [1]दुभाइ भरं । तिन सीस सु जंगल देस धरं ॥
धनवंत धनू न्रप [2]धावरयं। जित तित्त नहीं मन सावरयं ॥
छं० ॥ ३० ॥

परताप प्रथीपति नाम बरं। उपज्यौ कुल पंडव जोति गुरं ॥
तन [3]तूंअर नेत चिनेत बरं । परिहार पहार सु नाम धरं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

सजयौ जय सद्द पुंडीर बली। जिनके भुज जंगल देस कली ॥
परसंग सु षीचिय षग्ग बली। चमरालिय कित्ति नरयंद हली ॥
छं० ॥ ३२ ॥

नव कित्ति नरिंद सु अल्हनयं। भजि भारथ कुंभज किल्हनयं ॥
सारंग सुरंगिय कित्ति बली। बर चालुक चार नक्षच हली ॥
छं० ॥ ३३ ॥

परि पारथ क्रन्न कुँवार न्रपं। तिहि पारथ पूजय जुद्ध जपं ॥
षग षंडिय [4]छिचिय छित्त रनं। सब सामँत सूर समोह तनं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

हहकारि उभै न्रप पास लिए। समतम्मि सु,मंचिय मंच बिए ॥
जित जोध विरोधत राज करै। तिन मैं मुष भारथ नाउ सरै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

कविचंद सु नामय जाति क्रमी। तिनके गुन चंपि नरिंद भ्रमी ॥
सिर अंतय आतप छच धर्यौ। कनकाबलि मंडिय मंडि हर्यौ ॥
छं० ॥ ३६ ॥

कवि कित्ति प्रमोधय राज चली। प्रथिराज विराजत देह बली ॥
बर मंगल बुद्ध गुरं सु धरं। सुक सक्रय वक्रय बुद्धि नरं ॥छं०॥३७॥
तिन माहि विराजत राज तरं। सु मनों छबि मेरय भान फिरं ॥
बर सेंगर सूर कल्यान नमं। जिहि भारथ कों प्रथिराज समं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

(१) मो.-सुभाइ।　(२) मो.-धीवरयं।　(३) ए. कृ. को.-तूँअर।
(४) ए. कृ. को.-छत्रिय।

जयचंद जँघारय नाहरयं। न्रप राज सु रष्षन साहरयं ॥
मकवान महीपति मीर बली। प्रथिराज सु जानत जोति छली॥
छं० ॥ ३९ ॥
कठ हेरिय सारँग सूर बली। प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली॥
जग जंबुअ राव हमीर बरं। छिति पत्ति कँगूरह सूर गुरं॥
छं० ॥ ४० ॥
नर रूप नराइन राज भरं। भर भारथ जुग्गिनि पाच करं।
गुरराज सु कन्हय जम्म जिसौ। मग वेद चलंतह ब्रह्म इसौ॥
छं० ॥ ४१ ॥
गुर ग्यारह से सकसैन बरं। प्रथिराज चढ़ंतह वाज धरं॥
चलि सेन मिली करि एकठयं। बजि बंब कि अंबर घुम्मरयं॥
छं० ॥ ४२ ॥
झननंकत षग्ग फरी धरयं। भजि डंक ज्यौं डक्कत भूत भयं॥
गहरात गजिंद सुरिंद समं। जनु छुट्टि जलद्द विहद्द भ्रमं॥
छं० ॥ ४३ ॥
चलि मल्लन हल्ल ज्यौं रोस रसै। जमजूथ मनों दल दंद ग्रसे॥
हयनारि सुधारि कें कंक षगी। धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी॥
छं० ॥ ४४ ॥
कमनैत वनैत कि नेत धरं। मँडि मुष्टि मही जनु रूप करं॥
फहराति सु बैरष वाइ बरं। सु मनौं घन फुट्टिय अग्गि झरं॥
छं ॥ ४५ ॥
सब सेन सभा इह वन्न कहै। बरषा रुव संत हे छब्बि लहै॥
छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना।

दूहा॥ जो बुल्लै सामंत सथ। तौ 'चल्लै प्रथिराज॥
करि उप्पर जैचंद कौ। अरि बंधौ सिरताज॥ छं॥ ४७॥

सामंतों का राजाज्ञा मानना।

(१) मो.-भो।

कवित्त ॥ जो अग्या सामंत। स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
ज्यौ मंचह गुन ग्यान। धीय मानंत तंत लिय ॥
ज्यों सु भ्रम्म [1]उबरत्त। बीर चढ्ढौ परिमानं ॥
ज्यों गुरु बलहुस्र विदुष। तत्त सोई करजानं ॥
सा भ्रम्म चिया अग्या न्रपति। मान मोह जानै न अँग ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम। सबल बीर चल्लेत सँग ॥ छं० ॥ ४८॥

जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना।

दूहा ॥ अति आतुर आरंभ वल। गिनी न तिन गति काज ॥
तिन उप्पर जैचंद कौ। सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कमधज्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन।

चोटक ॥ सीइ सज्जिय सूर नरिंद बलं। छिति धारन को छिति छच कलं॥
मति मंच बरष्षय सूर बरं। धर पर्वत ज्यौं भर कन्ह करं ॥
छं० ॥ ५० ॥

आहत्त अहीर करै बलयं। सुरष्यौ गिर एक हरी छलयं ॥
सु करै बलबीय अहत्त भरं। न्रप राज सु कंठिय कंठ गुरं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

हरसिंघ महाबल बंधु वियौ। बरसिंघ बली अरि छच लियौ॥
बर जद्दव जाम जुवान नरं। जिन [2]कंधय ढिल्लिय राज गुरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

नर नाहर टांक नरिंद नमं। तिहि कंठ अरी धर भ्रम्म तमं ॥
[3]पंचम्म पवाँर सु पुंज बरं। मद मोष बिछुट्टिय काल भरं॥
छं० ॥ ५३ ॥

परषत्त सु पल्हन अल्हनयं। भुज रष्षिय भारथ ढिल्लनयं ॥
बर तूंअर रावति बान बली। जिन कित्ति कलाधर भ्रम्म छली ॥
छं० ॥ ५४ ॥

(१) मो.-उरवत्त। (२) ए. कृ. को.-कंठय। (३) ए. कृ. को.-पंचमुष्षव बार।

बर बीर कँठी षुरसान [1]रनं। हथ चीय अहुट्ठपती सुभनं॥
कंठीर कलंक्कत जैत बली। जिहि ओटत जंगल देस भली॥छं०॥५५॥

न्रप रूप नरिंदति वाहनयं। षुरसान दलं षिति सा हनयं॥
जसरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं। षित की षित कंध परै न धरं॥
छं०॥५६॥

जनएस गुरेस सबंध बली। जिहि निद्दुर उप्पर पंच [2]पुली॥
परसंग पवित्त पवित्त छती। षुरसान दलं जिन जुद्ध मती॥
छं०॥५७॥

अवनीस उमाह तुरंग [3]तुरं। जिहि बंधन वास उगाहि धरं॥
जिन गुज्जर ताप तिरं तिरनं। कयमासय उप्पर कीय घनं॥छं०॥५८॥
महनंग महा मुर नैंन समं। तिन राज सु रष्षिय जित्ति क्रमं॥
बरदावलि चंद नरिंद पढ़ी। सु मनों कल जोति सरीर बढ़ी॥
छं०॥५९॥

सभ सोहत सित्त रु पंच इकं। जिन जानत [4]मोद मयं करिकं॥
कवि नामति जित्तिय जानि तिनं। तिनकी बिरदावलि जंपि फुनं॥
छं०॥६०॥

सत में षट राजत राज समं। तिनके जुव नाम कहोति क्रमं॥
छं०॥६१॥

उन छः सामंतों के नाम जो सब सामंतों में सब से अधिक मान्य थे।

कवित्त॥ निद्दुर स्हूर नरिंद। कन्ह चहुआन सपूरं॥
जिपड़ जैत जैसिंघ। सलष पावारति स्हूरं॥
जामदेव जद्दव जुवान। भारथ्थ पत्ति सिर॥
बर रघुबंसी राम। द्रग्ग महिं कौन तास बर॥
बर बीर्य रक्त [5]पच्छै सुनिय। रुधिर बूंद कंदल परहि॥
मधि मद्धि मुहूरत इक्क बर। अरि बर गन रुंधहि भिरहि॥छं०॥६२॥

(१) ए. कृ. को.-नरं। (२) मो.-हली। (३) मो.-मुरं।
(४) ए. कृ. को.-मोह। (५) ए. कृ. को.-परै।

उक्त छः सामंतों का पराक्रम वर्णन।

सौ सामंत प्रमान। [1]उग्गि अंकूर बीर रस॥
सद्धि भली नक्षपत्त। अंग लग्गे सुभंत तस॥
[2]राजस तम सातुक्क। साष अग्गै अधिकारिय॥
जघ्घ कघ्घ आरुहिय। रत्ति ढिल्लीपति धारिय॥
जंगलू देस जंगल न्त्रपति। जग लेवै बर सूर घट॥
षुरसान षान उप्पर चढ़िय। बर बीर रस बीर पट॥ छं० ॥ ६३॥

सामंतों का जैचंद पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना।

अनल दंग अरि लग्गि। उग्गि अगिवान बीर रस॥
सामंता सतभाव। पंग उप्पर कीजै कस॥
पंच घटी सौ कोस। राज अग्गं ढिल्ली तँह॥
साम दान अरु भेद। दंड निर्नय[3]साधौ जँह॥
मन बच क्रम कह कह कल्यौ। अलप न सुर सहय सुघट॥
दुजराज संधि गुरराज कौ। सद्धि महूरत चढ्ढिपट॥ छं० ॥ ६४॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था।

त्रोटक॥ प्रति प्रीति प्रत्यं प्रतिबिबं न्त्रपं। ससि राज इकं प्रति ब्यंब पथं॥
प्रतिब्यंबह मझ्झ इकंत उभै। चहुआनरु सामंत सूर सुभै॥
छं० ॥ ६५॥
दिस राकय अर्कय थान बियौ। तम भंजित तेज सु राज लियौ॥
सोइ लच्छि हयग्गय मंत षुली। रवि की किरनावलि तेज डुली॥
छं० ॥ ६६॥
पर पष्षर स्याह तुरंग रनं। सु मनों घन सोभत नैर तनं॥
सु विचें विच राजत राज रती। सु मनों प्रतिबिंब किदेव किती॥
छं० ॥ ६७॥

(१) ए. कृ. को.-"रौद्र भयानक रस"।
(२) मो.-राजत। (३) मो.-साधै।

पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा ।

दूहा ॥ इत्ते मंतन इक्क मुष । न्रप सेवक अरु इष्ट ॥
एक मंच एकह बुले । वियौ न जंपै जिष्ट ॥ छं० ॥ ६८ ॥

चढ़ाई के लिये वैसाष सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना ।

तिते स्रूर तिहि रत्ति बर । ग्रेह सपत्तें बीर ॥
पंचमि बर बैसाष धुर । लैजु वचन ते धीर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना ।

अरिल्ल ॥ अप्प अप्प गय ग्रहे सस्रूरं । मरन महूरत मरन न पूरं ॥
चढ़े बीर चावद्दिसि रंगं । मनों [1]षलह लिय मेघ असंगं ॥छं०॥७०॥

प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना ।

दूहा ॥ मेघ पंति वद्दल विषम । बल दंतिय सजि स्रूर ॥
चढ़ि जिहाज पर दिष्षियै । धर नहिं परै करूर ॥ छं० ॥ ७१ ॥
धरनीधर तिय गुननि बर । लिय कारन परिमान ॥
स्रूर उगै सत पच ज्यौ । ज्यौं भद्दव बल भान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन ।

चोटक ॥ सुअं बर बीर सु चोटक छंद । छिती छिति मत्त हयग्गय इंद ॥
रनं किय बीर नफीर रवद्द । ढलक्किय ढाल सु ढिल्लिय भद्द ॥छं०॥७३॥
घनंकिय संकर अंदुन अंद । जग्यौ मनु भारत बीरय कंद ॥
छिती छितिपूर हयग्गय भार । दिसौ दिसि दिष्षहि ज्यौं जल धार ॥
छं० ॥ ७४ ॥
ढरै दिगपाल सु अट्ठय मेर । भये भयभीत भयानक भेर ॥
सुनै स्तुति छचिय सद्द निसान । दिसा षुरसान सु बद्धय पान ॥
छं० ॥ ७५ ॥

(१) ए. कृ. को.-षहह ।

मंडे मय मत्त [1]गहम्महराज । उठै बर अंकुर मुच्छ विराज ॥
कहै कविचंद सु उप्पम ताहि । मनों सुर लग्गिय चंद कलाहि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

[2]अपें प्रथिराज समप्पय वाज । तिनें दिषि पंतिय प्रब्बत लाज ॥
दुअं दुअ बंधि रकेबन जोर । चढ़े बर छिचिय सूर झकोर ॥
छं० ॥ ७७ ॥

हयहल पंति सुभंतिय ठांनि । मनों बगपंति घनी घट बांनि ॥
मयं मय रुद्र सु रुद्रय सार । भयौ जनु अंत प्रलै दुति वार ॥छं०॥७८
डहडुह बज्जय डक्कय मात । डलै तिन बीर गिरव्वर गात ॥
सु दिष्षन वांम फुरक्कय नैन । चल्यौ जनु बीर परब्बत बैन ॥छं०॥७९॥
इसे दोउ बीर विराजत रिंघ । गुफा इक मझ्झ मनों दुअ सिंघ ॥
चले ग्रह छंडि ग्रहग्रह सूर । कही कविचंद सु उप्पम पूर ॥
छं० ॥ ८० ॥

कहै करुना रस कंतहि चीर । उठ्यौ तहां जित्त भयानक बीर ॥
लिषी लिष चित्रय दंपति बैन । मनों पलटै दिन चाचिग नैन॥
छं० ॥ ८१ ॥

छिपा छिप होम प्रमान प्रमान । किधौं चकई सुपमुक्कय मान ॥
भयौ मन बीरन बीर प्रमान । भयौ करुना रस तीय प्रमान ॥छं०॥८२॥
दुहूं दिसि चित्त अचित्त अलोल । मनों दुअ पास हलंत हिडोल ॥
दोउ मझ्झ रप्पय सूर सनूर । भजै करुना रस काइर पूर ॥छं०॥८३॥
मिले न्रिप आइ सु ढिल्लिय थान । कहै कविचंद बषान बषान॥
छं० ॥ ८४ ॥

सामंतों की सर्प से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ स्वामि भ्रम्म सौं [3]सुद्ध मन । ज्यौं [4]बांबी दिसि [5]स्रप्प ॥
स्रग विषांन ज्यों अग्नि बर । जगि बीरा रस जप्प ॥ छं० ॥ ८५ ॥

सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंशा वर्णन।

(१) मो.-गहम्मग । (२) कृ. को.-अर्प । (३) ए. कृ. को.-जुद्ध ।
(४) को.-वाबी । (५) ए. कृ. को.-सर्प ।

कवित्त ॥ जगति जग्य जनु बीर । जग्गि चयनेत अग्गि सिव ॥
कै मचकुंद प्रमान । गुफा बारुन सु दैत्य लिव ॥
कै [1]जग्यौ भसमास । दैत्य भग्गा गोरीसं ॥
इसे सूर सामंत । बीर चावद्दिसि दीसं ॥
दीनी न नृपति किन निरति बर । किहु न सुनी जैचंद क्रम ॥
बग्गं उपारि धाए बलिय । अभिलाषह भारथ्थ श्रम ॥ छं० ॥ ८६ ॥

शूर वीर सामंतों का उत्साह वर्णन ।

अभिलाषह श्रम गर्व । भयौ किल किंचित सूरं ॥
ज्यों नल मति दमयंत । सेन सज्जी रन पूरं ॥
भवर सद्द सम सुमन । प्रेम रस छुट्टिय जंगं ॥
सुबर राज चहुआन । करन उप्पर बर पंगं ॥
माधुरत मधुर बानी तजी । रजिय सूर रंजित सुभर ॥
छिति मत्त [2]छिती छिचिय [3]छितिग । दिपति दीप दिवलोक धर ॥
छं० ॥ ८७ ॥

फौज की शोभा वर्णन ।

मोतीदाम ॥ दसं दिसि पूरग [1]मत्तय भार । चढ्यौ जनु इंद्र धनुष्षय धार ॥
तुरंगन तुंग हरष्षय ईस । षरक्किय नारद सारद रीस ॥ छं० ॥ ८८
छहंमित छोहय शंकर हथ्थ । कहै कविचंद सु ओपम कथ्थ ॥
गए गजनेस सुसथ्थय बीर । रहै लगि भौंर तिनै लगि नीर ॥
छं० ॥ ८९ ॥
मनों कुत कुंतय बारय पुल्लि । गए मनु आरद शंकर भुल्लि ॥
करुना रस केलि क्रमीनह बीर । नच्यौ अदबुद्द स रुद्र डकीर ॥
छं० ॥ ९० ॥
इक इक रस्स सु संतिय सूर । दिषे सुष मत्त महा मति नूर ॥
सुलतानरु हिंदुअ बैर प्रमान । सुआदय जुद्ध निदान निदान ॥
छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जग्या । (२) ए. कृ. को.-छित्त । (३) मो.-छिपग ।
(१) ए. कृ. को.-मध्यय ।

दया बर हीन सगप्पन नथ्थि। .... ॥
उमा क्रत काज प्रजापति दच्छि। तज्यौ नन मात उरग्गिय लच्छि ॥
छं० ॥ ६२ ॥

षिन्ने सिर ईस पटक्किय जट्ट। भयौ तहां जन्म सु बीरय भट्ट ॥
भिरी भिरि नंदिय दंद प्रकार। पछै दछि दच्छिय दष्षि उचार ॥
छं० ॥ ६३ ॥

इतं मिति मंत सु कंतिय राज। भयौ बर बीर भयानक साज ॥
दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ। बज्यौ रनतूर रवद्दय एछ ॥
छं० ॥ ६४ ॥

मली जनु जंगम जो गवरीस। दसकंधु डुलावत प्रव्वत रीस ॥
तज्यौ जहां मान लगौ पिय कंध। नयौ रस संत सु मंतिय संध ॥
छं० ॥ ६५ ॥

सु जाति जरा न्रप हक्कि प्रमान। चढ्यौ तिन बेर बली चहुआन ॥
छं० ॥ ६६ ॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीवद्ध करना।

कवित्त ॥ चाहुआन बर बलिय। भार भारथ रस भिन्नौ ॥
मधुर सुधर सिंधुरस। अंग चावद्दिसि छिन्नौ ॥
सुबर सेन सामंत। सुबर बल बीर निनारे ॥
मभ्भ मभ्भझह आहत। देव जनु जुद्ध हकारे ॥
कुसमिस्त जुद्ध देवह करन। रथ सुरत्थ हय हयति नर ॥
सामंत सूर पुज्जै नहीं। वर कंदल [1]उट्ठैति धर ॥ छं० ॥ ६७ ॥

सामंतों की वीरता का वर्णन।

उरग विंद रवि उठै। सीस हक्कै धर नंचै ॥
देवासुर संग्राम। देव पूजा देवंचै ॥
इंद्र जुद्ध तारक्क। सोइ तत्तह अधिकारी ॥
पंच पंच पंडव सु। भीम दुर्जोधन भारी ॥

(१) मो.-उठंति।

गज मंत दंत कट्टै सु भूत। दैवत्त जुध सामंत रत ॥
उइयो जुड्ड आहत मिति। नहिन म्रेच्छ हिंदू छपन ॥छं०॥९८॥

युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित निढ्ढुढर का वीर-मत वर्णन।

मिले सूर सामंत। मंत सज्जिय निढ्ढुर बर ॥
कहां सु प्रान संग्रहै। पंच किहि आइ मिलै धर ॥
कोन क्रम्म संग्रहै। क्रम्म को करै सु देहं ॥
कोन जीव संग्रहै। कोन त्रिमवै सु छेहं ॥
जैचंद आनि सुरतान बर। अधर राहु लग्यौ अवर ॥
पित्र मत्ति दान दिय विप्र बर। रहसि राह लग्यो सु धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कह निढ्ढुर रट्ठौर। सुनहु सामंत प्रकारं ॥
कहौ देव कौ ध्रम्म। किति संग्रहौ सु सारं ॥
वारि बूंद बुदबुद। हथ्थ वारी सु आव इत ॥
ज्यों बहलवै छांहि। घास अग्गी सु मत्ति भ्रिति ॥
इत्तनिय देह की गत्ति वर। तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
मस्सान पुरान रु काम के। अंत चित्त सदगत्ति धर ॥छं०॥१००॥

अंत मत्ति सो गत्ति। अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
पुब्ब ध्रम्म संग्रहै। पुब्ब गत्तिय सुइ गत्तिय ॥
दैव भाव संग्रहै। काल केवल गुन वत्तिय ॥
सिंचिये वेलि जं जं बधै। तंतं बुद्धि पुरान बर॥
त्रिघात घात पत्तिय सु वर। सु हत काल निव्वरि सु नर ॥छं०॥१०१॥

स्वामि निंद जिन सुनौ। स्वामि निंदा न प्रगासौ ॥
अह निसि पंछौ मरन। भीर संकरैं निवासौ ॥
तब बुल्यौ महनंग। छंडि इह बंच सस्त्रगह ॥
अस्ति काज दद्धीचि। दिय सुरपत्त मत्त बहु ॥
सुरपत्ति मत्त किन्नौ सु बर। निवर अंग को अंग मय ॥
जैचंद भूमि उब्बैलि कै। चढ़हु भूमि घर दुर्ग मय ॥छं०॥१०२॥

गाथा ॥ के के न गया गुर ग्रेहं। के के न काल संग्रहे हंतं ॥
मंची जा प्रथिराजं। रण्थे जा बीर सो सत्वं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

साटक ॥ जाता जा मनसा समस्त गुरयं, मानस्य सा सुंदरी ॥
[1]ता भग्गा मन खूर काइर बरं, [2]किल किंचि किंचित रसै ॥
अभिलाषं छिति गर्व तारुन विधे, संसार सहकारयं ॥
वारं जा पारंग दिव्यत गुरं, दीसंति देवानयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत वाहं उचारै पवंगा। तिनै धावतैं होइ मारुत्त पंगा।
झमी झुंम अग्गै सुमं तीन संधै। मनों ब्रह्म विधि गंठि लै वाइ बंधै॥
छं० ॥ १०५ ॥

पुजै पंष अंषी मनं षीन धावै। तिनं उप्पमा कौंन कविचंद लावै ॥
किधौं कैसपन्नं चलै चित्त भारी। किधौं चक्करी हथ्थ [3]आवत्त तारी॥
छं० ॥ १०६ ॥

किधौ वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै। म्रगंराज कैसै उपम्माति लावै ॥
अगंपाइ दीसे मुषं मेह कारैं। मनों दिव्य वानी पढ़ै कव्वि भारै ॥
छं० ॥ १०७ ॥

धरे पाइ बाजी हढ़ंतं निभारै। मनों तार सौं तार बज्जै हकारै॥
तिनं दूरि तें अंग ओपंम ऐसे। मनों तार छुट्टै अकासं सु जैसे ॥
छं० ॥ १०८ ॥

इसे बाजि सज्जे समप्पेति राजं। दिषै खूर सामंत हथ्थें सुपाजं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना।

दूहा ॥ बाज राज न्रप [4]राज दिय। बिलसि विधान बिधान ॥
तिन उप्पम कविचंद कहि। का दिज्जै धपवान ॥ छं० ॥ ११० ॥

---

(१) मो.-ना। (२) ए. कृ. को.-कल।
(३) ए. कृ. को.-दीसंत। (४) ए.-गज।

घोड़ो की शोभा वर्णन।

रसावला ॥ धपै बान भारै, हकारे निनारैं। दुरै अप्प छाया, तते अग्गि ताया॥
छं० ॥ १११ ॥
धवै [1]अंठ भारी, मुकोटं निनारी। बरं नैन ऐसें, हरी देव जैसें ॥
छं० ॥ ११२ ॥
महा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दीवा। उरं पुठ्ठ भारी, [2]सु मासं निनारी॥
छं० ॥ ११३ ॥
तुला जानि षंभं, पला जानि अंभं। नषं डंड इड्डं, मनो डंड सिड्डं॥
छं० ॥ ११४ ॥
द्रुमं वीर डुल्लैं, कवी कित्ति षुल्लै। मनों वाय कांडं, परी मझ्झ होडं॥
छं० ॥ ११५ ॥
कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं। अवत्तें निनारे, मनों स्वामि सारे॥
छं० ॥ ११६ ॥
इसे राज राजी, दिए वाज राजी। सु दै दै रकेबं, चढ़े वीर [3]बेवं ॥
सुरत्तान पासं, चढ्यौ बीर भासं। .... छं० ॥ ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ बिना हेत सगपन बिना। इष्टपना बिन राज ॥
धन्नि राज प्रथिराज कौ। षग गोरी किय साज ॥ छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना।

कवित्त ॥ षल गोरी सुरतान। जाइ रुंध्या रन अग्गै ॥
हय गय रथ नर सज्जि। बीर पावस घट जग्गै ॥
महन रंभ आरंभ। रत्त अरुनोदय सारिय ॥
चाहुआन सुरतान। बीर जै पत्त करारिय ॥
डमरू डहक्कि जुग्गिनि हसैं। जिम जिम बंबर धज लसैं ॥
सामंत सूर चहुआन सौं। वीर बिदुरि सस्नह कसै ॥ छं० ॥ ११९ ॥

(१) मो.-अम्बु। (२) मो.-समंसं। (३) ए. कृ. को.-वेवं।

राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना।

मेछ मह्हरति सत्ति। मत्ति कीनौ रत भारी॥
वीरा रस विद्दुरिय। लोह लग्गौ अधिकारी॥
छित्ति मित्ति छिति सोभ। अंषि आवै न अंषि षिन॥
ज्यों नह्व वन दिष्ट। चंपि चूवंत मंत घन॥
रन हरषि वरष्षिय मुक्ति जिहि। धप्पि लोह कोहां करसि॥
चावंडराइ दाहर तनौ। न्रप अग्या विन अग्र धसि॥छं०॥१२०॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानबाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार षां खुरसान षां पर आक्रमण करना।

रा चावंड जैतसी। लोह आजानबाह बर॥
रष्षे रन सुरतान। [1]मत्त लग्गे सुवीर भर॥
पंच कोस न्रप छंडि। आप रुंध्या सुरतानं॥
वज्र घाट वज्जीय। आइ लग्गा सु विहानं॥
छुट्टा कि सिंघ पल काज वर। उरसि लोह लग्गा लरन॥
तत्तार षान पुरसानपति। अपप मह्हरति मरन मन॥छं० ॥१२१॥

उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुस्लमानों का कमान पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना।

भुजंगी॥ पुरासान षानं सु तत्तार बीरं। मनों वज्र देषे सु वज्रं सरीरं॥
महा बाहु बज्री कढ़े बज्र हथ्थें। लगे अंग अंगं निरथ्थे निरथ्थें॥
छं० ॥ १२२॥
छुलिक्का सु बानं कमानेन साही। इसे सूर वेगं षलं लै [2]न्रिवाही॥
उरं मत्त मत्ते विमत्ते निनारे। मनौं देषियै बीर रत्तं प्रकारे॥
छं० ॥ १२३॥

(१) मो.-मनह। (२) मो. नैत्रिबाही।

उरं काल काली जमं दड्ढ कड्ढी। किधौ दंढ्ढ जम दढ्ढु जम कर विडढ्ढी॥
उरं मत्त मतं विमत्तं सु मत्ती। परें रंग चंगं छके आनि गत्ती॥
छं०॥ १२४॥

दुवं हिंदु मेच्छं तसब्बीति नंषी। सरं सट्ठि हज्जार आहत्त लष्षी॥
तिनें हथ्थ हथ्थं मुकत्ती प्रमानं। मनों देषि देवंत देवाधि यानं॥
छं०॥ १२५॥

विधं विद्धि रूपं प्रमानंत न्यारे। भए अंग अंगं तही तथ्थ सारे॥
नचै कंध बंधं कबंधं दुरंगी। मनों बीर आहत्त भारथ्थ रंगी॥
छं०॥ १२६॥

दुतौ जुद्ध करि बीर भए दै निनारे। घुमै सार घुम्मैं मनो मत्तवारे॥
छं०॥ १२७॥

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना।

*दूहा॥ चल्यौ राज सब सेन सजि। दिसि उज्जैनिय रंग॥
आइ साहि जग हजूरन। लयै सहायक पंग॥ छं०॥ १२८॥
गही गैल देवास की। गहन उपज्ज्यौ मिच्छ॥
नर चित्तन इच्छै कछू। ईसर औरै इच्छ॥ छं०॥ १२९॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है।

कवित्त॥ नर करनी कछु और। करै करता कछु औरै॥
नर चिंतन कर ईस। जिय सु नर औरै दौरै॥
रचे रचन नर कोटि। जोरि जम पाइ बत्त सह॥
छिनक मध्य हर हरै। केल किर तष्ष क्रम्म इह॥
प्रथिराज गमन देवास दिसि। व्याह विनोद सु मंडि जिय॥
अनचित्ति जग्गि गज्जन बलिय। आनि उतंग सु कंक किय॥
छं०॥ १३०॥

* मो. प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है।

पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन।

ज्यों बावन बलि पास। आनि अनचिंत्य छलन किय ॥
उन धर ले उन [1]दीन। [2]इन सु सुर बंधि छंडि जिय ॥
दसों दिसा दल उमड़ि। घुमड़ि घनघोर आइ जनु ॥
मीर मसंद ससंद। बान बहु बूंद बरषि घन ॥
दोउ दीन दंद दनु देव सम। भ्रम लग्गे लग्गे लरन ॥
प्रलैकाल हाल पिष्षिय निजरि। मनों मिच वृत्ती करन ॥
छं० ॥ १३१ ॥

युद्ध आरंभ होना।

रसावला ॥ कोह लग्गे षलं, सार उड्डै पलं। अंत तुट्टै दलं, पग्ग बेली तुलं॥
छं० ॥ १३२ ॥
नैन रत्ते झलं, जुट्टि जाल षलं। मिट्टि मोहै मलं, कोह कै केवलं॥
छं० ॥ १३३ ॥
रुंड नच्चै दलं, मुंड वक्कै वलं। गिद्धि सिद्धी कलं, वज्जि कोलाहलं ॥
छं० ॥ १३४ ॥
छिंछ उड्डै ललं, जानि तिंदू भ्रलं। हथ्थ तुट्टै नलं, वृष्ष साषा ढलं॥
छं० ॥ १३५ ॥
पंष पंषी बलं, ईस आसावरं। माल सोभै गरं, रुद्धि बुंदै झरं ॥
छं० ॥ १३६ ॥
जानि नग्गं परं, चंडि पचं [3]भरं। [4]मंति डक्कं डरं, भूत नच्चै षरं॥
छं० ॥ १३७ ॥
उभ्भयं चिक्करं, बक्कि नैरु रुरं। कंपि स्यारं नरं, सूर बढ्ढै बरं ॥
छं० ॥ १३८ ॥
झझ्झर झारै रूरं, ... छं० ॥ १३९ ॥

स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे।

(१) ए. कृ.को.-दीय। (२) ए. कृ. को.-दन सुरन बंधि छंडिय प्रिय।
(३) ए. कृ. को.-वरं। (४) ए. कृ. को.-मन्त्रि।

दूहा ॥ सार मंत मत्ते सुभट। षग ढिल्लै गज ठट्ट ॥
स्वामि ध्रम्म सद्दै रनह। मुकति सु भ्फारै वट्ट ॥ छं० ॥ १४० ॥

दोनों ओर के शूर बीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन।

कवित्त ॥ कोह छोह रस पान। बीर मत्ते चावद्दिसि॥
बलि उतंग सजि जंग। अंग जनु पंग कपिप जिसि ॥
हय दल बल उछ्छार। कढ्ढि गज दंत नडारै ॥
जनु माली महि मध्य। कढ्ढि मूला करि धारै ॥
भय सीतभीत काइर कपहिं। बहत स्हूर सामंत रिन ॥
कलि कहर कंक बक्कहि विहसि। गहन गोम मत्तौ महन ॥
छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतत्ताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुस्लमानो की फौज का विचलाना, हासब खां खुरसान खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ परी भीर मेच्छं [1]तसब्बी तनष्षं। कले कंक बक हीन जीवं सु लष्षं॥
षलं कंन्ह गोइंद कोका प्रमानं। मनौ देषियै देवयं दुंद [2]थानं ॥
छं० ॥ १४२ ॥
बढ़े बीर रूपं प्रमानं निनारै। अरी अग्ग चेतं न चित्तं धरारै ॥
नचैं कंध बंधं असंधं धरंगी। मनों वीर भारथ्थ आरत्त रंगी ॥
छं० ॥ १४३ ॥
लग्यौ लंगरी लोह लंगा प्रमानं। षगे षेत षंड्यौ षुरासान षानं ॥
उड़ै अत्तताई हयं पाइ तेजं। दलं दिष्षिये पेट पष्षे करेजं ॥
छं० ॥ १४४ ॥
हन्यौ हासबं षान सीसं गुरज्जं। गयं उड्डि गेनं सु षोपरि पुरज्जं॥
इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमे सार घुम्मे मनों मत्त वारे॥
छं० ॥ १४५ ॥

(१) मो--तसब्बीनि। (२) मो.-पानं।

दूहा ॥ रत्त मत्तवारे सुभट। विधि विनान उनमान ॥
तहन सुष्ष दुष्षं निजहि। मोह कोह रस पान ॥ छं० ॥ १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ मोह कोह रस पान। बीर मत्ते चावद्दिसि ॥
तबल तुंग बजि जंग। बीर लग्गे सु बीर कसि ॥
जा दिष्षै सुरतान। नैन बड़वानल धारी ॥
प्रलय करन करवान। प्रलय इन षग्ग हकारी ॥
सुभि लोह मोह अरुनय तनह। अति उदार चिन्हय रनह ॥
प्रथिराज राज राजिंद गुर। गहन गज्जि लीनों पनह ॥ छं०॥१४७॥

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन।

साहन बाहन बिरद। साह गोरी सयन्न सम ॥
हय गय दल विछ्छरहि। रोस उछ्छरहि बीर भ्रम ॥
बजहि षग्ग आवत्त। जूथ उड्डहि असमानं ॥
मनहु सिंघ गुर गज्ज। हक्कि कारिय सिर भानं ॥
दल जोरि विहसि साहाब भर। भर भर भिरि असिवर बजिय ॥
जानेकि मेघ मत्ते दिसा। निसा नभ्भ विज्जुल [1]लसिय ॥
छं० ॥ १४८ ॥

घोर युद्ध वर्णन।

चोटक ॥ इति तोटक छंद प्रमान धरं। सुनि नागकला तिहि कित्ति गुरं ॥
भिरि भारथ पारथ से उचरे। मय मंत कला कलि से बिडुरे ॥
छं० ॥ १४९ ॥
रननंकय नागय बीर सुरं। मनों बीर जगावत बीर उरं ॥
छिति छत्र दुहाइय छत्र धरं। सु मनों बरषा हवि वज्र झरं ॥
छं० ॥ १५० ॥

(१) ए. मो.-लजिय।

छिति सोहत श्रोन अपुव्व रनं। मनों भारत पूर चली सुमनं ॥
दोउ दीन विराजत दीन उभै। रँग रत्त रमै छिति छत्र सुभै ॥
छं० ॥ १५१ ॥
सुमनों मधु माधव रीति दुलै। सुजनो छ्त कंकर बीर फुलै ॥
इक अंग विमंगन हथ्थ चरै। सु मनों कल बीर कला दुसरै ॥
छं० ॥ १५२ ॥
मिति मत्त अवृत्तन घाइ घटं। सु नचै जनु पारथ बीर भटं ॥
छं० ॥ १५३ ॥
कवित्त ॥ बरकि बीर भट सुभट। भुम्मि हकै चावद्दिसि ॥
इक इक आवृत्त। बीर बरषंत मंत असि ॥
नचि नारद किलकंत। जग्गि जुग्गनि हक्कारिहि ॥
सार ताल वेताल। नंचि रन बीर डकारहि ॥
अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि। करसि बीर लग्गे सु बर ॥
चहुआन आन सुरतान दल। करहि केलि समरस अडर ॥ छं० ॥ १५४ ॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन।

नव बाजी नव हथ्थ। रथ्थ नव नवति सुभ्र भर।
इन बज्जै असि बरह। सार बज्जै प्रहार धर ॥
केक अंत जमकंत। कढ्ढी जमदाढ़ निनारी ॥
मनु कढ्ढी जम दढ्ढ। हथ्थ सामंत सुभारी ॥
चालुक्क चंपि चच्चर कियौ। सार धार सम उत्तर्यौ ॥
इह करी कोइ करिहै न कोइ। करौ सु कोगुन विस्तर्यौ ॥
छं० ॥ १५५ ॥
दूहा ॥ जंमति जमकिय जंम सम। जम प्रमना दोउ सेन ॥
मिले बीर उत्तर दिसा। आवृतह तिन नैन ॥ छं० ॥ १५६ ॥

जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रसंसा वर्णन।

कवित्त ॥ अद्ध कोस न्रप अग्ग। सूर रोपे पग गढ्ढै ॥
सद्द मद्द गजराज। चंडि पढ्ढै बल चढ्ढै ॥

लज्ज बंध संकरिय। बीर अंकुरिय दिष्ट रन ॥
सार धार बज्जी कपाट। त्रिघात घुमत रन ॥
कलमलिय कांक द्रुम मिच्छ सह। जनु लुअ लग्गत जेठ महि ॥
जद्दव सु जाम घरि इक्कलों। जनु बडवानल चंद कहि ॥
छं० ॥ १५७ ॥

गाथा ॥ दिष्षे मुष्षय मच्छरयं। अरज दुवं सन्नाम अवनयं ॥
अच्छरि वर कर इच्छं। भ्रमत [1]फिरंत [2]गौन मग्गाइं ॥छं०॥१५८॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मोरव्यूह रचि राज। सज्जि सब सेन सुद्ध करि ॥
चंच पीप परिहार। कन्ह गोइंद नयन सरि ॥
कंठ चंद पुंडीर। पांव जुग जैत सलष सजि ॥
निढ्ढुर भर बलिभद्र। पंष बजि बाय तेज गति ॥
सम पुंछ और सम पुंछ मन। बरन बरन छबि सिलह तन ॥
रन रोहि रह्यौ प्रथिराज महि। गिलन अप्प सुरतान रिन ॥
छं० ॥ १५९ ॥

गाथा ॥ सुच्छीजं वर मच्छरं। तं वटे अच्छरी अंगं ॥
सोयं साध प्रमानं। सा पूजी सूर सामंतं ॥ छं० ॥ १६० ॥

न्याजी खां, तत्तार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना।

कवित्त ॥ कर बल षान ततार। षान न्याजी षां गोरी ॥
हरवल [3]पीप नरिंद। साहि बंधी बिय जोरी ॥
मोरव्यूह चहुआन। मार धारह संधारै ॥
गिलन अप्प सुरतान। बोल बड्डा उच्चारै ॥
छत अछत सीस धारन भिरवि। जै जै जै चारन सु धुअ ॥
सुरतान सूर आहत्त वर। धन्नि सुवर सामंत भुअ ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए.-फरत। (२) ए. कृ. को.-गैन। (३) ए. कृ. को.-अप्प।

तन तरफत धर मिच्छ। वला छबि जानि नटक्कैं ॥
मत्त दन्ति आरुहैं। दंत सौ दंत कटक्कैं ॥
समर अमर करि वंदि। भये विस्मत पल[1] चारिय ॥
जहँ तहँ चंद पुंडीर। चंद ज्यौं रेनि उजारिय ॥
तन ग्रेह नेह मन अंत सम। भ्रम छंड्यौ दल दलि सुभर ॥
संभरिय सूर सुरतान दल। महन रंभ मच्चौ सु[2] धर ॥ छं० ॥१६२॥

युद्ध होते होते रात्रि होजाना।

हनूफाल ॥ इति हनूफालय छंद। कल विकल कल कृत चंद ॥
भय निसा उदित प्रमान। चहुआन सेन सुयान ॥ छं० ॥ १६३ ॥
कर हथ्थ बथ्थन थाक। मनौं मंडि बंधि चिराक ॥ छं० ॥ १६४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना।

कवित्त ॥ करि चिराक छह सहस। सेन उभ्भै चावद्दिस ॥
रत्तिवाह सम जुद्ध। बीर धावंत बीर रस ॥
तेज चिराक रु सस्त्र। रत्त द्रिग तेज प्रमानं ॥
सार धार निरधार। बेद छेदन गुन जानं ॥
सारूक करक्क रंक पल। निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं ॥
सामंत सूर इम उच्चरैं। सुबर बीर भारथ्थ नहिं ॥ छं० ॥ १६५ ॥

आधी रात होजाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन आक्रमण करना और मुस्लमान फौज का पैर उखड़ना।

अद्ध होत बर रत्ति। साहि गोरी धररुंध्यौ ॥
तोंअर बर पाहार। कित्ति सा सिंधुह संध्यौ ॥
सेत बंध बंध्यौति। सूर बंध्यौ रिन पाजं ॥
जै जै जै उच्चार। धन्नि सामंत सु लाजं ॥
सुरतान सेन भग्गा सुभर। तीन बान पुंजान गय ॥
गज घंट न घंट न मत्त सुनि। सुनि जंपै बर हयति हय ॥छं०॥१६६॥

(१) ए. कृ. को. हारिय। (२) ए. कृ. को.-मर।

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना।

दोत होत मध्यान। पीप नें पन मन मंड्यौ ॥
प्रबल पानि परचंड। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
सेत बंधि ज्यौं राम। चंद सुर भान ह्वर सधि ॥
यों लिन्नों परिहार। बालि दस कंध कंध मधि ॥
रन छंडि छंडि धर मच्छि हुथ। लाजवंत के फिरि भरिय ॥
जय जय सु जंपै मुष धर अमर। सु कविचंद कवितह धरिय ॥
छं० ॥ १६७ ॥

प्रसंगराय खींची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ पऱ्यौ राव तिन वेर खीची प्रसंगं। जिनें षंडियं षित्तषल षग्ग अंगं॥
पऱ्यौ राव पज्जून पुचंति राजं। गयं सुर्ग लोगं करे देव गाजं॥
छं० ॥ १६८ ॥

धुक्यौ धार धक्कै अजमेर राई। दुअं सेन जंपी मुषं कित्ति चाई॥
बधं जामदेवं बधों बीरभानं। लरी अच्छरी मझ्झ बीरं बरानं॥
छं० ॥ १६९ ॥

पऱ्यौ घाइ षेतं अतत्ताइ तातं। मनो देषियै भूमि कंदर्प गातं॥
पऱ्यौ सेन हुज्जाब गोरीस बंधं। हयं अट्ठ भग्गं सु उठ्ठे कमंधं॥
छं० ॥ १७० ॥

परे ताहि दीनै परे साहि भारे। दिषे थान थानं मिछं प्रात तारे॥
छं० ॥ १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना।

दूहा ॥ इन परंत सुरतान गहि। ग्रह निग्रह घट बीर ॥
तिन जस जंपत का कबी। जिन करि जज्जर ग्रीर ॥छं०॥१७२॥

कवित्त ॥ जज्जर पंजर प्रान। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
बिन सेवा बिन दान। पान षग्गह षल संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पत्तौ राज। लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
डोला तेरह तीस। मद्धि साहाब सुभत्तिय ॥
ग्रह गयौ लियैं सुरतान सँग। जै जै जै जस लद्दयौ ॥
जयचंद कनाइत चिंति जिय। मान प्रसंसन सिद्दयौ ॥छं०॥१७३॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन।

कवित्त ॥ मान भंजि सुरतान। मान भंज्यौ सुरतानं ॥
उन उप्पर नन कियौ। हुतौ बर बैर निदानं ॥
पंग लज्ज उब्बरै। सुनौ मंची अधिकारिय ॥
करिय षेत चहुआन। इदं पहु पंथह वारिय ॥
मुह मुच्छ सुचछ सोमेस सुअ। भुअ समान संभरि धनिय ॥
पद्धरै दीह जस चढ्ढई। धर पद्धर करि अप्पनिय ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ धन्य राज अवसान मन। रन संध्यौ सुरतान ॥
लच्छि लई चतुरंग जिति। बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ छच मुजीक निसान। जीति लीने सुरतानं ॥
गो धर ढिल्लिय ईस। बज्जि निरघात निसानं ॥
दिसा दिसा जय कित्ति। जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
बाल वृद्ध भर जुवन। जंग जंपै धनि लाजं ॥
सा भ्रम्म धारि छची न्रपति। दिपति दीप भुअलोक पति ॥
पुज्जै न कोइ सुरतान कौं। मुष अयन्न पारथ्थ गति ॥छं०॥१७६॥

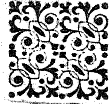
दूहा ॥ हालाहल वित्ते सुभर। कोलाहल अरि गान ॥
सुबर राज प्रथिराज कौं। तपय बीर बहु जान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन।

(१) ए- कृ. को.-अपार।

कवित्त ॥ छंडिदियौ सुरतान । सुजस पहु पीप मंडि सिर ॥
जित्ति जंग राजान । इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
भूमिय मिलि इक आइ । इक्क बंधे बस किज्जिय ॥
इक्क अप्प पहराइ । मान भजि रूमन दिज्जय ॥
आवै 'न पार लच्छी सहज । षट्ट बरन सुष्षह रुगन ॥
चहुआन सूर संभरि धनी । तपै तेज सोमह सुअन ॥छं०॥१७८॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके मोरव्यूह पीपा पातिसाह ग्रहनं नाम एकतीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३१॥



अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(बत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ।

दूहा ॥ [1]कितक दिवस वित्ते न्रप्रति । सारंगीपुर साज ॥
धर मालव मंड्यौ न्रपति । आषेटक प्रथिराज ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ।

कवित्त ॥ चौअग्गानी सट्ठि । सूर सामंत [2]सु सथ्थं ॥
मालव धर प्रथिराज । सज्जि आषेटक तथ्थं ॥
बर उज्जेनी राव । जीति पांवार सु भीमं ॥
बल संमर जो गट्ठ । गाहि चहुआंन [3]जु सीमं ॥
सगपन सु जीति संभरि धनिय । ग्रहन जोग सम बर न्रपति ॥
संभाग समर सुनयौ समर । समर बीर मंडन दिपति ॥ छं० ॥ २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ।

दूहा ॥ सुबर बीर चिंतै न्रपति । बर बरनौं दुति काज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी । बरन तकै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३ ॥

इन्द्रावती की छबि वर्णन ।

कवित्त ॥ इंद्र संदरी नाम । बीय इंद्रावति सोहै ॥
बर समुंद पांवार । धरिग अति सम संग लोभै ॥
मनमथ मथन नरिंद । हाइ करि भाइह गाढ़ी ॥
[4]रूप तरंग झंकुरित । तुंग दोऊ करि काढ़ी ॥

---

(१) कृ. ए. को.-कितेक, केतेत, फितेक ।　(२) मो.-जु ।
(३) मो.-सुसीमं ।　(४) ए. कृ. को.-रुअन अंग, अँग ।

ज्यों छित्ति काम जंप्यौ परित। अति सुदेह न्निम्मल झलकि।
संकुच सु काम कर [1]कलिय तिहि। [2]रिपु सुदेखि आयौ ललकि॥
छं०॥ ४॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना।

दूहा॥ श्रीफल दुजबर हथ्थ करि। दैन गयौ चहुआन॥
दिन पंचमि बर भोम दिन। लगन [3]करै परमान॥ छं०॥ ५॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना।

दुज पुच्छै आतुर न्नपति। किहि वय किहि उनहार॥
किहि लच्छिनमति कौन [4]विधि। [5]कहि कहि सुमति विचार॥छं०॥६॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना।

कुंडलिया॥ बय लच्छन अरु रूप गुन। कहत न बनै सु बाम॥
सारद मुष उच्चारती। साषि भरै जो कांम॥
साषि भरै जो काम। कहै सारद मुष अप्पन॥
साषि चित्त नन [6]धरै। कहिय दिष्षियं सु अप्पन॥
बलि सरूप सज्जी मदन। सुभ सागर गुर सेव॥
सो सज्जिय भज्जिय दिवह। तकि प्रथिराज बलेव॥ छं०॥ ७॥

ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना।

दूहा॥ बाल सुनत प्रथिराज गुन। [7]ढुरि ढुरि श्रवन सु हित्त॥
जिम जिम दुजबर उच्चरत। तन मन तिम तिम रत्त॥ छं०॥ ८॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन।

---

(१) मो.-कर लीय। (२) ए. कृ. को.-फेरिपुं देख।
(३) मो.-करइ। (४) ए.-बुध।
(५) ए. को.-किहिं किहिं। (६) ए. कृ. को.-भरै।
(७) ए. कृ. को.-दुरि दुरि।

हनूफाल ॥ सुनि प्रथम बालिय रूप । बर बाल लच्छिन [1]नूप ॥
अहि संधि सैसव पाल । अजु अरक राका हाल ॥ छं० ॥ ९ ॥
सैसव सु सूर समान । वय चंद [2]चढ़न प्रमान ॥
सैसव जोवत एल । ज्यों पंथ पंथी मेल ॥ छं० ॥ १० ॥
परि भौंह भँवर प्रमान । वै बुद्धि अच्छरि आन ॥
द्रिग स्याम सेत सुभाग । सावक्क म्रग छुटि बाग ॥ छं० ॥ ११ ॥
बिय द्रिगन ओपम कोड़ । सिस भ्रंग षंजन होड़ ॥
बर बरन नासिक राज । मनि जोति दीपक लाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
गति सिषा पतँग नसाव । ओपंम दे कवि आव ॥
नासिक्क दीपन साल । झँप देत षंजन बाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
बिय बाल जोवन सेव । ज्यों दंपती हथलेव ॥
वैसंधि संधि अचिंद । ज्यौं मत्त जुरहि गुविंद ॥ छं० ॥ १४ ॥
* कहि ओपमा कविचंद । .... ॥
तुछ रोम राजि विसाल । मनों अग्गि उग्गिय बाल ॥ छं० ॥ १५ ॥
कुच तुच्छ तुच्छ समूर । मनों काम फल अंकूर ॥
वय रूप ओपम एह । मनों कामद्रप्पन देह ॥ छं० ॥ १६ ॥
वर छिन्न थक्कत तेह । जा जनक न्टप कर देह ॥
वैसंधि कविवर वंधि । ज्यों वृद्ध बाल बिबंधि ॥ छं० ॥ १७ ॥
वैसंधि संधि [3]समान । ज्यौं सूर ग्रहन प्रमान ॥
वै राह ससि गिलि सूर । चव ग्रहन मत्त करूर ॥ छं० ॥ १८ ॥
वर बाल वैसंधि एह । सिक्कार काम करेह ॥
लज कोर लज लजि छंडि । चित रंक दीन समंडि ॥ छं० १९ ॥
कहां लगि कहौं बर नाइ । तो जंम अंत सु जाइ ॥
फल हथ्थ लिय परवान । तप तूंग तो चहुआन ॥ छं० ॥ २० ॥

उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना ।

(१) ए.-रूप । (२) मो.-चढ़त ।

* यह पंक्ति मो.-प्रति के अतिरिक्त अन्य किसी प्रति में नहीं है । (३) ए. कृ. को.-प्रमान ।

कवित्त ॥ वर उज्जेनीराव। रंग बज्जे नीसानं ॥
इंद्रावति सुंदरी। बीर दीनी चहुआनं ॥
राज मंडि आषेट। समर कग्गर बर धाइय ॥
बर गुज्जरवै राव। चंपि चित्तौरै आइय ॥
उत्तरे बीर प्रव्वत गुहा। धर पद्धर मेलान किय ॥
जोगिंदराव जग हथ्थ बर। गढ़ उत्तरि [1]किरपान लिय ॥छं० ॥२१॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना।

दूहा ॥ छंडि बीर आषेट बर। गो मेलान नरिंद ॥
छंडि सूर सिंगार रस। मंडि बीर बर नंद ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना।

कवित्त ॥ मतो मंडि चहुआन। सबै सामंत बुलाइय ॥
दै षंडो पज्जून। बीर उज्जेन चलाइय ॥
सथ्थ कन्ह चहुआन। सथ्थ बड़गुज्जर रामं ॥
सथ्थ चंदपुंडीर। सथ्थ दीनौं नृप हामं ॥
आहुत अत्तताई सुबर। रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
मुक्कल्यौ गोर निद्दुर सुबर। मुक्कलि जैसिंघ परषलिय ॥छं० ॥२३॥

दूहा ॥ मुक्कलयौ कविचंद सथ। [2]न्रिप मुक्कलि गुरराम ॥
मुक्कलयौ कैमास सँग। दाहिम्मौं बर ताम ॥ छं० ॥ २४ ॥
सब सामंत सुसंग लै। लै चल्यौ चहुआन ॥
बरनि चिन्ह उर सल्लई। कहिग कबिय [3]बष्षान ॥ छं० ॥ २५ ॥

ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन।

चोटक ॥ प्रथिराज चल्यौ सिर छत्र उपं। ससि कोटि रबी ज्यों नछित्र तपं ॥
गजराज विराजत पंति घनं। घनघोरि घटा जिम गर्जि [4]गनं ॥
छं० ॥ २६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-करपान। (२) ए. कृ. को.-नृप।
(३) ए. बखान। (४) ए. कृ. को.-मनं।

हय पष्षर बष्षर तेज [४]तुनं। किननंकहि [५]धक्कहि सेस धुनं॥
सहनाइ नफेरिय भेरि नदं। घुरबान निसानन मेघ [६]भदं॥छं०॥२७॥
घन टोप सु ओप अनेक सरं। मनु भद्दव बीज उपंम धरं॥
*किरवान कमानन तान करं। हयनारि हवाइ कुहक्क वरं॥
छं०॥२८॥
सुजयं प्रथिराज सु सारथयं। दुतियं कहि भारथ पारथ यं॥
छं०॥२९॥

(४) मो.-नुमं। (५) ए.-धर्काहि। (६) मो.-नदं।

* यह पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है।

मोतीदाम॥ चढ्यौ न्रप बीर अनंदिय चंद। सु मुत्तियदाम पयंपय छंद॥
दए न्रप कग्गद भृत्त सु द्रष्ट। मिले सब आइस जंग न रिष्ट॥
छं०॥३०॥
उड़ी षुर धूरि अछादिय भान। दिसा धरि अठ्ठ न सुझ्झय [१]सान॥
बजे घन सद्द निसान सुहद्द। लजे तिन सद्द समुद्दय रद्द॥
छं०॥३१॥
[२]मुदे सतपत्र कमोदन षेरु। करे चतुरंगय संकिय मेरु॥
द्रिगपाल पयाल पुरं सरसी। तिनकै बर कन्ह परे धुरसी॥
छं०॥३२॥
जु अनंदिय चंद निसाचर यों। किल कंपहि तुंड जसं बर यों॥
बिफुरै बर ह्वर चिहूं दिसि यों। डरपै सुर पत्ति उरं बसि यों॥
छं०॥३३॥
फन फूंक फनंपति को बिसरी। धरकें पय बज्जि षुरं दुसरी॥
जु रहे रुकि चंपि धजा न धजं। तिनसों बर [३]पांति षगं उरझं॥
छं०॥३४॥
बर बज्जि तंदूर तहां तबलं। निसु नंन नवीनय बंस बलं॥
जु धरैं बर गौर [४]उछंग हरं। सु कहै बर कंतिन कंपि डरं॥
छं०॥३५॥

(१) मो.-भान। (२) ए. कृ. को.-सुदे। (३) ए. कृ. को.-पंषियते।
(४) मो.-उबग्ग।

जु बजावत [1]डौंरुत्र डक्क सुरं। रन नंकहि जोग जुगाधि हरं॥
सजियं चतुरंग [2]प्रथीपतियं। दुतियं कथि भारथ पारथयं॥
छं०॥ ३६॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना।

दूहा॥ सजी सेन प्रथिराज बर। बीर बरन चहुआन॥
बरद सौर संभय मिल्यौ। चित्रंगी परधान॥ छं०॥ ३७॥
उत रावर सम्हौ मिल्यौ। चित्रंगी परधान॥
कहौ समर रावल कहां। पुच्छि कुसल चहुआंन॥ छं०॥ ३८॥
कुंडलिया॥ मिलत राज प्रथिराज बर। समर कुसल पुच्छि तीर॥
कहां सेन चालुक्क कौ। कहां समरंगी बीर॥
कहां समरंगी बीर। दियौ उत्तर परधानं॥
करहेरा चित्रंग। राज आहुट्ठ प्रमानं॥
गुज्जरवै गुरि[2]जंम। हक्क उत्तर पद्धर चलि॥
गढ़ इत्तें दस कोस। समर उभ्भो समरं मिलि॥ छं०॥ ३९॥

प्रधान का उत्तर देना।

कवित्त॥ कहि चित्रंगिय मंत्रि। चंपि आयौ चालुक्कह॥
तुम नन दीनौ भेद। आइ [3]मंडोवर चुक्कह॥
चित्रंगी चतुरंग। आइ अड्डो करहेरां॥
जुड्ड रुड्ड चालुक्क। हुए कोऊ दिन भेरां॥
हम दैन षबर तुम मुक्कलिय। कहौं कही मुष मुष्ष रुष॥
प्रथिराज राज अग्गैं विवरि। कही वत्त परधान मुष॥ छं०॥ ४०॥

पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा।

(१) मो.-घोरे। (२) ए. कृ. को.-मंडहि बर।
(३) मो.-प्राति पतियां। (४) ए. कृ. को.-जंग।

न्वप बुझ्झै चालुक्क । सेन कित्तक परमानं ॥
आइ ग्रह्यौ चिचंग । निरत दीनी नन आनं ॥
सूर सुबर आहुत्त । रीति रष्षी विधि जानं ॥
दून अग्गै चालुक्क । वेर कित्ती भग्गानं ॥
जोगिंद राव जीयन बलिय । कलिय काल छप्पन बिरद ॥
समरंग बीर सम सिंघ बल । चंपि लैन चालुक दुरद ॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज का आगे बढ़ना ।

चौपाई ॥ करि अग्गे लीनो परधानं । आतुर हीं चल्यौ चहुआनं ॥
दै गढ़ दच्छिन तच्छिन आनं । समर सजन संमुह उठि धानं ॥छं०॥४२॥

रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ पावस रन प्रव्वाह । अभ्भ छायौ छिति छाइय ॥
छिची छित्ति प्रमान । अभ्भ बदरं उठि झांइय ॥
आलस [1]नींदय षीझ । सत्त राजस गहि तामस ॥
धर दुह रन बुट्ठनह । करै उद्दिम रन हामस ॥
स्र्ंगार रंभ ग्रेहं बसह । औ कुलटा सुकबीय हुव ॥
कारन्न कित्ति औ काल मिसि । द्रवै इंद्र सूरह सुलव ॥छं०॥४३ ॥

चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन ।

ज्यौं गुनाव गारडू । सेन चालुक मिसि साही ॥
विषम जोर फुंकयौ । सु फन ब्रह्मंडन वाही ॥
जीभ षग्ग जझ्झारि । सेन सज्जे चतुरंगी ॥
बान मंच मंने न । रसन कुंनन आवग्गी ॥
मन धीर बीर तामस तमसि । निधि चल्ले मन मध्य दिसि ॥
भोरा भुवंग भंजन भिरन । पुब्ब दई चिंतह सु बसि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन ।

यह संभरि चहुआन । बीर पारधि षरि आइय ॥

(१) मो.-नीदरुषीज ।

दुहुं निसान बजि समुह। भूमि पुर कंपि हलाइय॥
बीर सिंघ आहुट्ठ। बीर चालुक मुष साहिय॥
पुच्छ मग्ग चहुआन। दुहुन बर बीर समाहिय॥
उत्तरिय मनों सामुद्द तहि। उदित दीह मंगल अरक॥
जोगिंद जेम जोगिंद कसि। अष्ट कुली वंछै मुरक॥ छं०॥ ४५॥

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना।

दूहा॥ चालुक्कां चहुआन दल। भई सनाह सनाह॥
दोउ सेन कविचंद कहि। बरनि बीर गुन चाह॥ छं०॥ ४६॥

दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना।

मोतिदाम॥ सजी बर सेन सु चालुकराइ। परें बर बीर निसानन घाइ॥
भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क। मनों मरु पुत्त हकारहि हक्क॥
छं०॥ ४७॥

अछादि अवन्न न सुझ्झत भक्ष। करें किधों सोर कपी बर गल्ह॥
गहब्बर बैंन उचारत श्रोन। दुहै जुधकार प्रकारय द्रोन॥
छं०॥ ४८॥

धरं गज आगम नीम अउब्ब। छुटे बर पाइक फूलय रुब्ब॥
सुसील अफूल बन्यो हयवान। विचैं गुथि मोति कुहक्क [1]अचान॥
छं०॥ ४९॥

दुहूं बिच नग्ग मगं नग पंति। परी तहां पट्टनराइ मपंत॥
जु भाल अंकूर सु सुंदप बिंद। धरी हयनारि छतीसय चंद॥
छं०॥ ५०॥

कसुंभिल डोरि सु पच्छिम संधि। तिठौहर बंध नरिंद सु बंध॥
सरं मधि ब्रह्म सु चालुकराव। दिसं बुलि भट्टिय दक्षि न काव॥
छं०॥ ५१॥

दिसि वाम जवाहर मेर अराव। रच्यौ अरगंध नरिंदन चाव॥
रंग स्याम सनेत कसे घन रूप। तिन में बर छीन सुरंग अनूप॥
छं०॥ ५२॥

(१) मो.-अवान।

पसरी वर क्रन्न सनाह न तीर। अचवै उत कालिय के रुचि पीर॥
सजी चतुरंगन बग्ग बनाइ। चढ़े अरि के उर चालुक राइ॥
छं० ॥ ५३॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना।

दूहा॥ चालुक्कां चित्रंगपति। मिले दिष्टि दुअ दौरि॥
मनों पुब्ब पच्छिमह तैं। उड़ि डंबर इल सौर॥ छं० ॥ ५४॥
[1]इत चंप्यौ चित्रंगपति। उत चुहान प्रथिराव॥
आइ राज उप्पर करन। बज्जि निसानन घाव॥ छं० ॥ ५५॥

कुंडलिया॥ ढाल ढलकि दुअ सेन बर। गज पंती हलि जुथ्थ॥
मनों मल्ल आल्हद दोउ। तारी दै दै हथ्थ॥
तारी दै दै हथ्थ। राम अवनी अन पिष्षे॥
दुहुन दिष्ट अंकुरिय। पाज बंधन बल दिष्षे॥
चंपि सेन चालुक्क। बीर भ्रम सों बर मिल्ले॥
चाहुआन [2]बर सेन। ढुरी पच्छिम दिसि ढिल्ले॥ छं० ॥ ५६॥

पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज व्यूहरचना रचना।

कवित्त॥ [3]सब सामंत रु समर। बीर दच्छिन दिसि हंडिय॥
चाहुआन हुसेन। गज्ज व्यूहं रचि गड्डिय॥
एक दंत हुसेन।[?]दंत दच्छिनह ततारी॥
सुंड गरुअ गोयंद। राज कुंभस्थल भारी॥
दिसि वाम सवै आकार गज। महन सीह मोरी सुवर॥
बहुनय अंग आहुट्ठपति। महन रंभ मचौ सुभर॥ छं० ॥ ५७॥

युद्ध वर्णन।

पद्धरी॥ घन घाइ घाइ अघघाइ स्हर। सिंधु औ राग बज्जै करूर॥
हुंकार हक्क जोगिनिय डक्क। मुह मार मार [4]बज्जै बबक्क॥छं०॥५८॥

(१) मो.-इन। (२) मो.-हुस्सेन। (३) को.-तब। (४) मो.-वुह्नै।

नंचयौ ईस गौ दरिद्द सीस। पष्पर उपट्टि घुंटै घुरीस ॥
नाचंत नद्द नारद्द तुंब। अच्छरी अच्छनद जानि लुंब ॥ छं० ॥ ५९ ॥

गिद्धिनी सिद्ध वेताल फाल। षेचर षपाल कूदै कराल ॥
श्रोनित्त जानि सरिता प्रवाह। कड़कंत रुंड मुंडह सु वाह ॥
छं० ॥ ६० ॥

चमकंत दंत मध्यै क्रपान। मानों कि ऊक लग्यौ गिरान ॥
पति चित्रकोट चहुआन सेन। चालुक्क चूर किन्नौ सुरेन ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना।

दूहा ॥ चालुक्कां परि सूर रन। सहस एक सुर सत्त ॥
चूक चिंत चूकौ चितन। स्रै अचिज्ज विधि बत्त ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पंच पहर वित्यौ समर। दिन अथवंत प्रमान ॥
उभै सत्त रावर [1]समर। प्रथीराज सत आन ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दूसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना।

निस बर घटीति [1]सत्तरहि। सेष जाम पल तीन ॥
भिरि भोरा रावर समर। रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ६४ ॥

भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना।

नदि उत्तरि चाल्लुक्क बर। चिंपि सुभर प्रथिराज ॥
सुभर भीम उप्पर परे। मनो कुलींगन बाज ॥ छं० ॥ ६५ ॥

घमासान युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ परे धाइ चहुआन चालुक्क मुष्षं। मनों मोष मद मत्त जुट्टे कुरष्षं।
बजे कुंत कुंतं समं सेल साही। परी सार टोपं बजी तं चघाई ॥
छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए. कृ. को.- भर।

झरै सार अग्गी दझै टोप दझ्झं । मनों तं चनेतं प्रलै अग्गि सज्जं॥
फटै गज्ज सीसं सिरं भेदि लोही । धसी भारती कासमीरंति सोही ॥
छं० ॥ ६७ ॥

दिए नागमुष्षं गजे तं तवानं । ठनक्कंत घंटं फटै पीतवानं ॥
बजे बज्र घाई उकत्तीति चिन्हं । बकै जानि भट्टं प्रसंस्ती इन्हं ॥
छं० ॥ ६८ ॥

गहै दंत सूरं चढ़ै कुंभ तंती । फिरै जोगिनी जोग उच्चारवंती ॥
लगी हथ्थ गोरी गई अंग भेदी । मनों राह सूरं बँटे माहि छेदी॥
छं० ॥ ६९ ॥

रुंधी धार मंती सुमंती उछारै । उतक्कंठ भेली जु रंभा विचारै ॥
परैं घुम्मि सूरं महा रोस भीनं । मनों वारुनी मद्द प्रथमं सु पीनं॥
छं० ॥ ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना ।

दूहा ॥ औसरि भर पिच्छें परे । समर तिरच्छौ आइ ॥
मानहुं षल हुत्तसनी । भई बीभछ निधाइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥

युद्ध लीला कथन ।

त्रिभंगी ॥ तिय त्रिय अरि संतं, बहु वलवंतं, ग्यारह जंतं, अति रंगी ।
त्रिभंगी छंदं, कहि कविचंदं, पढ़त फनिदं, वर रंगी ॥
त्रिय हुअ नय नालं, बज रिन तालं, असिवर झालं, रन रंगी ।
सामत भर सूरं, दिठ्ठ करूरं, मिलि [1]अरिपूरं, अनभंगी ॥छं०॥७२ ॥
मनु भान पयानं, चढ़ि वर वानं, मिलि बथ्थानं, असिझारं ।
ओडन कर डारं, वेन करारं, तामस भारं, तन तारं ॥
जुट जुट्टिय जुद्धं, जोवति इद्धं, अरिनि अरुद्धं, अरि बक्कं ।
उर धरि चालुक्कं, सूर जहक्कं, [2]मुर आतक्कं, धक धक्कं ॥छं०॥७३॥
दल बल पर ओटं, सीस विघोटं, रन रस वोटं, परि उठ्ठं ।
दंतं उष्षारं, कंधय मारं, अरि उत्तारं, भ्रत छुट्टं ॥

(१) मो.-आसि । (२) ए. कृ. को--मुर ।

जोगिन किलकारी, हसिहिं ततारी,दै दै भारी, हिलकारी।
अरि तन तन कालं, परि वेहालं, चालुक झालं, बर सारी ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सामंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना।

कवित्त ॥ वीर बीर आरब्ब। चढ़िय बीरं तन हक्के ॥
चावद्दिसि विद्दुरे। मोह माया न कसक्के ॥
एक दिनां आहुरे। आदि जुद्धं षिति लग्गे ॥
कै छुट्टे मद मोष। जानि बीरन द्रग जग्गे ॥
घन घाइनि घाइ आघाइ घन। मति सुभाइ बिम्भाइ परि ॥
कविचंद बीर इम उच्चरै। प्रथम जुद्ध आदीत टरि ॥ छं० ॥ ७५ ॥

भोलाराय के १०सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन।

दूहा ॥ संझ सपट्टिय बीर भर। परिग सुभर दस राइ ॥
तिय षवास परिगह न्रपति। सिर घुम्मै घट घाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ पऱ्यौ समर षावास। जित्यौ जिन सम चालुक्किय ॥
परि भट्टी महनंग। छच नष्यौ अरि सक्किय ॥
पऱ्यौ गौर केहरी। रेह अजमेरी लग्गिय ॥
परिग बीर पामार। धार धारह तन भग्गिय ॥
रघुवंस पंच पंचौ मिले। बर पंचानन और कवि ॥
चिचंग राव रावर लरत। टरय दीह अथवंत रबि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैन खां का चालुक्य पर आक्रमण करना।

घरी अद्ध दिन रह्यौ। चलिग हसेन षान भ्रम ॥
चालुक्कां दिसि चल्यौ। मोह छंड्यौ जु क्रमंक्रम ॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन न मोऱ्यौ तन तोऱ्यौ ॥
अस्त बस्त वज्जी कपाट। दधीच ज्यों जोऱ्यौ ॥

बर रंभ बरन उतकंठती। ह्वर ह्वर उत कंठ मिलि॥
ढिल्लीव ढोल जीरन जुगं। गल्ह बीर जुग जुग्ग चलि ॥छं०॥७८॥

एक दिन राति और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना।

दूहा॥ निसि दिन घटिय तिसत्त बर। दल चहुआनन चीन्ह॥
भिरि भोरा रावर रिनह। रत्तिवाह सो दीन॥ छं०॥ ७९॥

गुरजर राय भीम देव का भागना।

भिरि भग्गौ सुत भुअंग कौ। गरुड़ समर गुर राज॥
फिरि पच्छौ पुंछौ पटकि। बिन सु गरब तजि लाज॥ छं०॥ ८०॥

कवित्त॥ षेत जीति चिचंग। हथ्थ चढ्यौ चहुआनं॥
के भोरी भर सुभर। लीन अप्पह पर आनं॥
केक किए परलोक। मुक्ति लभ्भौ [1]जुग जानं॥
पंच तत्त मिलि पंच। सार धारह लग्गानं॥
चहुआन समर इकतन्नि मह। तहां सेन उत्तरि सुभर॥
चालुक्क भीम पट्टन गयौ। करी चंद कित्तिय अमर ॥छं०॥८१॥

कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई।

चौपाई॥ अमर कित्ति कविचंद सु अष्षी। जा लगि ससि ह्वरज नभ सष्षी॥
इह काया माया जिन रष्षी। अंत काल सोई जम भष्षी ॥छं०॥८२॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्वल भेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना।

दूहा॥ निसि सुपनंतर राज पै। कित्ति आइ कर जोर॥
नौतन अति उज्जल तनह। नीद न्रपति मन चोर॥ छं०॥ ८३॥

कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूं।

जपि जगाइ सोमेस सुअ। मदन भीम चहुआन॥
देत रुप छची प्रकृति। दरसन [2]तवही पान॥ छं०॥ ८४॥

(१) ए.-गुर। (२) ए. कृ. को.-छत्री।

कोटि लछन सुंदरि सहज। भय सुंदरि तिन प्रेम ॥
सूर सुभर डरपै रनह। तौ सुधीर कहि केम ॥ छं० ॥ ८५ ॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन।

कवित्त ॥ तो कित्ती चहुआन। निदरि संसारह चल्लौं ॥
तीन लोक में फिरौं। देव मानौ उर सल्लौं ॥
थान थान द्रिगपाल। फिरिव चावद्दिसि रुंध्यो ॥
तन विसाल उज्जल सुरंग। दुज्जन सिर षुंदो ॥
हूं सार अडर डौंरू कहन। जोग प्रमानह उत्तरी ॥
चहुआन सुनौ सोमेस तन। भूत भविष्यत विस्तरी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ तो कित्ती चहुआन हौं। तीनौं लोक प्रसिद्ध ॥
धीरज धीरं तन धरै। द्रवै भूमि नव निद्ध ॥ छं० ॥ ८७ ॥
हौं सु देवि सुंदरि सहज। तुम गुन गुंथित देह ॥
पुव्व प्रेम अति आतुरह। लग्यौ प्रेमलह नेह ॥ छं० ॥ ८८ ॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना।

कवित्त ॥ जु कछु लिष्यौ लिलाट। सुष्ष अरु दुःष समंतह ॥
धन विद्या सुंदरी। अंग आधार अनंतह ॥
कलप कोटि टर जाहि। मिटै नन घटै प्रमानह ॥
जतन जोर जो करै। रंच नन मिटै विनानह ॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि। बुझ्झि चंद गुरराम तरु ॥
बरनी विचित्र राजन बरहि। कही सत्ति मत्ती सु अरु ॥ छं० ॥ ८९ ॥

गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी।

दूहा ॥ इह सुपनंतर चिंततह। कहि सु देव जिम कीम ॥
रत्ति वाह बर नरिंद सौं। दीनों भोरा भीम ॥ छं० ॥ ९० ॥

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ चौकी जैत पँवार । सलष नंदन रचि गड्डौ ॥
ता सत्थह चामंड । भीम भट्टी रचि ठड्डौ ॥
महन सीह बर लरन । मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ट अरि भोज । प्रात षिभ्भिझय बर सौकी ॥
हज्जार पंच अरि टारि कैं । भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जाने कि पुराने दंग में । अग्गि तिनक्का झरि परिय ॥ छं० ॥ ९१ ॥

रात का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ अत्ति अच्छी रनं, तेग कड्डी घनं । रत्ति अड्डी मनं, बीज कुड्डी घनं ॥
बीर रस्सं तनं, सार भंजे घनं । हक्क मच्ची रनं, बाह बाहं तनं ॥
छं० ॥ ९२ ॥
रुंड मुंड घनं, ईस इच्छै चुनं । षग्ग भग्गं तनं, ग्राह गंगं जनं ॥
संभ रुठ्ठी मनं, तार चौसठ्ठिनं । भूत प्रेतं तनं, भष्ष दिन्नौं घनं ॥ छं० ॥ ९३ ॥
जानि सीलं रुधी, कव्वि ओपम सुधी । मंन भारथ जलं, भेदि उप्पर चलं
छं० ॥ ९४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम ।

कवित्त ॥ दै अरि पच्छौ जैत । पऱ्यौ पांवार रूपघन ॥
पऱ्यौ किल्ह चालुक्क । संधि चालुक्क हजूरन ॥
पऱ्यौ वीर बग्गरी । भयौ अग्गर चहुआनं ॥
परि मोरी जैसिंघ । सिंघ रष्यौ षिजवानं ॥
हलमल्यौ सबै प्रथिराज दल । दलमलि दल चालुक गयौ ॥
तिय सीत अग्गि अंधार पष । चंद तुच्छ उद्दित भयौ ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों का मारा जाना ।

दूहा ॥ चालुक्का चहुआन दल । लुथ्यि स देढ़ हजार ॥
सब घाइल [1]होंड़े परिय । तब मुरि मेर पहार ॥ छं० ॥ ९६ ॥

(१) मो.-दौड़े ।

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ जंगी सिर चहुआंन। लुथ्थि [1]ढुंढन उप्पारिय ॥
षेत तिरच्छौ मुक्कि। षिझ्झिय लग्गौ अरि भारिय ॥
यों आतुर लग्गयौ। जान चालुक्क न पायौ ॥
[2]कंन्ह बैन [3]संभलियं। फेर बर भीम धसायौ ॥
उच्छरिय पानि बर मद्द भिरि। संग लोह हक्कारि दुहुं ॥
गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुं। परि पारस भारत्थ कहुं ॥ छं०॥९७॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना।

बर प्रभात बन होत। होड़ चौहान सु लग्गिय ॥
लरत सूर दिनमान। सिरह चालुक षत षग्गिय ॥
षह धरि बज्जि निसान। रत्ति आई सु भिरत्तां ॥
लोह किरन पसरंत। सूर विरुझत [4]वय गत्तां ॥
बर सूर दिष्षि काइर विडुरि। ठठुकि सूर सामंत रन ॥
दिष्षनह सूर इन काम बर। चढ़ि दिष्षन गौ सूर तन ॥ छं० ॥९८॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना।

भुजंगी ॥ भिरे सूर चालुक्क चहुआन गत्तं। लरंते परंते उठे सूर तत्तं ॥
दिवं दच्छिनं भीम भिरि चिचकोटं। परे मार ओटे चहुआन जोटं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

किए सूर कोटं न हस्सैं हलाए। अमी सेन दूनं रहे हथ्थ पाए ॥
रसं बीर आयौ चल्यौ मोह प्रानं। जिनैं छच बंसं धरौ ध्यान मानं ॥
छं० ॥ १०० ॥

भज्यौ चित्त [5]वाहं लजे सूर द्रिष्षं। तहां चंद कव्वी सु ओपम्म पिष्षं ॥
पियं चास पिष्षं सषी पास लग्गी। मनों बाल बद्दू परे [6]पाइ अग्गी ॥
छं० ॥ १०१ ॥

---

(१) ए.-ढुंढन। (२) मो.-कैन वैनै संभलिय फेरि बर नीम घसायौ।
(३) ए.-समंरिलिय। (४) ए. कृ. को.-वग रत्तां। (५) मो.-चाह। (६) को.-आइ।

असव्वार ऐसें सनाहंत कट्टं। मनों [1]बीय सौकी इषी भाग वट्टं॥
उड़ै काइरं हक्क हरि जीव चासं। उपंमा करुरं फुटै नैन पासं॥
छं० ॥ १०२॥

मनों पुत्तली कंठ [2]गढ़ि चिच लाही। करं जान लग्गी टगं टग्ग चाही॥
फुटै फेफरं पेट तारंग झुल्लै। मनौं नाभि तें कोल सारंग फुल्लै॥
छं० ॥ १०३॥

दिए नाग मुष्षीं गजं हड्ड षग्गी। षितं तेज आयौ वरं जंत लग्गी॥
उपंमा न पाई उपंमा न वंची। मनौं इंद्र हथ्थं करं राम षंची॥
छं० ॥ १०४॥

[3]करी फारि फट्टं करं ऐक कोरं। जकै सिंधु भारं जुरै जानु जोरं॥
पयं जोर ऐसै प्रतंगं चलायौ। भगंदत्त [4]छव्वी तहां सूर पायौ॥
छं० ॥ १०५॥

गिरे कंध बंधं कमंधं निनारै। उपंमा तिनं की न ओपंम चारै॥
हकै सीस नीचं धरं उंच धायौ। मनो भंगुरी रूप न्त्रपती दिषायौ॥
छं० ॥ १०६॥

समं पाज घट्टै कितं साम काजं। तिते [5]ऊपरे सूर चढ़ि कित्ति पाजं॥
बड़े सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी। म्रिगं षल्ल की भंति ज्यौं षाल ओगी॥
छं० ॥ १०७॥

दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना।

कवित्त॥ चढ़त दीह विप्पहर। परिग हज्जार पंच लुथि॥
बान बचन भरि नरिंद। झारि उच्चारि देव धपि॥
षट छह बर हज्जार। रुक्कि मंझे चहुआंनं॥
बर कट्ठन चालुक्क। मत्ति कीनी [6]परिमानं॥
सह सेन बीर आहुठि तहां। तौ पट्टनवै कट्टयौ॥
उच्चऱ्यौ बंभ भट्टी विहर। धार धार अपु चट्टयौ॥ छं०॥ १०८॥

(१) ए. कृ. को.-विंयं पियं,। (२) मो.-गहि। (३) ए. कृ. को.-गजं।
(४) ए. कृ. को.-छब्बं। (५) ए. कृ. को.-उत्तरे। (६) मो.-परिव्रानं।

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना।

तव रा निंगर राव। झुझ्झ धर रावर मंडिय॥
हक्कि सेन चहुआन। षग्ग मग्गह तन षंडिय॥
परिगह्यि सब सथ्थ। गयौ चालुक्क बजाइय॥
षभर षेह षग मिलिय। निरति प्रथिराज न पाइय॥
बीरंग बीर बज्जर बिहर। भिरत बज्जि निय विप्पहर॥
बज्जरत बीय बंभन परत। गयौ भीम तन वर कुसर॥ छं० ॥१०९॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना।

दूहा॥ तीस सहस बर तीस अग। गत चालुक रन मंडि॥
तिन में कोइ न ग्रह गयौ। सार धार तन षंडि॥ छं० ॥ ११० ॥
बाव ह्वर कोइ न भयौ। धनि चालुक्की सेन॥
सामि काज तन तुंग सौ। चिन करि जान्यौ जेन॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना।

कवित्त॥ षेत ढूंढि चहुआन। समर उप्पारि समर में॥
निठ पायौ चामंड। मिले सब मंस रुधिर में॥
है गै बर विभ्भूत। रंक लुट्टी चालुक्की॥
किन हय हथ्थिय लुट्टि। गयौ पति प्रब्बत [1]मुक्की॥
दिन अठ्ठ राज चित्तौर रहि। बहुत भगति राजन करी॥
जोगिनी न्रपति जुग्गिनि पुरह। जस बेली उर बर धरी॥छं०॥११२॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना।

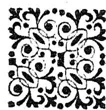
दूहा॥ ढिल्ली न्रप ढिल्ली गयौ। बजि न्रिघात सुदंद॥
जिम जिम जस ग्रह राज करि। तिम तिम [2]रचित कबिंद॥छं०॥११३॥
जस धवलौ मन उज्जलौ। न्रिब्बी पहुमि न होइ॥
भूत भविष्छति व्रित्त मन। चिचनहार न कोइ॥ छं० ॥ ११४ ॥

(१) मो.-सुक्की। (२) ए. कृ. को.-साचित।

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना ।

षंडौ सुनि पठयौ सु न्नप । बंज्जि निसानन घाइ ॥
बर इंद्रावति सुंदरी । बिय बर करि परनाइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके करहे रो रावर समरसी राजा प्रथिराज विजय नाम बत्तीसमो प्रस्तावः ॥३२॥



अथ इन्द्रावती व्याह।

(तेंतीसवां समय।)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा।

कवित्त ॥ कहै भीम सुनि भट्ट। छूर बंध्यौ सुरही [1]रित ॥
[2]दीना सों प्रति प्रीति। सामि करिहै जु सामि [3]मित ॥
[4]अम्रत रत्त विष होत। अम्रत रस रत्त उपज्जै ॥
ग्राव ग्राव सों प्रीति। सार सों सार सपज्जै ॥
[5]कट्ठ सों कट्ठ बर बंधियै। नारि नरन सों वाहियै ॥
इह काज राज कविचंद सुनि। त्यों बरनी बर चाहियै ॥ छं० ॥ १ ॥

कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया।

सुनि भीमंग पँवार। चढ़े प्रथिराज प्रपन्ने ॥
समर दिसा चालुक्क। [6]सजे चतुरंग सपत्ते ॥
धन्नि मगन तन आनि। कित्ति चहुआन सुनिज्जै ॥
साम दान अरु भेद। दंड सुंदरि ग्रह लिज्जै ॥
मो मत्त सुनौ [7]घर जाइ तौ। न्रप बर महि कलहत्त भय ॥
गुर गुरह सब्ब सामंत ए। लज्ज बंधि तुव हथ्थ [8]दिय ॥ छं० ॥ २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना।

---

(१) ए. कृ. को.-तत। (२) ए. कृ. को.-तदिनां। (३) ए. कृ. को.-मति।
(४) ए. कृ. को.-रत अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपज्जै। (५) मो.-कंठ।
(६) मो.-सुजो। (७) ए. कृ. को.-पर। (८) ए. कृ. को.-दिप।

कहै जोइ वरदाइ। मंत कविचंद सु आमन ॥
मन वासौं मन मिलत। जियत कै कंठ सामन ॥
जो वासुर मुर पंच। [1]पग्ग मंडै चहुआनं ॥
तौ भाविक जिह लेष। तिही ह्वैहै परिमानं ॥
भावी विगत्ति [2]भंजन गढ़न। दइय दुसंकह जानि गति ॥
लिषि बाल सीस दुष सुष्ष दुहु। सत्य होइ परमान मति ॥छं०॥३॥

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना।

दूहा ॥ सुनि इंद्रावति सुंदरी। धरनि सरन सिर लाइ ॥
कै धरनी फट्टै कुहर। कै पावक जरि जाइ ॥ छं० ॥ ४ ॥
हून भव न्रप सोमेस सुत्र। जुध बंधन सुरतान ॥
कै जलद्धि बूड़वि मरै। अवर न [3]वंछौं प्रान ॥ छं० ॥ ५ ॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना।

कवित्त ॥ सषी कहै सुनि बत्त। सुतौ दानव कुल कहियै ॥
अवर जाति अनेक। राइ [4]गुर परनह लहियै ॥
करै कोन परसंग। पाइ म्रगमद घनसारं ॥
कोन करै कुष्टीन। संग लहि कामवतारं ॥
तो पित्त अवर बर जो दियै। तो नन जंपै अलिय वच ॥
राचियै अप्प राचै तिनह। अनरचैं रचैं न सुच ॥ छं० ॥ ६ ॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता।

दूहा ॥ तुम दासी दासी सु मति। मो मति न्रप पुचीय ॥
बोलि विंन चुक्कै न नर। जो वर मुक्कै जीय ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते।

(१) ए. कृ. को.-मद्धि आयौ। (२) ए. कृ. को.-भंजी।
(३) ए. कृ. को. छंडौ। (४) ए. कृ. को.-गुन।

कहै भीम कविचंद [1]सुन। स्वामि काम तुम अड्ड॥
सेन सगप्पन रीत नह। तुम दानव कुल चड्ड॥ छं० ॥ ८॥

कवित्त॥ हौं सु भीम मालव नरिंद। मोहि घर बर अच्छिय॥
सवा लाष मो ग्राम। ठाम संपति वहु लच्छिय॥
विधि विधान न्रिम्मान। कौन मिट्टै इह बत्तिय॥
होनहार होइहै पुरुष। जंपै गति मत्तिय॥
तुम कहो नाम बरदाइ बर। गुरुराज बंदे चरन॥
ओछी सु बत्त कही कथन। एह सगप्पन विधि बरन॥ छं० ॥ ९॥

कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है।

दूहा॥ अहो भीम [2]सत्तह सुमति। तुम मतिमान प्रमान॥
औसर तकि कीजै [3]जुगत। औसर लहिजै दान॥ छं० ॥ १०॥

भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरबीर ही नहीं जानते।

कवित्त॥ कहै भीम पज्जून। सुनौ पामर मतिहीना॥
[4]अमत कियौ तुम मंत। बरन बरनी एग लीना॥
तुम सहाब बलि बंधि। गर्व सिर उप्पर लीना॥
गिनौं और तिल मत्त। कह्यौ न सुन्यौ तुम कीना॥
छचीन बंस छत्तीस कुल। सम समान गिनियै अवर॥
घरु जाहु राज मुक्कौ बरन। करन व्याह उछाह नर॥ छं० ॥ ११॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो।

(१) ए. कृ. को.-कहि। (२) ए. कृ. को.-सतिमात्ति।
(३) को. कृ. ए.-जुरन। (४) मो.-अमन।

जैतराव जम जैत। नैन लज्जै करि बोलै॥
अहो भीम करि नीम। बत्त पहली तुम भोलै॥
बल बलिष्ठ केहरिय। स्यार क्यों मुष वर घल्लै॥
लोक भाष बुझ्झौ न। न्योंत बैरी को मिल्लै॥
इम कज्ज लज्ज सांई धरम। क्यों कट्टय मुष बत्तरिय॥
सु विहान बरन थप्पै मरन। आज तुम्हारी रत्तरिय॥छं०॥१२॥

भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है।

दूहा॥ तव कहि भीम नरिंद सुनि। अहो सु गुर दुज राम॥
अमत मत्त मंडौ मरन। इह सु कोन ध्रम काम॥ छं० ॥ १३ ॥

गुरुराम का ऐतिहासक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना।

कवित्त॥ चिया काज सुन भीम। मिल्यौ सुग्रीव राम जब॥
[1]कहिय बत्त पय लग्गि। नाथ मो बालि हत्यौ अब॥
हरी नारि तारिका। मास षट जुद्ध सु मंड्यौ॥
अस्ति वस्थ करि सियल। म्रतक सम बर करि छंड्यौ॥
तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय। अब सहाय तुम सारयौ॥
बंधियौ सात तारह सु जिय। बलिय बान इक मारियौ॥छं०॥१४॥

भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ।

दूहा॥ तुम बंभन बंभन सु मति। पढ़ि पुस्तक कहि सुत्त॥
दो घर मंगल मंडियै। इह घर जानी वत्त॥ छं० ॥ १५ ॥
अहो चंद दंद न करहु। तुम कुल दंद सुभाव॥
जैतराव [2]मिलि राम गुरु। लै काने समझाव॥ छं० ॥ १६ ॥

कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना।

(१) ए. कृ. को.-कहा। (२) मो.-बलि।

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि दंद । चीय कज रावन षंड्यौ ॥
[1]बैरोचन न्रप नंद । मारि अप्पन भ्रम भंड्यौ ॥
कंस कन्ह सिसुपाल । कज्ज रुकमनि जुध मंड्यौ ॥
[2]ता बंधव रुकमान । बंध मुंडवि सिर छंड्यौ ॥
सुर असुर नाग नर पंषि पसु । जीव जंत त्रिय कज भिरै ॥
रे भीम सीम चहुआन की । ता बरनी को बर बरै ॥ छं० ॥ १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना ।

दूहा ॥ भीम पूछ परधान [3]भर । कहौ सु कीजै काम ॥
जुद्ध जुरैं चहुआन सौं । ज्यौं इल रष्षै नाम ॥ छं० ॥ १८ ॥

मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना ।

कवित्त ॥ इह सु नाम [4]अन्नाम । जेन नामह घर जाइय ॥
इहै नहीं घर जोग । अगनि दीपक दिष्षाइय ॥
पछ्छैं ही भज्जियै । होइ दुज्जना हसाई ॥
इंद्रावति सुंदरी । देहु चहुआन प्रथाई ॥
सुनि भीम राज तत्तौ तमकि । गई बत्त बुझ्झी सु तुम ॥
हक्कारि जैत गुरराम कवि । षग्ग व्याह न न करैं हम ॥ छं० ॥ १९ ॥

सामंतों का परस्पर विचार बांधना ।

दूहा ॥ उठि चल्ले सामंत सब । करन दंद मति ठाम ॥
जो बरनी बिन पछि फिरैं । न्रपति न मन्नै माम ॥ छं० ॥ २० ॥

रघुवंस रामपवार का वचन ।

कवित्त ॥ फिरि जानी पांवार । राम रघुबंस बिचारी ॥
जीवन जो उब्बरै । मरन केवल संचरी ॥

---

(१) ए.-वैरीचन, बैरीचन ।　　(२) मो.-के बंधव रुकमना ।
(३) ए. कृ. को.-वर ।　　(४) ए. कृ. को.-सन्नाम ।

*महंकाल बर तिथ्थ। तिथ्थ धारा उद्धारी॥
स्वामि ध्रम्म तिय तिथ्थ। मुकति संसो न बिचारी॥
पांवार सुबल मालव न्रपति। बर समुंद जिम भारयौ॥
बर नीति किति सुर वर असुर। मुगति मथन संभारयौ॥छं०॥२१॥
मतौ मंडि सब सथ्थ। मत्त को बित्त बिचारिय॥
बर पट्टन दष्षिन्न है। धेन लैहै हक्कारिय॥
बर बाहर पालिहै। स्वामि षिष्भिहै पांवारय॥
बर आतुर धाइहै। अप्प संम्हौं हक्कारिय॥
धर दहै कोस अधकोस बर। फिरि चावद्दिसि रुंधही॥
करतार हथ्थ केतिय कला। तिहिं दुज्जन फिरि बंधही॥छं०॥२२॥

चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर पट्टनपुर में खलभल पड़ना।

दूहा॥ पंच कोस मेलान करि। लिय न्रप पट्टन धेन॥
कूक कहर बज्जिय बिषम। चढ़िय भीम न्रप सेन॥ छं० ॥ २३॥
उंच क्रंन अनमिष नयन। प्रफुल्लित पुच्छ सिरेन॥
रंग गंग गौ निजरि लषि। प्रज्जलि भीम उरेन॥ छं० ॥ २४॥

चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका साम्हना करना।

कवित्त॥ औसरि [1]बसि सामंत। धेन लुट्टिय पट्टनवै॥
बर मंडल उज्जेन। धाक बज्जिय बद्दनवै॥
ग्राम ग्राम प्रज्जरहि। क्रूर मानव बर बज्जै॥
सामंतारी धाक। धार मुक्किय बिधि भज्जै॥
संभरिय बीर बाहर श्रवन। बाहर हर बाहर चढ़िय॥
चतुरंग सज्जि पांवार बर। खगन हंकि खगपति बढ़िय॥ छं०॥२५॥

* महंकाल=महाकाल "उज्जैन्याम् महाकाले" इति लिङ्गपुराणोक्त बारह जोतिर्लिंङ्गों में से एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है।

(१) मो.-सव।

भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना।

हय गय रथ चतुरंग। सज्जि साइक पाइक भर॥
आइ मिले मुषमेल। दुहुन कढ्ढिय असि बर बर॥
[1]तेग मार सिर झार। धुंम धुम्मर हर लुक्किय॥
पऱ्यौ घोर अंधियार। बिछुरि निसि भ्रम चक चक्किय॥
को गिनै अपर पर को गिनै। लोह छोह छक्कै बरन॥
सामंत सूर जैतह बलिय। कहत चंद जुग्गति लरन॥ छं०॥ २६॥

रघुवंसराय का नाका वांधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हांकना।

बर सिप्रा नदि तट्ट। धाइ सामंत जु हक्किय॥
रोकि मुष्ष रघुबंस। धेन पज्जून सु हक्किय॥
दुतिय बीर बर टिके। भीस भारथ जिम लग्गिय॥
सूर बिना प्रथिराज। धके जुरि षग्गन षग्गिय॥
मुकि धेन गंठि बंधिय मिलवि। औसर षग कढ्ढिय लरन॥
झरि सार तिनंगा तुट्टि बर। तिरदू झर लग्यौ झरन॥छं०॥२७॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन।

मोतीदाम॥ तुरंगम आउ लहू गुर ठाउ। कला [2]ससि संषि जगन्नय पाउ॥
पयं पिय छंद सु मोतियदाम। कह्यौ धर नाग सु पिंगल नाम॥
छं०॥ २८॥

मिले जुध जैतरु भीम नरिंद। मच्यौ जुध जानि वृतासुर इंद्र॥
षगें षग मग्ग परे धर मुंड। परे भर बथ्थ मरोरत झुंड॥
छं०॥ २९॥

कटकहि हड्डहि गूद करक्क। बिछुट्टकि तुट्टहि लुंब लरक्क॥
भभक्कत बक्कत घाइल छक्क। उरझ्झत अंत सु पाइन तक्क॥छं०॥३०॥

---

(१) ए. कृ. को.-"मिले लोह सामंत धुम्म धुम्मर हर लुट्टिय।
(२) मो.-सति।

करक्कस केस मनों नट भंग। नचे सब सारद नारद संग॥
रनच्चिय बेस उलथ्थ पलथ्थ। परै धर लुथ्थि उनें उन जथ्थ॥
छं० ॥ ३१ ॥

करें कर आवध दंड छतीस। तकै छल सांइय भ्रम्म मतीस॥
नचै भर षप्पर चौसठि नार। इसौ जुध रुद्ध अनुद्ध अपार॥छं०॥३२॥
गए भगि सेन सँग्राम सियार। भिदै रवि मंडल सूर सुबार॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा॥ आदि सूर पांवार बर। भीम मरन तिन जान॥
हमसि हमसि संम्हौ भिरै। षग पन मोषन पान॥ छं० ॥ ३४ ॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि।

पद्धरी॥ *अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बरि भिरत भंति दीसै करूर॥
झलमली संगि फुटि परदि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ॥
छं० ॥ ३५ ॥

बद्दल सु माहि दीसै प्रमान। निक्कस्यौ पंचमो भाग भान॥
†बर सांग फोरि सिप्पर प्रमांन। छरि महत चंद सो भासमान॥
छं० ॥ ३६ ॥

मानों कि राहु ससि ग्रहै धाइ। पैठयौ सरन बद्दलन जाइ॥
किरवान बंकि बढ्ढे बिसाल। मनुं ससिअ डोर कढ़ि चक्र लाल॥
छं० ॥ ३७ ॥

सिप्पर सुमंत करि तुट भमाइ। मानहु कि चक्र हरि धरि चलाइ॥
दुहुं सेन तीर छुट्टे समूह। मानों द्रपंति पंषिय सजूह॥छं०॥३८॥
कढ़ि इसी तेग धाइय पहार। मनुं अमं इंद्र सज्ज्यो संभारि॥
विरचै जु सूर बाहै विहथ्थ। दिषि दूर चढ्ढि मनमथ्थ रथ्थ॥
छं० ॥ ३९ ॥

भरहरै सब्ब पाइल सुभार। रिन [1]रूप देव दिसि सूर पार॥
गुरहरी भेरि वर भार सार। बज्जे सु तबल आकास तार॥
छं० ॥ ४० ॥

*छन्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो. प्रति में नहीं है।

† यह पंक्ति मो. को.-कृ. इत्यादि प्रतियों में नहीं है। (१) ए. कृ. को.-सूप राज।

झक झक उझक्क बद्दल दिषीव। ओपम्म चंद तिन कहत हीव॥
कट हित्त सूर जोधाइ मुक्कि। कढ़ंत बाल ज्यों बाल रुक्कि॥छं०॥४१॥
इह सार सुद्ध मिट्टिय डरेन। जानियै बीय वयसंधि तेन॥
परि सहस सत्त दोउ सेन बीर। रवि गयौ सिंधु तीरह सु[1]तीर॥
छं०॥ ४२॥

सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना।

कवित्त॥ संभ्क हेत बहि सार। मार [2]करि तुट्टि सनह रिझ्झ॥
सो ओपम कविचंद। भ्रंग छुट्टे कि बाल षिझ्झ॥
टोप [3]ओप उत्तरै। परै विपरीत विराजै॥
मनों सु भाजन भोम। हथ्थ जोगिनि रुध काजै॥
यों भर्‍यौ सेन सम बर सुबर। नन हार्‍यौ जित्यौ न कोइ॥
दोउ सेन बीच सरिता नदी। निस कढ्ढी बर बीर होइ॥
छं०॥ ४३॥

दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का पान-व्यूह रचकर युद्ध करना।

होत प्रात सामंत। पान व्यूहं [4]जुध रच्चिय॥
मोती भर सामंत। पान कूरंभ रा सच्चिय॥
बर हरिन्य उथ्थट्ट। पत्ति मंडी [5]गुन राजै॥
[6]लाल रुप कविचंद। मद्धि कनइक दुति साजै॥
[7]नालीव रुप लीनो बरन। राम सुबर रघुवंस भिरि॥
कोदनि सुरंग पंती करिय। बीय सहस पुंडीर परि॥ छं०॥४४॥

युद्ध वर्णन।

मालती॥ तिय पंच गुरु, सत सत्ति चामर, बीय तीय, पयो हरे॥
मालती छंद, सुचंद जंपय, नाग षग मिलि, चित हरै॥

(१) ए. कृ. को.-नीर। (२) मो.-कहि।
(३) मो.-ओट। (४) मो.-सुध। (५) ए. कृ. को.-गुर।
(६) ए. कृ. को.-लाज। (७) मों.-नालीच।

नव सूर सलि ललि, अरिन अल मिलि, लोह झिल मिल, निकरे ॥
बर सूर तल छुटि, लजन नट्टय, बीर सबदन, बर भरे ॥ छं० ॥४५॥
मिलि सार सार, पहार बजि घट, उघटि [1]नट जिम, [2]तानयौ ॥
झलमलत तेक, सकत्ति बंकिय, ओपमा कबि, मानयौ ॥
मनौं बिट्ट जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
धन सूर धार, अधार जन जिन, धार धार, जनेकियं ॥छं० ॥४६॥
चिहुं दिसा चाहं, सूर बह बह, जूट चल्लं, निद्दयं ॥
मनुं रास मंडल, गोप कन्हं, दंप दंपति, बंधियं ॥
बर अरिर सेन, विडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्जयं ॥
बर बीर धार, पंवार सेना, परे सोम, अलुझझयं ॥ छं० ॥ ४७ ॥

युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना ओर इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना।

कवित्त ॥ दिन पल्लथ्यौ पांवार। सस्त्र बाहै सस्त्रन पर ॥
चावद्दिसि सामंत। भीम बीथ्यौ सुरंग नर ॥
तन सट्ट अरि सट्ट। बंधि लीने उज्जेनी ॥
बल छुथ्यौ संग्रह्यौ। दई बर भंभर नैनी ॥
कविचंद छंडायौ बीच परि। बाल सुबर सुंदर बरी ॥
धनि सूर बीर सामंत हौ। [3]जुमर जुद्ध इत्तौ करी ॥ छं० ॥ ४८ ॥

भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों को औषधि करना।

दूहा ॥ भीम भयानक भग्रह्यौ। सरन राम कविराज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी। मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

(१) मो. ए. कृ. को.-घट। (२) मो.-सौनयौ।
(३) मो.-सु बर।

जो मति पच्छैं उप्पजै । सो मति पहिले होइ ॥
काज न विनसै अप्पनौ । दुज्जन हँसे न कोइ ॥ छं० ॥ ५० ॥
आदर करि आने सु ग्रह । भगति जुगति बहु कीन ॥
जे भर घाइल उप्परे । जतन जिवाइ सु दीन ॥ छं० ॥ ५१ ॥
षग विवाह भीमंग रुचि । बाजे बज्जन लग्गि ॥
मंगल मिलि अलि गावहीं । गौष गौष निस जग्गि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है।

भुजंगी ॥ रची वेदिका बंस सोव्रन्न सोहै । जरे हेम में कुंभ देषंत मोहै ॥
लगी वेद विप्रान सों [1]गान झांईं । रचे कुंड मंडप्प सेषं न सांई ॥
छं० ॥ ५३ ॥
हसे तर्क वित्तर्क हासं सुरासं । घसे कुंकमं लाल गुल्लाल वासं ॥
उड़ै बीर [2]गोधूरकं वास रेनं । करे भेरि भुंकार गज्जन्त गेनं ॥
छं० ॥ ५४ ॥
चवै छंद बंदी ननं पार जानं । करे दान हेमं सु विद्या विनानं ॥
भई प्रीति जेतं सुरा कव्विरानं । तिनं लेषियं कग्गदं चाहुआनं ॥
छं० ॥ ५५ ॥
दूहा ॥ लिषि कग्गद चहुआन दिसि । दिय पुची भीमानि ॥
इंद्र घरनि सम सुंदरी । कलह कुसल बर बानि ॥ छं० ॥ ५६ ॥

इन्द्रावती का शृंगार वर्णन।

नाराच ॥ कन्यौ सुन्हांन कामिनी । दिपंत मेघ दामिनी ॥
सिंगार षोडसं करे । सु हस्त दर्पनं धरे ॥ छं० ॥ ५७ ॥
वसन्न वासि वासनं । तिलक्क भाल [3]भासनं ॥
दुनैन ऐन अंजए । चलं चलंत षंजए ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) मो.-मान । (२) मो.-केदासु । (३) मो.-तासने ।

सुहंत श्रोन कुंडलं । ससी रवी कि मंडलं ॥
सु मुत्ति नास सोभई । दसन्न दुत्ति लोभई ॥ छं० ॥ ५८ ॥
अनेक जाति जालितं । धरंत पुप्फ मालितं ॥
झँकार हार नौपुरं । घमंकि घुंघरं घुरं ॥ छं० ॥ ६० ॥
विलेपि लेप चंदनं । कसी सु कंचुकी घनं ॥
सु छुद्र घंटि घंट्रिका । तमोल आप अंटिका ॥ छं० ॥ ६१ ॥
कनक्क नग्ग कंकनं । जरे जराइ अंकनं ॥
बिसाल वानि चातुरी । दिषन्न रंभ आतुरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥
अनेक दुत्ति अंग की । कहंत जीभ भंग की ॥
सहस्स रुप सारदं । सरन्न रुप नारदं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठबंधन होना ।

दूहा ॥ करि शृँगार अलि अलिन सँग । रिम झिम झुंडन मंझ ।
बसन रंग नवरँग रँगे । जानु कि फुल्लिय संझ ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चौपाई ॥ कर गहि षग्ग मग्ग चहुआनं । बरन इंद्र सुंदरि बर बानं ॥
मन गंठे गंठिय प्रिय जानं । जानकि देव विहाह विवानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन ।

दूहा ॥ सत हथ्थी हय सहस विय । साकति साजि अनूप ॥
हथलेवौ चहुआन कों । दियौ भीम वर भूप ॥ छं० ॥ ६६ ॥
नग्ग चरित चौंडोल सौ । मुर सत दासिय सथ्थ ॥
दै पहुंचाइय सुंदरी । कही बनै बर गथ्थ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा ।

मात पुत्ति परठिय सुमति । विधि विवेक विनयान ॥
पति व्रत सेवा मुष धरम । इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ॥ ६८ ॥
पति लुप्पै लुप्पै जनम । पति बंचै बंचाइ ॥
इहै सीष हम मन धरौ । ज्यों सुहाग सचवाइ ॥ छं० ॥ ६९ ॥

(१) मो.-छप्पे ।

पृथ्वीराज का वंदियों को दान देना।

बंदिन दान प्रवाह दिय। लिय सुंदरि जुध जीति ॥
दुहुं जस न्रम्मल छंद [1]गुन। पढ़न कविन इह रीति ॥ छं० ॥ ७० ॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ धनि सामंत समथ्थ। जेन न्रप बिन जुध जित्तिय ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन जस किझि विदित्तिय ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन बरनी बर संध्यौ ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन भीमँग [2]रन बंध्यौ ॥
सामंतं धन्नि जिन कित्ति बर। ढिल्ली दिस पायान कर ॥
बैसाष मास अष्टम्मि सितह। कित्ति संचरिय देस पर ॥छं०॥७१॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन।

ढिल्लिय पति सिनगार। हट्ट पट्टन की सोभा ॥
गौष गौष जारीन। दिष्षि थिय नर सुर लोभा ॥
भूंगल [3]भेरि नफेरि। नद्द नीसान म्रदंगा ॥
नाना करत संगीत। ताल सौं ताल उपंगा ॥
गाजंत नभ्भ गज्जिय गुहिर। न्रप प्रवेस सुंदरि करि ॥
सामंत जैत पयलग्गि प्रथ। प्रथक प्रथक परसंस करि ॥छं०॥७२ ॥

दहेज वर्णन।

च्यार अग्ग च्यालीस। मत्त अप्पे गजराजिय ॥
सौ तुरंग तिय अग्ग। बीस चव अप्पि सु पाजिय ॥
इक अमोल सुंदरी। सत्त तिय दासिय बिंटिय ॥
सबै सथ्थ सामंत। रहे भर करिय अमिंटिय ॥
सामंत करी प्रथिराज बिन। करै न को रबि चक्क तर ॥
सुंदरी सहित अरि जीति कै। गए बीर अष्टमि सु घर ॥छं०॥७३॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना।

---

(१) मो--गुर। (२) ए. कृ. को.-बर। (३) ए. कृ. को. फेरि न फेरि।

दूहा ॥ बर अष्टमि उज्जल पषह । तिथि अष्टमि रवि [1]भीर ॥
अष्ट कोस दिल्लीय तें । चिय मुक्किग तिन बीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना।

गय सुंदरि सम्हौ न्रपति । गवन करन चहुआन ॥
लोहानौ सम्हौ मिल्यौ । दै कग्गद [2]सुरतान ॥ छं० ॥ ७५ ॥

लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है।

कवित्त ॥ मेषग्गाही सेन । दंड पलट्यौ सु विहानं ॥
अपुठौ भर चतुरंग । सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
बर कमान षुरसान । रोहि रंगे रा गष्षर ॥
हबस हेल षंधार । सज्जि घल्ली फिर पष्षर ॥
पंजाब देस पंचौ नदी । बर मंगै मंग्गी सु बर ॥
चहुआन राह मैं [3]मग्गिली । मते मच्छ कट्टन उगर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना।

दूहा ॥ सुनिय साहि गोरी सु बर । बर भरयौ चहुआन ॥
लै सुंदरि पच्छौ फिर्‍यौ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ७७ ॥

इन्द्रावती की रहाइस।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समप्पि ॥
सकल सत्त दासी अनुप । न्रप इंद्रावति अप्पि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना।

---

(१) ए. कृ. को.-बीर। (२) ए. कृ. को.-चहुआन।
(३) मो.-निगली।

कवित्त ॥ अगर कपूरति महल। सार घनसार सु रम्मिय ॥
धूप दीप सुग्गंध। दीप दस दिसि हत [1]जम्मिय ॥
सेज सुरंगति रंग। हेम नग जरे जरानं ॥
दिए भीम भूपाल। भोग साजं सु सबानं ॥
न्रप देषि अचंभ समानि मन। मुष आतुर देषन महल ॥
आनिय सु सेज चिय अलिन मिल। अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥
छं० ॥ ७६ ॥

इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन।

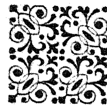
दूहा ॥ हंस गवन हंसह सरन। गनि गति मति सारद्द ॥
रूप देषि भूल्यौ न्रपति। रचिय विरंचि विहद्द ॥ छं० ॥ ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना।

कवित्त ॥ रस विलास उप्पज्यौ। सषी रस हार सुरत्तिय ॥
ठांम ठांम चढ़ि हरम। सद्द कहकह तह मत्तिय ॥
सुरत प्रथम संभोग। हंह हंहं मुष रट्टयि ॥
ना ना ना परि न्रबल। प्रीति संपति रत थट्टिय ॥
श्रृंगार हास्य करुणा सु रुद्र। बीर भयान विभाछ रस ॥
अद्भूत संत उपज्यौ सहज। सेज रमत दंपति सरस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
सुकी सरस सुक उच्चरिग। गंध्रब गति सो ग्यान ॥
इह अपुब्ब गति संभरिय। कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती व्याह सामंत विजै नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरणः ॥३३॥

(१) ए. कृ. को.-नम्मिय।



अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते।

(चौंतीसवां समय।)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना।

कवित्त ॥ किहि भेषत प्रथिराज। किहित भेषत चिहु पासं ॥
किहि भेषत दिसि विदिसि। कहौ मनया उल्हासं ॥
किहि उमाह उच्छाह। कोन ओपम द्रग राजै ॥
सो उत्तर कविचंद। देव गुरुराज विराजै ॥
सजि मान बीर चतुरंगिनी। कमल गहन सुरतान बर ॥
नव रस विलास जस रस सकल। तपै तुंग चहुआन बर ॥ छं० ॥ १ ॥

ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्टू बन में शिकार खेलने को जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना।

नीतराव षिचीय। भेद लै ग्रह चहुआन ॥
दिल्लि कौ [1]ग्रह भेद। लिष्यौ कग्गद सुरतानं ॥
बरष उभै षट मास। फेरि सु विहान पलान्यौ ॥
षट्टू बन प्रथिराज। बहुरि आषेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सथ्यहन को। बर बराह बर षिल्लइय ॥
दैवान जोध चहुआन बर। भिरि दुज्जन भर ढिल्लइय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जतुओं की गणना और षट्टू बन में शहावुद्दीन के दूत का आना।

सत चीता द्वादसति। स्वांन अच्छे सु रंग दह ॥
बीय अग्ग च्यालीस। सीह बर गोस कहंदह ॥
सत्त सत्त म्रग अच्छ। सत्त दह अग्गति [2]पाजी ॥
आषेटक प्रथिराज। बीर ओपम अति राजी ॥

(१) मो.-बर। (२) ए.-षाजी।

उप्परति राय षट्टूति बर। मिलि बसीठ गोरी सु बर॥
मंगे हुसेन साहाबदी। पंच देस बंटन सु धर॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का सामतों से सलाह लेना।

मुक्कि राज आषेट। सूर सामंत [1]बुलाइय॥
सुबर साह गोरीस। आनि उप्पर षरि आइय॥
मंगे धर पंजाब। षान हूसेन सु मग्गे॥
इष्ट भ्रत्त अवसान। दिए कग्गद लिषि अग्गे॥
संमुहे सूर सामंत बर। दै मिलान संम्है षरिय॥
चालंत जेम लग्गत दिवस। झुकि लग्यौ गोरी [2]गुरिय॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा॥ वेगि सूर सामंत सह। मिले जाइ चहुआन॥
सिंधु विहथ्थें दूत मिलि। गोरी वै सुरतान॥ छं० ॥ ५ ॥
अनंगपाल तीरथ्थ गय। बंधव रण सुरतान॥
बैर बीर ढिल्लिय [3]तनह। बर मंगै चहुआन॥ छं० ॥ ६ ॥

शहाबुद्दीन के दूत का बचन।

कवित्त॥ बर बसीठ उच्चरै। साहि जानौ पहिलौ ना॥
अप्पौ पहु हुस्सेन। साहि [4]जानौ दस गुंना॥
कंक बंक करतें। नरिंद कबहुक घर छिज्जै॥
भिर गोरी तिन भरह। रहट घट्टी घट भज्जै॥
दुप्परह छांह दौसै फिरत। भावी गति दिष्षी किनह॥
मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर। करहु एक बुद्धी सुनह॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ढीठ बसीठ तू नही जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा राज्य सुख के लिये कर्तव्य छोडना परे है।

(१) मो.-वुलाये। (२) मो.-सुरिय।
(३) मो.-तिनह। (४) मो. जादौ।

अरे ढीठ बस्सीठ । कौन हार्‍यौ को जित्यौ ॥
[1]किन वित्तग वित्तयौ । कौन बित्तग अब बित्यौ ॥
पंच तत्त पुत्तरी । पंच हथ्थन कर नच्चै ॥
अजै बिजै गुन बंधि । चित्त तामस रस रच्चै ॥
बंछै जु सुष्य फल राजगति । वह करतार सु नन करै ॥
उच्चरै किति छल ना रहै । तब लग्गै गल बल परै ॥ छं० ॥ ८ ॥

कहां गजनी है और कहां दिल्ली और कै वार मैंने उसे बंदी किया ।

दूहा ॥ कै कोसां ढिल्ली धरा । कै कोसां गज्जान ॥
षंडा सौ [2]कर बंधिया । चहुआना [3]सुरतान ॥ छं० ॥ ९ ॥
मैं रष्यौ *हुस्सेन बर । बर बंध्यौ सुरतान ॥
उट्ठाए बस्सीठ बर । बर बज्जै नीसान ॥ छं० ॥ १० ॥

दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।

मोदक ॥ दसमत्त पयो लहु, पंच गुरं । षग पन्न हरे बिष पत्त [4]बरं ॥
बर सुद्ध प्रयान हुलास छबी । कहि मोदक छंद प्रमान कबी ॥
छं० ॥ ११ ॥
जु सजी चतुरंगन दान दियं । कबि दोउअ सेन उपम्म कियं ॥
[5]सुत षंजन ज्यों बुधगत्ति पढ़ी । सति सीतल [6]बात प्रमान बढ़ी ॥
छं० ॥ १२ ॥
बर रत्त रषत्त सुरत्त बनं । तिन की छबि पावस सज्जि घनं ॥
सु बजे बर बीर निसान बजं । सु मनों घन पावस सज्जि गजं ॥
छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-बिन । (२) ए. कृ. को.-बर । (३) ए. कृ. को.-षुरसान ।
(४) मो.-हरं । (५) मो.-सत । (६) ए. कृ. को.- बाल ।

* हुसेन शब्द से यहां मीर हुसैन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य है जैसा कि समय ३१ में भी दिखाया जा चुका है ।

बजावत बीर जंजीरन सूर। कँपै सुर बीर पयालनपूर॥
उड़ि रेन चिहूंदिसि विथ्थुरियं। मुदरी द्रग अद्भुत धुंधरियं॥
छं० ॥ १४ ॥
तिह ठौर रसं अप वंधव से। तिनके सुष बाल भुअंग ग्रसे॥
बर जग्गत नेन सु मेन मुचें। तहां क्रूर नसें नर आइ नचें॥
छं० ॥ १५ ॥
श्रम सूर तिनं अभिलाष रिनं। बर ग्रब्ब बलं बर बंसु तनं॥
कल किंचित संकर सूर दियं। बर बीर म्रजादन लाज लियं॥
छं० ॥ १६ ॥
सहनाइय सिंधुअ अहरियं। तिन ठौर भयानक संचरियं॥
बर पंच सु दीह ससी चढ़ियं। बर बीर अवाज दिसं बढियं॥
छं० ॥ १७ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

गाथा॥ तं बीरं जल गंभीरं। आव यों उप्पटी सेनं॥
गोरी दिसि चहुआनं। चहुआनं गोरीयं साहि॥ छं० ॥ १८ ॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना।

कुंडलिया॥ इह सु राज आतुर [1]षरिय। सुरतानह प्रथिराज॥
भूमि भार कछु [2]बढ्ढयौ। सो उत्तारन [3]काज॥
सो उत्तारन काज। परे आतुर दोउ दीनह॥
तिन अर बस चर परे। को इन [4]छट्टै मति हीनह॥
अप्पन सुसिंह बहुरे [5]सुरहै। चक्कई चक मुक्कै नहीं॥
अप्पन सुहथ्थ भरही परै। दया न किज्जै मन इही॥ छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. कृ. को.-घरिय। (२) ए. कृ. को.-छंटयौ।
(३) मो.-पार। (४) मो.-छंडै।
(५) ए. कृ. को.-सुहर।

शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना।

दूहा ॥ चढ़त सिंध सुरतान [1]दल। दूत सपत्ते आइ॥
चर चरित्त चहुआन दल। कहै साह सों जाइ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

कवित्त॥ नहिन इंद्र प्रथिराज। सोम नंदन सिवरं दिसि॥
बर इंद्रह दीसै न। महल मंड्यौ सु दुहु निसि॥
जबहीं हम संचरे। काल तबहीं दिसि पासं॥
परत वाह लष्यंत। दिष्ट देवन सुष बासं॥
लच्छीन [2]ग्रीव बस बीर रस। दह दिसि भिरि दानव मिलिय॥
मेलान कोस परपंच को। गौरी वै संम्हौ चलिय॥ छं० ॥ २१ ॥

चहुआन सेना में सूरबीरों का उत्साह करना और कायरों का भय भीत होना।

दूहा ॥ इह अवाज चहुआन दल। बंटि सेन सु बिहान॥
काइर भर सह उच्चरै। कहि बंधन सुरतान॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त॥ हाइ हाइ कहि साहि। चरनि बरज्यौ सु बिहानं॥
झुभ्भझ रहै कै [3]जाइ। जु कछु पत्तौ चहुआनं॥
बरन मेच्छ बर हिंदु। सुनत रन पन कर हेरी॥
जय जानी अन चंय। पंच चतुरंग सु भेरी॥
भुअ बीर रूप गोरी सु बर। मुक्कि भयानक [4]भट्ट जिम॥
पलटयौ भेष देषत सयन। बर बज्जै नीसान तिम॥ छं० ॥ २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन।

चंद्रायना ॥ बर बज्जिग नीसान, दिसान पयान हुअ।
उड्डि उछंगिय रेन, सु मेरनि भान भय॥

---

(१) ए. कृ. को.-पुल। (२) ए. कृ. को.-त्रीय।
(३) मो.-नीय। (४) मो.-तट्ट।

गोरी वै भौ राह रयन हर मिग्गई।
गज असवारन हूर निव्रत्त सु लग्गई ॥ छं० ॥ २४ ॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन।

गीतामालवी ॥ गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संधयौ ॥
सब पाइ पिंगल सावरे लहु, बरन अच्छिर बंधयौ ॥
लगि गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरियं ॥
गज मद्द नद्दय छिरह भद्दय, अननि दिन दिन जोरयं ॥छं०॥२५॥
घन चव्यौ गिरि जनु चले दिस दिस, बीय बग्ग उरब्बरे ॥
तिन देषि मन गति होत पंगुर, दान छुट्टि पटे भरे ॥
गजदंत कंतिय झलकि उज्जल, पिष्षि पंतन रा इयं ॥
रवि किरनि बद्दल पसरि धावै, वाय पंकति सज्जयं ॥छं०॥२६॥
गज करत दंत सुमंत ऊरध चंद, उप्पम मंडिकै ॥
मनो बग्ग पंतिय वार, [1]उड़गन मोह दिसि सो छंडिकै ॥
धर मत्त दंतिय सेन वंधिय, इम्भ छबि [2]कवि तामयं ॥
मनों मेघ बरषत विज्ज कोंधत, अभ्भ बुढ़ि गिरि स्यामयं॥छं०॥२७॥
गति नाग गिरवर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले ॥
धर चलत गिरवर बरुन वारुन, स्याम बद्दल हलिचले ॥
[3]झटकंत सुंड दिपंत पाइक, बनि समथ पसु पुज्जवै ॥
अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति सु [4]लज्जवै ॥छं०॥२८॥
चय लष्य मीरति साह गोरिय, भार भुम्भ अलुझभवै ॥
षुरसान षान अरब्ब आरव, सज्जि सेन [5]सभ्भंझवै ॥ छं० ॥ २९ ॥

शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि अव की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय।

भ्रमरावली ॥ सजे बर साह तुरंगम तुंग। लजै कविचंद उपंम कुरंग ॥
सितं सित चोर गुरै गज गाह। तिनं उपमा बरनी नन जाइ ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. को.-उड़न। (२) ए. कृ. को.-इम्भ छबिहता, छविद्ध।
(३) मो.-झलकंत। (४) ए. पुज्जवै। (५) ए. कृ. को.-अंझवै।

जु सजे हय गोरियसाहि घरे । तिन देषि रबी रथ के विसरे ॥
दिषि सेन तिनं उपमा सु करी । सु मनों नदि पूर छिली दुसरी ॥
छं० ॥ ३१ ॥

[1]कहि चंद कविंद इदं कवितं । गुरु बंक पियं मन कै चढ़तं ॥
बजि बाज कुह्न धर सद्द पुरं । सु मनों कठतार बजंत तुरं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

गज गाह गुरं सित सोभ षगे । मनों सेत बेउरन भान लगे ॥
नभ कै तिमरं जित के समरं । मनु उट्ठि किरन्न सु पाल परं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

बिय ओपम चंद बनी बनिकैं । सु धसें मनु गंग तरंगनि कैं ॥
जग हथ्थ बनें हय के सिरयं । गलि प्रब्बत हेम द्रुमं बरयं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर पष्षर सोभ करै तनयं । मनु अर्क अरक्क विचें घनयं ॥
तिनकी हर वाय फुलिंग सजै । सु कहैं कविचंद कुरंग लजै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

बुहु रैनन आसन जी डरयं । [2]मग मत्त मनों बहरें बनयं ॥
मन मत्ति तिहां इत अत्ति पढ़ी । हय नष्षत रागन सांस कढ़ी ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बिय बाय अरक्कन बंध चढ़ै । कविचंद पवन्न बाद बढ़ै ॥
सु उड़ै नन धावत धूरि धुरं । गतिमान सुसील विसाल उरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

पय मंझत अश्वत आतुरयं । विरचे नच पातुर चातुरयं ॥
दुहु पार अपार अबद्ध घरी । मनुं गावहि इंदुन बंध धरी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

हय अप्पिय भत्तन साहि बरं । जु गहो चहुआन पयाल पुरं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

---

(१) मो.-कविचंद । (२) ए. कृ. को.-मन ।

प्रातः काल होते ही जमसोजखां और नवरोजखां का युद्ध के लिये सेना तैयार करना।

दूहा ॥ सबै सेन गोरी सु वर। चढ़िग षान जमसोज ॥
प्रात सेन चतुरंग सजि। उठ्ठि षान नवरोज ॥ छं० ॥ ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना।

चौपाई ॥ ढल[1] मिली ढाल चिहु दिसि बनाइ। [2] डम्मरी उड्डि आकास छाइ ॥
अचरनचरन गोरीस [3] साई। सेन चहुआन हथ्थे बनाई ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना।

दूहा ॥ समर सउप्पर समर किय। चावद्दिसि अरुनग्ग ॥
मुष गोरी चहुआन भिरि। ज्यों रावन लगि अग्ग ॥ छं० ॥ ४२ ॥
चौपाई ॥ समह्यौ रन चहुआन सपट्ठिय। वज्जिग वाय सुभ्भिभन [4] नदि उठ्ठिय ॥
धुंधर अन बद्दर निसि भद्दौं। सुभ्भि न अंष कन्न सुनि नद्दौं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन।

कवित्त ॥ अट्ठ अट्ठ जोगिनिय। सुक्र सम्ही सुरतानं ॥
दिसा सूल दिसि बाम। बैर कन्हा चहुआनं ॥
सिंघ बाम भैरवी। गहक बोली गोरी दिसि ॥
गुर पंचम रवि नवों। राहु ग्यारमो सुरंग ससि ॥
ईसान मध्य देवी पहकि। गहक मभभ्भ घूघू वहक ॥
आकास मद्धि गज्यौ गयन। परों बूंद बेबंग हक ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ ज्यौं जगदीसह कान दै। तकसी रन किहु कौन।
मिलि उत्तर पच्छिमहु तें। भिरन भरन दोउ दीन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

---

(१) मो.-मली। (२) मो.-मम्मरी।
(३) ए..समाई। (४) ए. कृ. को.-न दिट्ठिय।

दोनों सेनाओं में रन वाद्य वजना और उससे सूर वीर लोगों तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिंह नाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना।

भुजंगी ॥ परे धाइ धीइ दीन हीनं न जुड्डे। मुषं मार मारं तिनं मान सड्डे॥
परी आवधं होड़ बज्जै निसानं। बजे हक्क हूरं दमामें न जानं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

बढ़ै आवधं हथ्थ सामंत हूरं। घुरं वै निसानं बजै जैत [1]पूरं॥
कढ़े वे सनाहं झनक्के उनंगी। मनों आवधं हथ्थ बज्जै चिनंगी ॥
छं० ॥ ४७ ॥

परै पीलवानं मदं [2]मरक दंती। ढली ढाल ढालं ढलक्कं तुरंती ॥
फुरै हथ्थ ऊनं मुरक्की उरक्की। मुरै धार धारं सुधारं मुरक्की ॥
छं० ॥ ४८ ॥

तुटै सिप्परं कोर फूलै समंती। ग्रस्यौ राहु हूरं छुटै नभ्भ हुंती ॥
परै सार तीरं छनक्कंत बज्जै। सदं तीतरं जेम सों पच्छि गज्जै ॥
छं० ॥ ४९ ॥

वहै सीर गोरी पछै दै सभानं। भगै पच्छिनी पंति पावै न जानं ॥
तुटै सीस जुझ्झै कमंधंत नच्चैं। चलै रुद्धि धारं चिह्नं पास गच्छै॥
छं० ॥ ५० ॥

धरा भारती गंग पारथ्थ आई। मनों उपठि सो सिंध कों मिलन धाई॥
फुटी वारि धारं चली ईस सीसं। लगे धार धारं रजं रज्जकीसं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

मनो तप्त लोहो परे बूंद पानी। ढुंढी लुध्थि पावै न नहीं वहानी॥
मनं मोद लै सोस मुद्राह कीनी। .... ॥ छं० ॥ ५२॥

(१) मो.-सूरं। (२) ए. कृ. को.-सरक दंती।

उठं उद्व सीसं उपमा समूलं। मनो पावकं प्रलय धों श्रोन लल्लं ॥
दोऊ दीन धाए मनें कोपरीसं। तिनं क्रोध करि धार आकास सीसं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

परें लुथ्थि लुथ्थी अलुथ्थी जबै वैं। इसौ जुद्ध देषौ न दानव्व देवै ॥
छं० ॥ ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ चतिय पहर पर पहर। बीर घरियार ठनक्किय।
गोरी वै सो हथ्थ। चंपि चहुआन सु [1]तक्किय ॥
घरिय इक्क बनि सेन। सूर सामंत परष्षिय ॥
धरि ओड़न करि बग्ग। बैर सु विहान षरक्किय ॥
कर बार धारि सिष्पिर करह। एक होइ [2]उप्पर तरै ॥
दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह। उसरि सेन सम्हो भिरै ॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को विड़ार देना।

षिझ्झि नंष्यौ हैं नरिंद। भूमि धुज्जिय षुरतारं ॥
मनों बद्दर [3]गज्जयत। सद्द पर सद्द पहारं ॥
उड्डिय नाल चमंकि। मझ्झ धुंधर छबि लग्गिय ॥
रबि ओपम कविचंद। चंद सावस घन उग्गिय ॥
अरि सेन भग्गि दिसि विड्डरिय। परे मध्य सेना घनिय ॥
धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ। इहु अरि तें तिन वर गनिय ॥
छं० ॥ ५६ ॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम।

इत्त षान मारूफ। फिस्त उसमान षान ढहि ॥
इन दुज्जन हय नंषि। बाग आजान बाह गहि ॥

(१) मो.-वक्किय। (२) ए. कृ. को.-सिष्षर।
(३) ए. कृ. को.-गज्जंत, गरजंत।

इतै दीह अथ्थम्यौ। सूर बर सिंधु [1]सपन्नौ।
मुकत तट्ट मिलि सूर। स्याम रन अप्प अपन्नौ॥
साषला सूर [2]सारंग ढहि। जुरि जुवान पंचाइनौ॥
केहरौ गौर अजमेरपति। पऱ्यौ झुझ्झि रन भाइनौ॥ छं० ॥५७॥

सूर्य्योदय के समय की शोभा वर्णन।

दूहा॥ निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर। दिसि रत्ती धवलाइ॥
सैसव में जुव्वन कछू। तुच्छ तुच्छ दरसाइ॥ छं० ॥ ५८॥

दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना।

कवित्त ॥ जाम निसा पाछली। सेन सज्जिय दोउ बीरं॥
सामंता चहुआन। आनि गोरी कछमीरं॥
भान पयानन भयौ। करे द्रिग रत्तह चढ्ढिय॥
ता पहिले पायान। जोध रन असुरन कढ्ढिय॥
अदिहार बीर गोरी सुबर। चाहुआन दिन सुदिन घन॥
करतार हथ्थ कित्ती कला। लरन मरन तकसीर नन॥ छं० ॥५९॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ पऱ्यौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी। चपी [3]गज्ज सेना क्रमं पंच भाजी॥
तहां बाहुऱ्यो बीर बीरं नरिंदं। लग्यौ धार धारं सची कित्ति चंदं॥
छं० ॥ ६० ॥
अनी एक मेकं घरी अद्ध पच्छी। फटी सेन गोरी मुरी सो तिरच्छी॥
दोऊ दीन बाहै दोऊ हथ्थ लोहं। पऱ्यौ जानि वाराह पारद्धि रोहं॥
छं० ॥ ६१ ॥
कटे कंध बंधं कमंधं निनारे। मनों पत्त रत्तं वसंतं सुडारे॥
ननं अस्व चल्लैं चलैं हथ्थ रोजं। ननं चित्त चल्लै रवीं रथ्थ दोजं॥
छं० ॥ ६२ ॥

(१) मो.-सथत्तौ। (२) मो.-सामंत। (३) ए. कृ. को.-राज।

घनं अश्व फेरैं चलै अश्ववाहं। तिनं की उपंमा कवीचंद गाहं॥
ग्रहं पत्ति अग्गै रहै ज्यों कुलट्टं। चितं हत्ति चल्लै अगै स्वामि घट्टं॥
छं० ॥ ६३ ॥

बरं कज्ज माला ग्रहीं रंभ सथ्थं। चढ़ै धार धारं भिदै रव्वि रथ्थं॥
रही रंभ रंभी टगंटग्ग आई। मनों पुत्तली कट्ट करसी लगाई॥
छं० ॥ ६४ ॥

हहंकार बीरं हहंकार पाई। मनों पातुरं चातुरं सो दिषाई॥
दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं। मनो डिंभूरू जानि (१)हड्डूड पेलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

तजे आवधं सब्ब इक तेग साहं। करे भाग बिंबं अरी कोप वाहं॥
जबै बिड्डुरी सेन गोरी नरिंदं। दिषे थान थानं मनों प्रात चंदं॥
छं० ॥ ६६ ॥

परे षान चौसट्ठि दुहुं बाहु राई। दुहूं मुक्कती रास कवि कित्ति गाई॥
छं० ॥ ६७ ॥

शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना।

दूहा ॥ परत साहि गोरी सुधर। है गै भूमि भयान॥
रन रुंध्यौ सुरतान कों। परी बींटि चहुआन॥ छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना।

भुजंगी ॥ परी बींट गोरी मुरे मीर षानं। तबै साहि गोरी गह्यौ कोपि वानं॥
न को कंध कट्टै चाहुआन तिन्नं। पऱ्यौ धाइ पावार भर सलष दिन्नं॥
छं० ॥ ६९ ॥

लग्यौ सत्त बेनं सुलित्तान साह्यौ। तहां मीर मारुफ अग्गैं गुरायौ॥
घरी अद्ध झुझ्झयौ करी छच धारं। बहै सब्ब सामंत बिचि तीन धारं॥
छं० ॥ ७० ॥

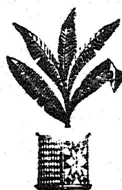
(१) ए.-हड्डडड्ड।

तुटै आवधं सब्ब अरि हथ्थ लाजी। तबै आइ सीसं [1]गुरज्जं त वाजी॥
गजं गहन प्राहार निठ्ठं ढहायौ। तबै गज्जनी साह पावार साह्यौ॥
छं० ॥ ७१ ॥

जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना।

कवित्त ॥ गहि गोरी सु विहान। हथ्थ आप्यौ चहुआनं॥
चामर छत्त रषत्त। तषत लुट्टे सुरतानं॥
गोरी वै हुस्सेन। बीर [2]तुट्टे आहुट्टिय॥
मान तुगं चहुआन। साहि मुष के बल षुट्टिय॥
मध्यान भान प्रथिराज तप। बर समूह दिन दिन [3]चढ़े॥
जस जोति मंत संभर धनिय। चंद बीज जिम बर बढ़ै॥छं०॥ ७२॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक मध्ये गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बंधन नाम चौतीसमो प्रस्ताव संपूर्णः॥ ३४॥



(१) ए. कृ. को-गुरं गुरज। (२) ए. कृ. को.-षुटे। (३) मो.-बढ़े।

अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप इस का वचन भी दे चुके हैं ।

कवित्त ॥ कितक दिवस [1]निस मात । आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सों बचन । हूं सु कंगुर द्रुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान । लेह में वाचा दष्षिय ॥
भोट भान धुर जीति । पल्ह पच्छैं फिरि अष्षिय ॥
हम्मीर भीर अग्गें करै । दल [2]भज्जै मति सत्ति करि ॥
बरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥छं०॥१॥

पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना ।

दूहा ॥ चलिय राज कंगुर दिसा । [3]दयौ [4]भाट फुरमान ॥
कै आवै हम सेव पय । कै जीत्तौं नृप भान ॥ छं० ॥ २ ॥

दूत के बचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ।

कवित्त ॥ तब सुनि भान नरिंद । सबद उब्भार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान । मोहि पुज्जै अप्पन बर ॥
[5]जो षजूआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपै ॥
[6]जो इचना अति सूर । तोइ का [7]भाठी कोपै ।

---

(१) मो.-मिस । (२) मो.-भग्गै ।
(३) मो.-दिसौ । (४) ए. कृ. को.-भोट ।
(५) ए. कृ. को.-जौ षजुआ । (६) ए, कृ. को.-जौ इचदा । (७) मो.-भाठी ।

हूं नीति जानि अन्नित न करि। तूं लोभी आतुर अतुर ॥
इनि बात सोहि आगे अवन। आई फुनि जैहै सु तुर ॥ छं० ॥३॥

दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना।

दूहा ॥ सुनि रु दूत पच्छौ फिऱ्यौ। कही राज सों बत्त ॥
तमकि तीन लीनौ न्रपति। मनों सुजोधन पथ्थ ॥ छं० ॥ ४ ॥

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना।

कवित्त ॥ चढ़िग राज प्रथिराज। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
है गै रथ चतुरंग। गोरि जंबूर नारि सर ॥
कूंच कूंच अरि भान। आइ अड्डो षग बज्यौ ॥
जनु कि मेघ में बीज। तमकि तातौ होइ रज्यौ ॥
आहत झरत झारत परत। श्रोन धार 'धर पैर चलि ॥
इत उत्त सूर देषै लरत। घरी पंच रवि रथ न हलि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना।

दूहा ॥ भिरत भान अति छोह करि। जन जन मुष मुष जानि ॥
घोर विछुट्टी दामिनी। सब चकचौंधिय आनि ॥ छं० ॥ ६ ॥

कवित्त ॥ षग वाहिय भिरि भान। अरिन अड्डर धर किन्नौ ॥
जय जय मुष उच्चार। सीस उम्मापति लिन्नौ ॥
रिझ्झरु लिंग उत मंग। अमिय विष जंग सु ढरयौ ॥
ठंडौ मंडि असंध। नहि भौ अंग जु परयौ ॥
बीभच्छ भयानक भय उमा। रुद्र रुद्र मुष हास हुअ ॥
सिंगार बीर अच्छर बरन। नव रस सुनहिं नरिंद दुअ ॥ छं० ॥ ७ ॥

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना।

दूहा ॥ स्रम भिलाष गंधर्व [1]हुअ। नारद तुम्मर गान ॥
संकर कल किंचित भयौ। चाहुआन प्रम्मान ॥ छं० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना।

कवित्त ॥ जीति समर भिरिभान। परी अरि मग्ग अरिष्टह ॥
रन मुक्कि न ग्रह [2]गइय। बरत अच्छरि नन दिट्ठह ॥
कहुं त मंस कहुं अंस। हंस कहुं सस्त्र बस्त्र कह ॥
ब्रह्मथान शिवथान। थान देषिय न जम्म जह ॥
दीयौ न अगनि रवि भेद ननि। तत्व जोति जोतिह मिल्यौ ॥
इह दीष चरित प्रथिराज ने। कवित [3]एह जुग जुग चल्यौ ॥
छं० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना।

इह परंत चहुआन। मोष लभ्यौ सु रथं रबि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। मिटे झंकुरन भान छबि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। हरह भग्गी [4]उतकंठं ॥
भग्गि मनोरथ रंभ। [5]ब्रह्म भग्गी चित गंठं ॥
झल हलत नीर काइर मुषन। प्रलय सुभर रनरत्त रह
दिन पति पतन्न सह तप्प तन। भान भान भेदंत [6]नह ॥छं० ॥१०॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का कर कहना कि मैं होनहार नहीं मेट सकती।

तब कंगुर पालहंन। चित्त चिंता उप्पन्नी ॥
सुनि भोटी भर मरन। सरन कोइ सुझ्झि न मन्नी ॥

---

(१) मो.-भय। (२) मो.-नइय
(३) मो.-एक। (४) मो.-उप कंठं। (५) ए. कृ. को.-प्रतियों में "चतुरानन भगिचित टारि रथ मग्ग मुग्गली" (सुगत्ती) अधिक पाठ है। (६) मो.-सह।

निसि अंतर करि ध्यान। मात कंगुर आराधी ॥
सो आई न्रप सुपन। कहै सुनि बात अगाधी ॥
[1]सोभति अनेक जानै न को। मो सेवा को परि लहै।
भावी विगत्ति होंं प्रकृति हौं। तो प्रधान झूठह कहै॥ छं०॥ ११॥

सवेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना।

चौपाई॥ वचनन मात कही समझाइय। निसि पल भ्रमित गमत बर आइय॥
भोटी न्रप कन्हा [2]पै आइय। कालौ कन्ह कि हंकि जगाइय॥
छं०॥ १२॥
तब कन्हा परधान बुलाइय। मात वचन की जुगति सुनाइय॥
दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय। करौ सुमति जिहि होइ भलाइय
छं०॥ १३॥

प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न करें मैं शत्रु का मान मर्दन करूंगा।

अरिल्ल॥ का चिंता सु विहानं। * कन्ह होइ जाकै परधानं॥
स्वामि बचन किन्नौ परमानं। लरि भंजो दुज्जन चहुआनं॥
छं०॥ १४॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त॥ सो सुपनंतर राज। रैन दिट्ठौ सु कह्यौ रचि॥
बर बंसी [3]ससिपाल। पलह आयौ सु सेन सचि॥
लष्ष एक असवार। लष्ष दह पाइल भारी॥
अप्प सेन उप्परें। जुगं जुग गहि उच्चारी॥
घरि अद्ध अद्ध अप सेन मुरि। पच्छि उररि दुज्जन परिय॥
चढ़ि गयौ बीर परवत गुहा। सामंता कुंडल फिरिय॥ छं०॥१५॥

(१) ए. कृ. कों. मो भति। (२) ए. कृ. को. पै।
* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम "कन्ह" था।
(३) मो.-सिसुपाल।

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना।

बर रघुबंस प्रधान। राज मंत्री विचारिय॥
बोलि बीर हम्मीर। भेद जानै धर सारिय॥
बाट घाट बन जूह। धरा पड्वर नद घाटं॥
अव्व जान न्रिमान। कोन पड्वर [1]बन बाटं॥
अगवान देहु नारेन बर। कछुक मंत जंपौ सु तुम॥
जालंधराज जंबू धनी। स्वामि ध्रम्म [2]मंडहित हम॥ छं०॥ १६॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा।

सुनि हाहुलि हम्मीर। हथ्थ जोरे न्रप अग्गै॥
सकल भूमि कौ भेद। राज जानै ए भग्गै॥
अति सु बिकट बन जूह। चढ़ै संग्राम न होई॥
अश्व पाय गज पाइ। चढ़न किहि ठौर न कोई॥
बन बिकट जूह परबत गुहा। बर बेहर बंकम बिषम॥
दारुन्न भयानक अति सरल। बर प्रस्तर नहिं जल सुषम॥
छं०॥ १७॥

कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके विकटपन का वर्णन।

भुजंगी॥ बनं जा विषंमं विषं बाज कंटं॥ घनं व्याघ्र आघातता नद्द घंटं॥
षहं जा षजूरी घनं जूथ भोरं। जिनै वास आसं लगे पंक मोरं॥
छं०॥ १८॥

घनं पामरं जाति बंधै धनंकी। गिरं देखतें गत्ति भाजै मनंकी॥
झरै झरनि झोरं सु आघात सोरं। [3]जितं सद्दया सद्द ता अंग मोरं॥
छं०॥ १९॥

---

(१) मो.-बर। (२) मो.-मंडाहि न हम। (३) मो.-जिनें।

हयं तज्जि राजं चलै हथ्थ डोरं। इकं इक्क पच्छै बिपं जन्न जोरं॥
बजै सद्द सद्दं परछंद उट्ठै। सुनै क्रन्न सोरं सु धीरज्ज छुट्टै॥
छं० ॥ २० ॥

इकं होइ राजं पथं सत्त [1]रुद्धै। दियै हथ्थ तारी तिनं कोन [2]बद्धै॥
तबै मुक्कले राज नारेन बीरं। ननं षग्ग मग्गं सधै इक्क तीरं॥
छं० ॥ २१ ॥

न्रपं काम नाही [3]प्रधानं प्रवानं। दोऊ सेन रघुबंस अरिसेन भानं॥
छं० ॥ २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां के सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ मानि मंत चहुआन कौ। मुकलि दीय दोइ बीर॥
ताजी तुंग समप्पियै। [4]षां हुसेन दिय भीर॥ छं० ॥ २३ ॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ तब लगि पान सु पान। हथ्थ नारेन मंडिलिय॥
नमि चरननि कर बाहि। रोस आरोहि अंषि विय॥
ताजी तुंग सु अथ्थि। जेन रुक्के बर बिय करि॥
नीतिराव कुटवार। संग दीनौ नरिंद बरि॥
बारंग बीर बज्जर बहिर। निधि निसान बज्जे सुभर॥
नेपुरह अप्प बरनी बरा। जस मुकट्ट प्रथिराज बर॥ छं० ॥ २४ ॥

कंगुर द्रुग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन।

बर भरियं बर अप्प। लियौ फुरमान नरिंदं॥
लाज राज विंटयौ। जानि पारस बिच चंदं॥
स्रीय काज स्रीराम। सु छल हनमंतह तैसे॥

(१) ए. कृ. को.-रुंधै। (२) ए. कृ. को.-बंधै।
(३) ए. कृ. को-प्रथानं। (४) ए.-खान।

स्वामि काज सामंत। बियौ धर मझ्झव जैसे ॥
जस तिलक हथ्थ चहुआन कौ। दुज्जन दल जित्तन चल्यौ ॥
रवि वार सुरंग सु सत्त में। गुन प्रमान जंबुअ षुल्यौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना।

पद्धरी ॥ नारेन जंबु गढ़ चढ्यौ काज। बोलहित वाम कौदहति ताज ॥
दाहिने म्रग्ग संमुह फुनिंद। नौरूप बोल बोलहित हद्द ॥
छं० ॥ २६ ॥
हंकरै सिंह कोदहति वाम। उत्तरै [1]देवि दाहिन सु ताम ॥
दिसि वाम कोद घू घू टहक्क। फुनि करै हक्क केकी पहक्क ॥
छं० ॥ २७ ॥
उत्तरै [2]दार वाराह [3]सथ्थ। डहकरै सांड़ दिसि वाम तथ्थ ॥
[4]बन्नर बिरूर दाहिनै सद्द। सुनियै न कन्न नंदनी नद्द ॥ छं० ॥२८॥
[5]कुरलंत बाम सारस समूह। मुक्कइ न गिद्धि पच्छै अजूह ॥
कुरलेत कग्ग चित्तहत हीन। हंसीय बाम आनंद कीन ॥छं० ॥२९॥
हां कहत हल्ल करि गट्ट मध्य। चहुआन पिथ्थ रिझ्झेव तथ्य ॥
हाहल्लराव दीनौ विरद्द। आनंद बज्जि नीसान नद्द ॥ छं० ॥ ३० ॥

सेना का हल्ला कर के क्रोध से धावा करना।

दूहा ॥ हां कहतें ढीलन करिय। हलकारिय अरि मध्य ॥
* तायें विरद हमीर को। हाहुलि राव सु कथ्य ॥ छं० ॥ ३१ ॥
चढ़ि चल्लै बंदन [6]सुकन। भागह जे प्रथिराज ॥
बर प्रब्बत बैदेस सधि। बीर बजी रन बाज ॥ छं० ॥ ३२ ॥

युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन।

(१) मो.-देव। (२) ए. कृ. को.-डार।
(३) ए. कृ. को.-रत्थ, हथ्थ। (४) ए. कृ. को.-बंदर।
(५) कृ.-कुरलेत। (६) मो.-सगुन।
* छंद नं. ३० का आधा और ३१ संपूर्ण मो. प्रति में नहीं है।

पद्धरी ॥ आएस लीन जुग्गिन नरेस। सजि सिलह सुभर मंडी सु भेस ॥
सिंगिनी सुध्थ गौ गंठि थाल। अरि अंग षतंग भै पाति [1]काल ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नेजा सुरंग बंबरि विपान। अट्ठार टंक षंचै कमान ॥
धज सुरँग रत्त गजराज हालि। जानं कि भमि बद्दलति चालि ॥
छं० ॥ ३४ ॥

अति इत्त दहकि धर धरकि हल्लि। चतुरंग सेन चिहुं पास चल्लि ॥
चासंत तीर सब तुंग मानि। गढ़ मुक्कि गड्ढ ओछंडि थान ॥ छं० ॥ ३५ ॥

आवाज बज्जि दस दिसा मान। भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
वल्लभ सु बाल गय बाल मुक्कि। रो रथ्थ नारि चकि नय सु चक्कि ॥
छं० ॥ ३६ ॥

फट्टे दुकूल नग नगन चड्ढि। मंगलिक जानि वन्नौर कड्ढि ॥
[2]फुटि अंसु वास रस गत दिषाहि। नौग्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥
छं० ॥ ३७ ॥

नंषैति हार कहुं बाल नारि। तिन की उपंम बरनी सुभार ॥
तुट्टंत मुत्ति पग पगन मान। नंषंत तीय पिय को निसान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

के दुरत धाइ चित चित्रसाल। जानहिं सुचित्त पुत्तलिय बाल ॥
ता मध्य जाइ रहै षंचि सास। मानहु कि रचि चित्रह बिलास ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सुर सुकी दीन भइ बाल बाम। अग्गै सुबाल दीसहि सु ताम ॥
कविचंद सु ओपम एक वार। उतऱ्यो राह रूपह सवार ॥
छं० ॥ ४० ॥

चित्रहति साल रष्षीति बाल। नह परहि बंदि ते तिहति काल ॥
दभ्भवै [3]वाहि मदिरत्ति रिझ्झि। चल्लै न पाइ मानं उलझ्झि ॥
छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-षाल।
(२) ए. कृ. को.-फेटे, फेट्टे। (३) मो.-नाहि।

देषंत सुमन गति भई पंग। रुठ्ठई काम रति कोटि रंग॥
नठ्ठई उगति तिन देषि बाल। मानो कि रास मझ्झें गुपाल॥

अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना।

दूहा॥ बंस दुजन घर गाहि फिरि। तब लगि दुजति सपन्न॥
एकल्ल रघुबंस ने। लै गढ़ सबर प्रपन्न॥ छं०॥ ४३॥

सब सामंतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना।

कवित्त॥ सबै सूर सामंत। पलह बंध्यौ गढ़ लिन्नौ॥
थप्यौ राम नरिंद। हथ्थ फुरमान सु [1]दिन्नौ॥
तुम रहियौ इन थान। जाइ कंगुर सँपत्तौ॥
मिलौ जाइ प्रथिराज। राज सम्हौ प्रापत्तौ॥
आनंद फते तप तुझ्झ बल। धन समूह आइय सु धर॥
सुभ्भर सुघाइ तेरह परे। बिय दाहिम्म नरिंद बर॥ छं०॥ ४४॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंस का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना।

सबै भूमि अरि गाहि। आन फेरी चहुआनं॥
पर्‍यौ भान रघुबंस। बीर बंचे फुरमानं॥
माल्हन वास नरिंद। राज रष्यौ तिन थानं॥
बर बंध्या अरि साहि। षून कढ्यौ परवानं॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर। बर रघुबंस बुलाइयौ॥
दिन देव दसमि बर भूमि बर। तदिन सु रंगन पाइयौ॥ छं०॥ ४५॥

नियत तिथि पर व्याह होना।

(१) ए. कृ. को.-लिन्नौ।

दूहा ॥ परिनि बीर प्रथिराज बर। बर सुंदरी सु लच्छ ॥
देव व्याह दुज्जन दवन। दिन पद्वरौ सु अच्छ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन।

कवित्त ॥ [1]दच्छिन वृत्त सुनाभि। तुंग नासा गज गमनी।
सासनि गंध रु षंजु। कुटिल केसं रति तरनी ॥

(१) मो.-द्रिषत।

बर जंघन मृदु पंथ। कुरँग लज्जे छबि हीनं॥
इह ओपम कविचंद। हथ्थ करतार सु कीनं॥
वर बरनि बीर प्रथिराज बर। घन निसान बज्जै सुवर।
जंबूअ राव हम्मीर ने। ध्रम्म काज दीनौ [1]सुधर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना।

बर बरनी दै हथ्थ। गुंट अप्पे जु एक सौ ॥
चौर मृगंमद मधुर। च्रम्म दीनि सु सत्त सौ ॥
अठ्ठ सुरंग गजराज। बाज ताजी सौ दासी ॥
बर लच्छी चतुरंग। चंद [2]पिष्षिय सोभासी ॥
ढिल्लीव नाथ ढिल्ली दिसा। अरिन जीति बर परनि कै ॥
संजीव काम बोलिय सु ढिंग। बर निसान बर बरनि कै ॥छं०॥४८॥

दूहा ॥ आयौ न्रप ढिल्ली पुरह। बर बज्जे न्रिघोस ॥
डोला पंच नरिंद सँग। मधि सुंदरी अदोष ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजै नाम पैंतीसमों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-जु कर। (२) ए.-दिष्षी।

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छत्तीसवां समय।)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्टूपुर जाना।

दूहा ॥ इक तप पंग नरिंद कौ। सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय। षट्टूपुर चहुआन ॥ छं० ॥ १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुंदर कन्या थी, और चँदेरी में शिशुपाल वंसी पंचाइन नाम राजा राज करता था।

कवित्त ॥ रा जद्दव रिनथंभ। भान पंचाइन भारी ॥
हंसावति तिन नाम। हंसवति गत्ती सारी ॥
[1]अवनि रूप सुंदरी। काम करतार सु कीनी ॥
मन मन्नवै विचार। रूप सिंगार स लीनी।
लष्यन वतीस लच्छी सहस। अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥
अस्तम्म उदै वर [2]बक्र विच। दिष्षि न कहुं चक्रंत रवि ॥छं०॥२॥

हंसावती की शोभा वर्णन।

नाग वेनि सुनि पीन। कंति दसनह [3]सोभत सम ॥
अंषि पद्म पच मनु। भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥
सिषा नाभि गज गत्ति। नाभि दछना व्रत सोभै ॥
सिंघ सार कटि चारु। जंघ रंभा जुषि लोभै ॥
सुंदरी सीत सम वरि चरित। चतुर चित्त हरनी बिदुष ॥
सत पच गंध मुष ससिय सम। नैन रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-अवरि। (२) को.-चक्र। (३) मो.-सोभतं।

चँदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंम को दूत भेजना।

गाथा ॥ बर बंसी [१]ससिपालं। चिंत्त जस संभलं बालं ॥
मन बयनं तन [२]बद्धै। रिनथंभं [३]मुक्कवै दूतं ॥ छं० ॥ ४ ॥

चँदेरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना।

अरिल्ल ॥ दूत आइ बर बीर सपत्ते। जग्गद हथ्थ दिए बर तत्ते ॥
हंसावति अप्पै बर [४]रंभं। तजौ वेग उभ्भौ रिन थंभं ॥ छं० ॥ ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता।

कवित्त ॥ रा जद्दव रिन भान। तमकि कर चंपि लुहट्टी ॥
बर रनथंभ उत्तरी। बीर बस्सी [५]अहुट्टी ॥
बर कग्गद [६]कर फेरि। सुभ्रि करियै बर राजन ॥
मतै बैठि कुंडली। ध्रम्म छत्री जिन भाजन ॥
बुल्लइ न एन दुज्जन भिरन। तरन तार साधन मरन ॥
बर बीर जुद्ध चालुक रन। हक्कायौ दुज्जन भिरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

कुंडलिया ॥ रिन थंभह वर उप्परै। चढ़ि गढ़ौ करि साहि ॥
हंस मरत रा भान कौ। धसि उप्पर धर धाइ ॥
धसि उप्पर धर जाइ। सुजस जंपै सब कोई ॥
जोग मग्ग लभ्भनह। षग्ग मग्गह मत होई ॥
अलप आव संसार। सिद्ध साधकह अथंभह ॥
सब्ब जोग सहक्रम्म। सब्ब तीरथ रनथंभह ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो.-शिशुपालं। (२) मो.-बद्धे।
(३) ए. कृ. को.-मुक्कले, मुकले। (४) ए. कृ. को.-उम्भं।
(५) ए.-उहठीं। (६) ए. कृ. को.-बर।

चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ सुनि बंसी ससिपाल। बीर पंचाइन कोप्यौ।
सद्द मद्द गज जेमि। तमसि धीरज सम लोप्यौ ॥
रिनथंभह दिसि थंभ। दियौ बर बीर मिलानं ॥
गय हय दल चतुरंग। सजे तिन बेर प्रमानं ॥
बर बीर अग्ग बसीठ चलि। राजहौ संमुह दिसा ॥
परनाइ कुंअरि हंसावती। सु बर कोपि आयौ निसा ॥ छं० ॥ ८ ॥

चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदत के लिये।

दूहा ॥ जस बेली रिनथंभ न्रप। फल पच्छै न्रप आइ ॥
राजहव सुरतान सौं। कहि बर जाइ सुधाइ ॥ छं० ॥ ९ ॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया।

कवित्त ॥ सीय [1]रष्षि रावनह। लंक तोरन कुल षोयौ ॥
कपट रष्षि दुरजोध। षग्ग षोहनि दल [2]गोयौ ॥
मंतहीन बर चंद। कियौ गुरवार सुहिल्लौ ॥
क्रम्म रष्षि रघुराइ। अजै जान्यौ न पहिल्लौ ॥
रनथंभ मंडि छंडी [3]सरन। भिरन कहौ बर बीर सब ॥
ससिपाल बीर बंसी [4]बिलस। हम देषै आयौ सु अब ॥ छं० ॥ १० ॥

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं।

जीवन बलह विनोद। अलह नब्बी घन मंगहि ॥
जीवन बलह विनोद। आस आसन्न असुर गहि ॥

(१) ए.-रषी। (२) मो.-षोयौ।
(३) ए. कृ. को.-रसनं। (४) मो.-त्रिमल।

जा जीवन सुंदर। सुगंध बर बंधव लोकै ॥
जा जीवन काजें। कपूर पूरन प्रभु कोकै ॥
जा जियन देव दानव मिलन। किलमन कलि आवन गवन ॥
तिन भवन छंद छंडित गहर। तजित तुंग तन सो भवन ॥छं०॥११॥

भानुराय यद्दव का बसीठ की बात न मानना।

दूहा ॥ रा जद्दव बर भान नैं। बहु मंग्यौ बर हट्ट ॥
बाजी बार पयानरै। तुंगी तेरह ठट्ट ॥ छं० ॥ १२ ॥

बसीठ का लौट कर चँदेरीपति की फौज में जा पहुंचना।

इह सुनि बीर बसीठ उठि। भानह हल्यौ न हल्ल ॥
तीस कोस सम्हौ मिल्यौ। बर पंचाइन ढल्ल ॥ छं० ॥ १३ ॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुजावखां आदि सरदारों का आना।

कवित्त ॥ अग्गिवान उजबक्क। धाइ भाई परवानिय ॥
ता पच्छैं साहाव। षान बंधे तुरकानिय ॥
ता पच्छैं नूरी हुजाब। सेई संचारिय ॥
केलीषान कुलाह। सब्ब सेनी कुटवारिय ॥
बानिक्क बीर दुल्लह सुजर। भाइ षान रन अंभ बर ॥
ससिपाल बीर बंसी विलस। बर आयो रनथंभ पर ॥ छं० ॥ १४ ॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चँदेरी के राजा का आगे बढ़ना।

दूहा ॥ पंचाइन बल पष्षरै। [1]यह रनथंभह काज ॥
कंक बंक बर कट्टनह। चढ़ि चल्ल्यो रन राज ॥ छं० ॥ १५ ॥

चँदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन।

भुजंगी ॥ ससीपाल बंसी चल्यौ कोपि रथ्थं। मनों बंक चक्रं धस्यौ आनि पथ्थं ॥
जलं जुब्बनं जूथ धावै दुरंगा। करै कूंच उंचं [2]उरज्जैं तुरंगा ॥छं०॥१६॥

(१) ए. कृ. को.-हथ, हथ्थ। (२) मो.-उरझै, उरजै।

कहैं बत्त रत्ती मुषं रत्त आहौ । कहैं अश्व आठू रनंथंभ ढाहौ ॥
ससीपाल बंसी चंदेरीय रायं । उथ्यौ छत्र सीसं कबी देषि गायं ॥
छं० ॥ १७ ॥

नगं पंति मुत्ती सिरं हेम दंडी । ग्रहं अट्ट मानों ससी मेच्छ मंडी ॥
फिरी पंति राई रिनंथंभ घेर्‍यौ । मनों भावरी भान सुम्मेर फेर्‍यौ॥
छं० ॥ १८ ॥

रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना ।

दूहा ॥ घन घेर्‍यौ रिनथंभ पर । लिषि ढिल्ली परवान ॥
तब जद्दव रा भान ने । दिय कग्गद चहुआन ॥ छं० ॥ १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना ।

कवित्त ॥ रा जद्दव बीराधि । बीर गुज्जह अनुसरयौ ॥
हयदल पयदल गज । अरोहि रिनथँभ यौं अरयौ ॥
धंधेरा धंधेल । चंद ससिपालह वंसिय ॥
अध लष दलहि हिलोर । जोर गरुवंतं गंसिय ॥
हम्मीर राव हाड़ा हठी । षीची राव प्रसंग दुह ॥
प्रारंभ करै संभरि धनी । जौरै बंध षुमान सह ॥ छं० ॥ २० ॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना ।

दूहा ॥ सुनि कग्गद चर चिंत कैं । तिथि सातें चहुआन ॥
समर सिंघ रावर दिसा । गुर जन मुक्यौ कान्ह ॥ छं० ॥ २१ ॥

कन्ह का समरसिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना ।

कवित्त ॥ बर पंचाइन सबर । सबर बंसी ससिपालं ॥
घेर्‍यौ तिन रनथंभ । सुबर जंपे बर कालं ॥
मान बीर पुकार । धाइ आई ढिल्लीवै ॥
अद्व अद्व पहु पंग । सथ्थ अद्दो बर है वै ॥

जोगिंदराव जग हथ्थ बर। महन रंभ उप्पर सबर ॥
कालंक राइ कप्पन विरद। [1]तुम आऔ रचि सेन बर ॥ छं० ॥ २२ ॥

समर सिंह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे।

दूहा ॥ चिचंगी चतुरंग सजि। बर रनथंभ सु काज ॥
बर सहेट रावर समर। आवन बदि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३ ॥
चलत कन्ह चहुआन बर। कहि चतुरंगी राज ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। आवन सुधि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २४ ॥

तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस हैं इसलिये तुम से आगे जा पहुँचेंगे।

पंच कोस बर सट्ठि अग। चीतौरह रनथंभ ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। महन रंभ आरंभ ॥ छं० ॥ २५ ॥

कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले हैं और राजा भान पर बड़ी बिपत्ति है।

कवित्त ॥ महन रंभ आरंभ। कन्ह चालत मन मंडिय ॥
अट्ठ दौह हम अग्ग। राज तेरसि ग्रह छंडिय ॥
बर बंसी ससिपाल। गंज लग्गिय न्रप [2]भानं ॥
धरति धवर [3]तह नाम। सेत सिसि देही दानं ॥
अग्गहन ग्रहन रिनथंभ मति। इह सुमिच आयौ पट्टन ॥
कालंक राइ कप्पन विरद। महन रंभ बढ्यौ बढ्न ॥ छं० ॥ २६ ॥

समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें।

(१) मो.- तुम आओ सेना बरन।
(२) ए. कृ. को.-मान। (३) ए. कृ. को. नाहि।

सुनि कन्हा चहुआन। रीति आहुट्ठ ग्रेह कुल ॥
सरन रष्षि कढ्ढइन। मिलै जो कोटि देव बल ॥
संग्रामं हरषै न। सुबर षचौ बर धायौ ॥
रन रष्षै रजपूत। छच छल छांह नवायौ ॥
द्रिग रत बल बंसै सुबर। बेद ध्रम्म बंध्यौ चवै ॥
कालंक राइ कप्पन विरद। कित्ति काज नव निधि द्रवै ॥छं०॥२७॥

समरसिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना।

दूहा ॥ तिय हजार तेरह तुरँग। हस्त मत्त बर तीन ॥
मनि गन मुत्तिय माल दस। रष्षे कन्ह सु बीन ॥ छं० ॥ २८ ॥
पूज कुलह चहुआन दय। वे सब मनि [1]गनि साह ॥
लच्छिय सब हथ्थिय ग्रहन। दीना सब्ब समाहि ॥ छं० ॥ २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा।

चले कन्ह बर संग न्रप। समर सजग्गी आउ ॥
तेरसि त्र्यंबक बज्जिहै। धरकि बीर उमराउ ॥ छं० ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिंह जी की यात्रा की मुहूर्त वर्णन।

कवित्त ॥ घरी पंच बर सोम। दैव दसमी ग्रह सारिय ॥
दुष्ट दान करि मंच। सुगुर पंचमि बुध [2]चारिय ॥
अद्व चार भय हूर। फेरि नव मीन न भग्गा ॥
असुर सुगुर वक्रयौ। छंड बिय थानति अग्गा ॥
चिचंग राइ रावर समर। महा जुद्ध संग्राम रजि ॥
दस कोस बीर मेलान दै। सुबर बीर चतुरंग [3]सजि ॥छं०॥३१॥

यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ समर रावर सु तथ्य। जानै कि सरित सागर समथ्य ॥

(१) ए. कृ. को.-बर साहि, बर साई।
(२) ए. कृ. को.-बारिय।
(३) ए. कृ. को.-राजि।

बज्जे निसान दिसि दिसि प्रमान। मानों समुद्द गिरि [1]गजिय थान॥
छं० ॥ ३२ ॥

सुभ्भै न भान रज [2]मझि सलीव। चक्कीय चक्कवे चलि सु कीव॥
चतुरंग सेन चल्लिय सुरंग। बहु रक्कि अंभ घन नभ्भ संग॥
छं० ॥ ३३ ॥

सहनाइ भेरि कल कलनि बज्जि। जल होइ थलनि थल जलन रूझ्झि
उन्नयौ मेह हय गय प्रमान। मद [3]चलहि गंध गज शिर समान॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर रंग नेज कल मिली ताहि। बर बरन बीच सोहंत जाहि॥
पाइन पयाल द्रगपाल हल्लि। चतुरंग सेन चिचंग चल्लि॥
छं० ॥ ३५ ॥

घन जिम निसान बज्जे विसाल। जोगिंद मत्त जग हथ्थ भाल॥
पावस समूह रावर नरिंद। भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद॥
छं० ॥ ३६ ॥

कोकिल नफेरि पप्पीह चीह। बोलंत सद्द कवि मधुर जीह।
बरषहति दान गज [4]मद्द मान। फरहरहि धज्ज बगपंति मान॥
छं० ॥ ३७ ॥

अंदून सद्द झिंगुर झँकार। सुभ्भहि भसद्द बदि श्रवन यार॥
पावस समूह करि समर चल्लि। रिनथंभ दिसा मेलान मल्लि॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के वाएं ओर पृथ्वीराज और दाहिने ओर से समर सिंह जी का आना।

कवित्त ॥ बाम कोद प्रथिराज। छंडि रनथंभ सँपत्तौ॥
बर दच्छिन समरंग। बीर जोगिंद प्रपत्तौ॥
दुहुन बीर गढ़ चंपि। सुकवि ओपम तिन पाई॥

(१) ए. कृ. को.-गज्जि। (२) मो.-मधि।
(३) मो.-लीह। (४) मो.-मत्त।

कुंभ अंब डोलंत। हथ्थ बरनै रस माई॥
चहुआन सेन चिचंगपति। चावद्दिसि बर बिड्डुरिय॥
बर ढोह छंडि चंदेर न्रप। जुग्गिनि ह्वै सम्हौ भिरिय॥ छं० ॥३९॥

दूहा॥ उत चंपे चहुआन ने। इत चंपे चिचंग॥
मूंदि सास अरि सम दरी। जनु [1]चंप्यौ सु म्रदंग॥ छं० ॥ ४० ॥

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी।

कवित्त॥ प्राची दिसि चहुआन। चल्यौ पच्छिम चतुरंगी॥
दुहूं बीच [2]रिनथंभ। बीच अरि फौज सु रंगी॥
दुहूं सेन [3]समकंत। [4]नग्ग मत्ता गज अग्गी॥
मनु राका रबि उदै। अस्त होते रथभग्गी॥
ससिपाल बीर बंसी [5]विमल। दुहुन बीच मन मेर हुअ॥
षह मिलै षेह षग्गह हन्यौ। चवै चंद रबि दंद दुअ॥छं०॥४१॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन।

अनल पंष अंकुर्यौ। जुद्ध पंचाइन मंड्यौ॥
इक सपंष षग बीय। पेट रनथंभ सु छंड्यौ॥
पीठि पंड पावार। सु वर हुओ नष पंषं॥
एक मुष्ष वन बीर। धीर उभ्भौ विय मुष्षं॥
न्रिम्मान बंभ बर पुंछ कवि। पुच्छ पाइ साधन समर॥
दुह लोह कढ्ढि परियार तें। समर मोह भूल्यौ अमर॥ छं० ॥४२॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन

भुजंगी॥ मिले आइ [6]धायं सु आहुट्ठ राई। लगे बीर बथ्थै लगे लोह धाई॥
कढ़ी बंक अस्सी ससी बीय गत्ती। बरै ज्वाल ह्ररं मनों हब्बि तत्ती॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-चंपी। (२) ए.-चतुरंग। (३) ए. कृ. को.-चमकंत। (४) ए. को.-नग, नगा। (५) ए. कृ. को.-बिसल। (६) ए. कृ. को.-घाई।

करै हक्क मीरं महा मार मारं। धरं किति सीसं तुरं पार पारं॥
बजै सस्त्र बीसं [1]तुरित्तं बषानं। तिनं सद्द अग्गैं दुरैं वै निसानं॥
छं० ॥ ४४ ॥

धकै आइ सूरं बिधं कन्ह हथ्थं। थकी रंभ उतकंठ मनों पंग तथ्थं॥
लगी धार धारं धरक्कै बिवानं। गहै हथ्थ छुट्टै चलै देवयानं॥
छं० ॥ ४५ ॥

कटै सुंड डंडं कथै दंत तथ्थं। मनों ज्यों पुलंदी कढ़ै कंद हथ्थं॥
धनं धक्क हथ्थं रसं रंक मत्तं। मनों दंपती संजुधं की सुरत्तं॥
छं० ॥ ४६ ॥

परै ढाल ढीचाल गज ढाहि सूरं। महा दिष्षियै बीर रूपं करूरं॥
कटै कंध सूरं उड़ै छिंछ भारी। झरै फूल तथ्थं सिरं डुंड झारी॥
छं० ॥ ४७ ॥

जगी जोगिनी जुद्ध देषैं [2]जरूरं। उड़ै रेंन रावत्त कच्छे करूरं॥
धराधाव श्रोनी पलं भद्द जानं। गजे सूर जुद्धं दिसानं दिसानं॥
छं० ॥ ४८ ॥

तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं। मनो विज्जमाला चमक्कंत चंगं॥
धनुष्षं कमानं धरे मेघ मद्दं। रवै दंड दंडं नफेरी सबद्दं॥छं०॥४९॥
बहै षग्ग बानं मनों बग्ग पानं। रचै चित्त चहुआन षेतं किसानं॥
भिरै भंति भारी परै जूह राजं। ढरै घाइ धंधेर बंधी सु पाजं॥
छं० ॥ ५० ॥

[3]इलावार पूरं सरित्तान श्रोनं। तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तोनं॥
मुषं मेद पाटं सु घाटं घुमानं। भिरे भौर भारी सु ग्रब्बे उमानं॥
छं० ॥ ५१ ॥

गहै नाग मुष्षी अरी जा उठायौ। मनों चंद संदेस पच्छै पठायौ॥
ग्रहै रंभ मालं भरं ग्रीव बालं। रचै ईस सीसं गरै रुंडमालं॥छं०॥५२॥
पर्यौ षग्ग षीची भरं चिचकोटं। जलं पष्ष मच्छी धरं जानि लोटं॥
तहां गत्ति मत्तं न सुष्षं न दुष्षं। थकी जंमसालं लरे सूर पिष्षं॥
छं० ॥ ५३ ॥

(१) मो.-तुट्टिंत। (२) ए. कृ. को.-करूरं। (३) मो.-इलाचार।

महादेव जुद्ध दिष्यौ मेस यानं। धनी चिचकोटं [1]धसी सेन जानं॥
छं० ॥ ५४ ॥

चँदेरी की सेना और रुस्तमा खां के बीच में रावल समर सिंह जी का घिर जाना।

कवित्त ॥ उत बंसी ससिपाल। इतै रुस्तम्म दुंद बल ॥
बिचै समर रावर। नरिंद बीरन गाहरमल ॥
उतै तेग उभ्भारि। इतै सिंगनि धरि बानं ॥
छंडि निधक्क अरियान। उररि पारी परि तानं ॥
रन तुंग अवर चिंते रिपुन। हवि मुष रुष मुक्कै नहीं ॥
भर सुभर दार रष्षन सु बर। समर समर उभ्भौं पही ॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना।

सम लरत्त बर समल। दिष्षि चहुआन कियौ बल ॥
बांम मुष्ष अरोहि। नीर असि झल्ल मुषह झल ॥
सौ सामंत छै सूर। सथ्थ प्रथुराज सु धायौ ॥
सार कोट अरि जोट। षग्ग षल षंभ हलायौ ॥
जै जैत देत जै करहि। देव बीर आनंद बढ्यौ ॥
तारुन्न तुंग तन तेज बर। असि पहार धर भर चढ्यौ ॥छं०॥५६॥

रनथंभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना।

दूहा ॥ रा जदव रिनथंभ तजि। मिलिय राय प्रति मान ॥
समरसिंह रावर सु प्रति। चरन चंपि चहुआन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

(१) ए. कृ. को.-मधी। (२) ए. कृ. को.-कीय।

*दिन धवलो धवली दिसा। धवल कंध भारथ्थ ॥
समरसिंघ रावर मिल्यौ। चाहुआन समरथ्थ ॥ छं० ॥ ५८ ॥
मझि फौज प्रथिराज बल। रा जद्दव दिसि बाम ॥
समरसिंघ दछिछन दिसा। चढ़ि संग्राम सु काम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के बीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन।

छंद त्रिभंगी ॥ ससिपालय बंसी, मिलि रन गंसी, बीर प्रसंसी, बर बीरं।
संमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं ॥
तुरसी रस मंजरि, पति [1]समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, शृग रारी ॥
बर टोप सु कंतिय, सूर सुभंतिय, बद्दर पंतिय, जम रारी ॥छं०॥६०॥
गोरष्षन पाइय, कंठन लाइय, कढ़ि असि धाइय, बिरुझाई ॥
परि जोगह सोकं, दिय दिषि धोकं, बसि सुरलोकं, सरसाई ॥
†वीरंग विचारै, डक हकारै, मंचं मारै, उभ्भारै।
छं० ॥ ६१ ॥
अफ्फार कि फारं, असि बर तारं, बंसेति मारं, सिर सूरं ॥
बर टोप समेतं, सिप्पर तेतं, असि आलेतं, हँसि हूरं।
[2]हारी रउ चिन्हं, हथ्थ न लिन्हं, भयउ सभन्नं, ब्रह्मचारं ॥
छं० ॥ ६२ ॥
बर दरसि कपालं, बिय लिय मालं, हसि बर बालं किल कालं।
‡नचि नारद पूरं, वजि रन तूरं, बरि बरि सूरं, धरि मालं ॥

---

* "मो" प्रति में छन्द ५८ प्रथम और ५९ उस के बाद आया है परंतु प्रसंग में यही सिलसिला ठीक जँचता है।

(१) ए.-समनेजरि। † यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।

(२) ए. कृ को.-हारी चिर चिन्ह।

‡ यह पंक्ति ए. को कृ तीनों पंक्तियों में है, केवल मो. प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठाप गौण मालूम होता है।

कर व्रन्न सु तुट्टं, धर धर लुट्टं, ओपम घट्टं, कविराजं।
ओपम्म विराजं, ज्याजल काजं, मच्छवराजं, सक साजं॥
छं०॥ ६३॥

चष छिंछत ओनं, लगि घटि कोनं, उप्पम होनं, घन घाई।
कवि ओपम तासं, सूर विलासं, माधव मासं, फिरि आई॥छं०॥६४॥

युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना।

कवित्त॥ दस क्रम्मन अरि ठेल। मुरिय पंचाइन सेनं॥
बीर छक्क उत्तरी। मुक्ति भिरि रन रत नैनं॥
सुरस पियौ प्रथिराज। प्रगटि अंषिन जल झलकिय॥
पी अधरा रस पीन। प्रातसौ की मुष जक्किय॥
चहुआन सु बर सोरह परिग। समर सिंघ तेरह चिघट॥
ससिपाल बीर बंसी सुबर। सहस पंच लुथ्थय सुभट॥ छं०॥ ६५॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना।

दूहा॥ निग्रह [1]नर बंछत न्रपति। अहि गवन्न सुष वान॥
पंच अनी करि षेत चढ़ि। षेत अरक चहुआन॥ छं०॥ ६६॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप।

[2]जिन गुन प्रगटत पिंड। सोई सिंघार सूर बल॥
म्रत्त [3]कुलस तन जान। लभ्भ कित्तीति सुभट कल॥
जिहि मरन्न मन सूर। मरन जेही मन उत्तरि॥
पंच पंच पथ गोत्र। फिर न एकठ्ठे नर नर॥

---

(१) ए. कृ. को.-निग्रह नवर।
(३) ए. कृ को.-प्रतियों में यह छन्द दुबारा लिखा हुआ है। पाठ भेद कुछ भी नहीं है।
(४) ए. कृ. को.-कुसल।

घरियार रूपि सु कुठार घट। तंत मुक्कि लग्गी नदिय ॥
सिंचीय कित्ति तर अमिय में। धुम्र व्यापं लग्गंन दिय ॥छं०॥ ६७॥

हंसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन।

दूहा॥ बाल कुँअर घरियार घरि। विय तरवर [1]बर छीह ॥
जिम जिम लग्गे तिम अरिय। ढाहन ढाहै दीह ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन।

कुंडलिया॥ पंच चिराकन मभ्भ न्नप। सो सोभित जुग्गिंद ॥
मुनि ग्रह सत्तह बीस [2]यह। लिय पारस मंडि चंद ॥
लिय पारस मँडि चंद। सुभ्भित ससिपाल सु बंसिय ॥
अप्प सामि बर जानि। कित्ति जंपै रन धंसिय॥
सुनिय बेंन बुल्लियै। घोरि ढंकी अरि रंचै ॥
कपट द्रोह करि इक्क। पथ्थ टारै [3]पच पंचै ॥ छं० ॥ ६९ ॥

प्रातःकाल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना।

दूहा॥ इम निसि बीर कढ़िय समर। काल फंद अरि कढ्ढि ॥
होत प्रात चिचंग [4]पहु। चकाव्यूह रचि ठढ्ढि ॥ छं० ॥ ७० ॥

समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन।

कवित्त॥ समरसिंघ रावर। नरिंद कुंडल अरि घेरिय ॥
एक एक असवार। बीच बिच पाइक फेरिय ॥
मद सरक्क [5] तिन अग्ग। बीच सिल्लार सु भीरह ॥

---

(१) मो.-बर वीह। (२) ए. कृ. को.-हथ।
(३) ए. कृ. को.-पंच पंच। (४) र. कृ. को.-पंग।
(५) ए.-विन।

गोरंधार विहार। सोर छुट्टै कर तीरह ॥
रन उदै उदै बर अरुन हुअ। दुह्न लोह कढ्ढी विभर ॥
जल उकति लोह हिल्लोरही। कमल हंस नंचै [1]सु सर ॥छं०॥७१॥

युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ करं लोह कढ्ढै, रसं रोस बढ्ढै। अँगं अंग गढ्ढै, कथं सूर कढ्ढै ॥ छं० ॥ ७२ ॥
असी अंच उढ्ढै, थटं थट्ट गढ्ढै। हकं सीस रढ्ढै, षगं सूर कढ्ढै ॥ छं० ॥ ७३ ॥
गिधं लोल रट्टै, द्रुनं नंच ठट्टै। युती रंभ पट्टै, अँतं तुट्ट जुट्टै ॥ छं० ॥ ७४ ॥
सिरं अंग बढ्ढै, लोहं पच्छ कढ्ढै। करं किति मढ्ढै, वकं बीन नढ्ढै ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मुषं चंद पढ्ढै, ...। सिँघ सम्भ रंनी, लुथ्थिं लुथ्थ घन्नी ॥ छं० ॥ ७६ ॥
संधि तुट्टं ऐसे, कंधं बंध्य जैसे। ...., ... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

दूहा ॥ ससरसिंघ दिष्षत सुवर। उप्पारे रन भान ॥
दइ समान दुज्जन दवन। तिरछौ परि चहुआन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

चँदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना।

रसावला ॥ इसी सेन राई, चंदेरी सुभाई। षगं षोलि धाई, अरी सीस घाई ॥ छं० ॥ ७९ ॥
भिरंतं बजाई, रजं तम्म छाई। विरुझ्झाई धाइ, असी बंक झाई ॥ छं० ॥ ८० ॥

(१) मो.-जु।

किरच्चं उड़ाई, ससी व्यंव पाई। सुतं [1]राति छाई, कबी कित्ति गाई॥ छं० ॥ ८१ ॥

उमा ज्यों बताई, बरं पंच पाई। चवंसट्ठि ताई, ... ॥छं०॥८२॥

लही मुग्ति रासी, अबी अब्बि नासी। उपं राज जीतं, सु भारथ्थ बीत छं० ॥ ८३ ॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पंचाइन) का मारा जाना।

कवित्त ॥ बर बंसी ससिपाल। समर रावर रन [2]जुद्धे ॥
अमर [3]बंध चिचंग। बीर पंचाइन बद्धे ॥
सबै सथ्थ सामंत। षेत ढोह्यौ विरुझाइय ॥
गुरिन गयौ अरि ग्रहन। लइ नन लुथ्थि न पाइय ॥
प्रथिराज बीर जोगिंद न्रप। दिष्ट देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह वत्त बंधन दिवन। दिष्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं०॥८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना। हुसैन खां और कन्हराय का घायल होना।

लुट्टि लच्छि चिचंग। राज रिनथंभ [4]उबारे ॥
षेत ढुंढि चहुआन। कन्ह चहुआन उपारे ॥
उभै घाइ बर अस्स। घाइ आहुट्ठ अठोभिय ॥
पंच घाइ हुस्सेन। षान चौंडोल घालि लिय ॥
प्रथिराज बीर बीरंग बलि। निसि सपनंतर अद्ध पहि॥
[5]यागत्ति जागि देषै न्रपति। तबह कन्ह जलथान लहि ॥छं०॥८५॥

---

(१) ए. कृ. को.-रारि। (२) मो.-सद्धे।
(३) ए. कृ. को.-बांधे। (४) मो.-उचारे। (५) ए. कृ. को.-मत्ति।

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्दवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना।

हंस [1]सुगति माननी। चंद जामिनि प्रति घट्टी ॥
इक तरंग सुंदरि सुचंग [2]हथ नयन प्रगट्टी ॥
हंस कला अवतरी। कुमुद बर फुल्लि समथ्थै ॥
एक चित्त सोइ बाल। मीत संकर अस रथ्थै ॥
तेहि बाल संग में पूछुय लिय। बरन बीर संगति जुवह ॥
जाग्रत्त देवि बोलि न कछू। नवह देव नन मान वह ॥छं०॥८६॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हंसावती है कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं।

दूहा ॥ *सो सुपनंतर देषि वह। सो तुअ बर बर नारि ॥
बे वर गज्जि नरिंद तूं। हंसि हंसि पुच्छि कुंआरि ॥ छं० ॥ ८७ ॥
एन बयन रुपह रवन। इन गुन इन उनमान ॥
धीरत्तन पूजंत बर। सुनहु तौ कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ८८ ॥

हंसावती के स्वरूप गुण और उस की वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन।

हनूफाल ॥ सुनि सुबर बरनी रूप। तिहि चढ़न बै न्रप भूप ॥
दिन धरत सैसव एह। बालत्त तज्जन देह ॥ छं० ॥ ८९ ॥
वय काम दिन पछितान। आवंन दिन सुभ जानि ॥
इन काज असुभ प्रमान। ज्यों सहिव तजि अनि ध्यान ॥छं०॥९०॥

(१) मो.-गति। (२) मो.-हष

* इस छन्द मे यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है।

धन धनक वेदी काम । [1]द्रिग काल गौरभ वाम ॥
जंजीर भौंह चढ़ाइ । देषंत काम बजाइ ॥ छं० ॥ ९१ ॥
बरछिन्न उन्नित बाल । बर काम चित चढ़ि साल ॥
चित हरुत्र गरुत्र सुहंत । गुर गरू होत पढ़ंत ॥ छं० ॥ ९२ ॥
जिम जिम सु विघा आइ । तुछ भरत तुछ सरसाइ ॥
मति लघू अलघु प्रमान । [2]अंब निबंद समान ॥ छं० ॥ ९३ ॥
बर मत्त पिछली जीअ । तहां रसन [3]हीनति पीय ॥
गति हंस चढ़त सुभाइ । सुत बंटि [4]जसु अभिसाइ ॥ छं० ॥ ९४ ॥
सैसब सु सुतन सुषाइ । जोवन्न रस सरसाइ ॥
तिसहूंत गजगति जानि । .... ॥ छं० ॥ ९५ ॥
जसु पन्न चित क्रम मान । जिम संधि प्रथम गियान ॥
प्राचीय मुष रंग सूर । प्रगथ्यौ सु काम करूर ॥ छं० ॥ ९६ ॥
बर बाल माहि सरूप । घट धरक कपट अनूप ॥
वय बाल [5]जोवत काज । किप कपट उत्तर लाज ॥ छं० ॥ ९७ ॥
मधु मधुर [6]अम्रत जानि । बेजियन सीषत बानि ॥
मति मत्ति बरनी षाइ । तहां बाल वेस [7]छिकाइ ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना ।

कवित्त ॥ कहि सुपनंतर [8]न्रपति । सु वह श्रोतान वढ़ाइय ॥
तव लगि [9]भान नरिंद । बीर दुजराज पठाइय ॥
[10]वर दुजराज पठाय । रतन उर कीनौ अप्पी ॥

(१) ए. कृ. को.-दृग का लगौ सुभ वांम । (२) मो.-अंब विन्द समान ।
(३) मो.-हीनित । (४) मो.-अभि जनु माइ ।
(५) ए. कृ. को.-जोबन । (६) ए. कृ. को.-उंतम ।
(७) मो.-लुकाय । (८) मो.-उपति ।
(९) ए. कृ. को.-मान ।
(१०) ए. कृ. को.-"हय हथ्थिय मनि मृत्त रतन उर किन्हो रष्षी" ।